

“ ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यासाठी शिक्षण प्रसार ”
शिक्षण महर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे



Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha, Kolhapur's

Ramkrishna Paramhansa Mahavidyalaya, Osmanabad

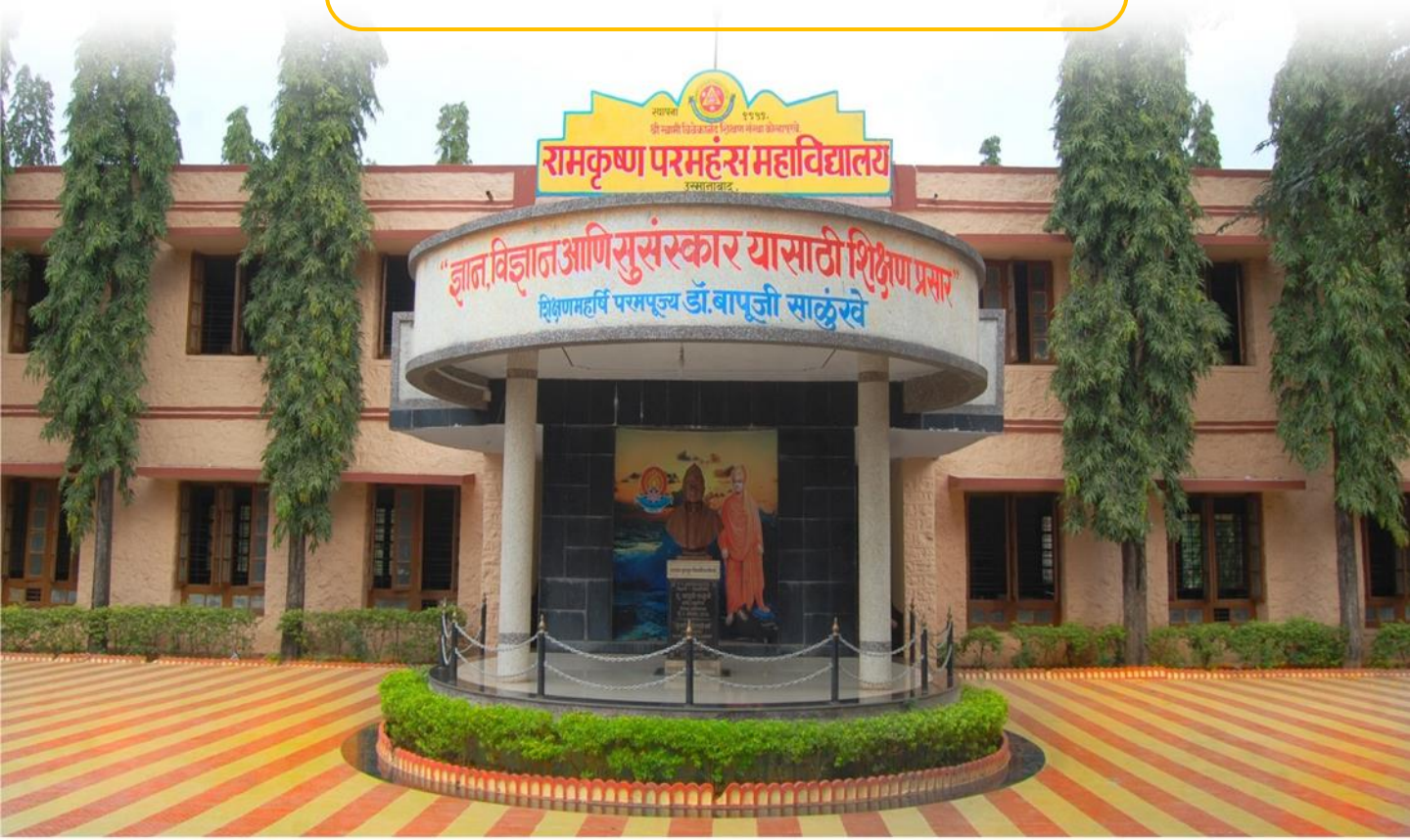
NAAC Reaccredited 'B+' Grade

UGC Status: College with Potential for Excellence

DBT-Star College by Govt. of India

Research Papers

2020





Index

Sr. No.	Name of the author/s	Title of paper	View Document
1	Dr.K.M.Kshirsagar	Godan, Nafans Aaur Akal me Utsav Upanyas Jivan Me Sangharshoke Dastaevaj	View Document
2	Dr.S.S.Gaikwad	Marathi va Anya Sanketstalaril Rojgarachya Sandhi	View Document
3	Dr. A.B. Indalkar	Facing an Interview ; Techniques	View Document
4	Mr. Nil Ngabhide	Bhartiya Samajsudharna Chalval va Rashtravad	View Document
5	Dr.K.M. Kshirsagar	Hindi Ptrakarita Me Rojgar Ki Sambhavnaye	View Document
6	Mr. M.A. Londhe	Make in India Prospectus of Policy	View Document
7	Ms. Supriya Shete	The Impact of e-commerce on Retail Business	View Document
8	Mr.D.M. Shinde	Bal Gunehegari Samajachi Mansikta	View Document
9	D.M. Shinde	Dr.Babasheb Ambedkar Yanche Samajik Vichar	View Document
10	Dr.V.J.Deshmukh	Paryavarn: ek Janjagruti	View Document



Index

Sr. No.	Name of the author/s	Title of paper	View Document
11	Dr.K.M.Kshirsagar	Pravasi Sahitya ki aavadharna aur sri kathakar	View Document
12	Mr. D.M. Shinde	Sathicha Itihas Covid-19	View Document
13	Mr. Mangesh Bhosale	Formulation & Evaluation Of Polyherbal Facial Creame	View Document
14	Mrs. Bainwad S.P.	Bharatiya striyanchya rajkiya stithicha abhyas	View Document
15	Dr.Shama Mahadik	Diversity Of Leaf Surface Mycoflora On Mangifera Indica L.	View Document
16	Mr. D.M.Shinde	Bhartatil vadhati Loksankhya -Ek Samajik Samasya	View Document
17	Dr.Sambhaji T.Dhumal	Design and Synthesis of Novel Indanol-1,2,3-triazole Derivatives as Potent Antitubercular Agents	View Document
18	Dr.Sambhaji T.Dhumal	Synthesis, Anticancer and Antimicrobial Evaluation of New Pyridyl and Thiazolyl Clubbed Hydrazone Scaffolds	View Document
19	Dr.Keshav Kshirsagar	21 Vi Sadi Aur Surajpal Chauhan Ki Kavita	View Document



Index

Sr. No.	Name of the author/s	Title of paper	View Document
20	Dr.V.Sirnaik	Chatrapati Rajaram Kalatil Satyashodhak Samajache Karya	View Document
21	Dr.V.A.Bobade	Strivadi Sahitya-Badalate Aayam	View Document



ISSN 2394-5303

Peer Reviewed International
Refereed Research Journal

Printing[®] Area

Issue-61, Vol-03 January 2020



Editor
Dr. Bapu G. Gholap

23



Jan 2020

15

ISSN 2394-5303

Peer Reviewed International
Refereed Research Journal



Printing[®] Area

Issue-61, Vol-03 January 2020

Editor

Dr. Bapu G. Gholap



www.vidyawarta.com

All things in one Educational Website

- College & University's News
- Academic Updates
- API Guide lines
- International Research Journals
- ISBN books
- Call for Papers
- Conference & Seminar alerts
- Free Book, PDF articles
- Motivational Quotes
- Maharashtra culture
- Ph.D . & M.Phil.
- Set. Net. Exams Date



Edit By

Dr. Gholap Babu Ganpat
Parli Vaijnath, Dist.Beed 431 515
(Maharashtra, India)
Cell : +91 75 88 05 76 95

Publisher & Owner

Archana Rajendra Ghodke
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed-431 126
(Maharashtra) Mob.09850203295
E-mail: vidyawarta@gmail.com
www.vidyawarta.com

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research
Journal in Marathi, Hindi & English Languages
January-2020, Issue-61, Vol-03

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor

Dr. Ravindranath Kewat

(M.A. Ph.D.)



"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.



Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

- 39) शिक्षिकाओं में व्याप्त भूमिका संघर्ष तथा उससे उत्पन्न समस्याएं
श्रीमती राखी किशोर, डॉ. रेनू प्रकाश, अल्मोड़ा ||156
- 40) सल्तनतकालीन भवन-निर्माण
डॉ.विवेकानंद लक्ष्मण चव्हाण, धुलिया ||162
- 41) गोदान, नफाँस और अकाल में उत्सव उपन्यास - किसान जीवन के संघर्षों के दस्तावेज
डॉ. केशव क्षिरसागर, उस्मानाबाद ||167
- 42) सृजनशीलता परीक्षण
डॉ. खीमाराम कोंक, उदयपुर ||171
- 43) जलसंवर्धन व जलसंरक्षण, समस्या व उपाययोजनांचे अध्ययन
डॉ. नीता धर्माधिकारी, नागपुर ||175
- 44) कला और विज्ञान का समिश्रण है — हिंदी सिनेमा
प्रा डॉ. रामदास नारायण तोंडे, वसई ||178

विद्यार्ता

YouTube Channel  SUBSCRIBE

<https://goo.gl/dk5tXx>

गोदान, नफाँस और अकाल में उत्सव उपन्यास - किसान जीवन के संघर्षों के दस्तावेज

डॉ. केशव क्षिरसागर

हिंदी विभाग,

रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय, उस्मानाबाद.

हिंदी साहित्य में गद्य की विभिन्न विधाओं के साथ ही उपन्यास विधा का भी आरम्भ आधुनिक काल अर्थात् भारतेंदु युग से माना जाता है। समय - समय पर उपन्यासकार भारतीय समाज के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थितियों का चित्रण उपन्यास में करते रहे हैं। हिंदी उपन्यास के इतिहास में जहाँ तक किसानों की दयनीय स्थिति, कर्ज की समस्या तथा किसानों के प्रति हो रहे शोषण की अभिव्यक्ति का प्रश्न जहाँ भी उपस्थित होता है वहाँ मुंशी प्रेमचन्द का नाम लिया जाता है। इन्होंने अपने उपन्यास 'गोदान' और 'प्रेमाश्रम' में सामन्ती और महाजनी व्यवस्था का शिकार किसानों की दयनीय स्थितियों का चित्रण किया है। मध्यकालीन सामाजिक संरचना में लगान वसूली, नजराना, हारी बेगारी के शोषणकारी मुद्दे का चित्रण किया गया है। हालाँकि प्रेमचन्द से पहले भी किसानों को केंद्र बनाकर लिखा गया था पर कथा साहित्य में नहीं बल्कि कविता जैसी विधाओं में। कबीरदास और तुलसीदास जैसे भक्तिकालीन कवियों ने अपनी कविता में किसानों की स्थिति को बयान किया है। इस त्रिवेणी में मैंने तीन बहुचर्चित उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द, दसंजीव और पंकज सुबीर का चयन किया है। इनके उपन्यास क्रमशः 'गोदान', 'फाँस' और 'अकाल में उत्सव' हैं।

साहित्य समाज को देखने का एक अच्छा और प्रभावी जरिया है। जिस समय प्रेमचन्द 'गोदान' और 'प्रेमाश्रम' उपन्यास लिख रहे थे उस समय भारत में स्वतंत्रता आन्दोलन चल रहा था। किसान सामन्ती और जमींदारी तथा महाजनी जैसी कुव्यवस्थाओं से जूझ रहा था। समाज में घटित होने वाली घटनाओं का प्रभाव लेखक पर पड़ना स्वाभाविक था। आम तौर पर प्रेमचन्द को किसानों का कथाकार कहा जाता है और गोदान को भारतीय किसानों के जीवन का महाकाव्य। हिंदी साहित्य में औपन्यासिक

क्षेत्र में पहली बार ऐसा हुआ था जब प्रेमचन्द ने किसी किसान को नायक बनाकर उपन्यास लिखा और किसानों की दयनीय स्थिति को हृ-ब-हृ अभिव्यक्त किया था। खैर जो भी हो किसानों के प्रति हो रहे अन्याय, यशोषण, सूदखोरों द्वारा बेरहमी से इन पर किया गया अत्याचार और किसान किस तरह अपने ही खेतों में मजदूर बन जाता है इन सभी का चित्रण प्रेमचन्द से ही प्रारम्भ होता है।।

आज का भारत प्रेमचन्द के भारत से काफी बदला है। मनुष्य अब उतना और वैसा सामाजिक नहीं रहा जैसा पहले था। समाज में आये इन परिवर्तनों का असर उपन्यासकारों के लेखन में भी दिखाई देता है। नब्बे के दशक में भारत सरकार द्वारा लागू की गई 'नई आर्थिक नीति' (१९९१) अर्थशास्त्रियों के अनुसार भारतीय समाज के निम्न तबके से उच्च तबकों तक एक परिवर्तन दिखाई देता है और किसानों के जीवन शैली में भी कुछ बदलाव दिखाई देता है। एक वैश्विक ग्राम या बाजारवाद का प्रभाव समाज में दिखाई दे रहा है। इसी समय उदारवाद और नव - उदारवाद का दौर आरम्भ होता है और किस तरह साहित्य लेखन में भी एक नई शैली पनपती है। कॉर्पोरेट कंपनियों का लगातार विस्तार हो रहा है। किसानों के उपजाऊ जमीनों को पूँजीपतियों द्वारा अपार्टमेंट में बदला जा रहा है।।

सामाजिक व्यवस्था, सभ्यता और संस्कृति के संवर्धन और विकास के लिए अर्थ की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारत कृषि प्रधान देश माना जाता है। आज भी सत्तर फीसदी लोग जीवन यापन के लिए कृषि पर आधारित है। समय की माँग के अनुसार कृषि के उत्पादन में परिवर्तन होना लाजमी है। इंग्लैंड से भारत तक का औद्योगिक क्रांति का सफ़र और भारत में हरित क्रांति होने से कृषि उत्पादन में काफी बदलाव आया है परन्तु किसान किसी न किसी रूप से शोषित और प्रताड़ित ही रहा है। जिसकी अभिव्यक्ति उपन्यासकारों ने की है। किसानों के संघर्षमय जीवन को केन्द्रीय बिंदु बनाकर प्रेमचन्द से लेकर कथाकार संजीव और पंकज सुबीर तक एक लम्बी परम्परा रही है।

प्रेमचन्द के 'गोदान' और 'प्रेमाश्रम' उपन्यास के बाद भगवानदास मोरवाल (नरक मसीहा), राजू शर्मा (हलफनामा), जगदीश गुप्त (कभी न छोड़े खेत), विवेकी राय (सोना माटी) कमलाकांत त्रिपाठी (बेदखल) तथा काशीनाथ सिंह (रेहन पर रघू), संजीव (फाँस) और पंकज सुबीर का (अकाल में उत्सव) आदि महत्वपूर्ण उपन्यास हैं। इन उपन्यासकारों ने सामन्ती व्यवस्था, महाजनी सभ्यता, जमींदारी प्रथा, जमीन चक्रबंदी, जमीन से बेदखली, भूमिहीन होना इसके साथ ही साथ बाजारवाद के चकाचौंध, प्रभाव

के कारण किसानों की बदलती संस्कृति, सरकारी बैंकों में कर्ज अदायगी न करने की समस्या तथा किसान आत्महत्या इन सारी समस्याओं को लेखको ने अपने - अपने तरीके से अभिव्यक्ति दी है। किसान जीवन पर आधारित सभी उपन्यासों का चित्रण करना तो संभव नहीं है फिर भी कुछ प्रमुख उपन्यासों में अभिव्यक्त कृषकों की सामाजिक, कआर्थिक और राजनितिक स्थिति तथा दयनीय और भयावह स्थिति को दिखाया जा रहा है। गोदान महाकाव्य का नायक 'होरी' है जो खेतों में जी तोड़ मेहनत करने के बाद भी अपने परिवार वालों का भरण-पोषण बड़ी मुश्किल से कर पाता है। भारतीय समाज में व्याप्त सामंती और सूदखोरी जैसी कुव्यवस्थाओं का शिकार 'होरी' होता है। नजराना देने के बाद भी जब होरी रायसाहब के यहाँ बेगार करने जाता है तो मुन्नी कड़े शब्दों में विरोध करती है। फिर भी सामाजिक परंपरा में बंधा होरी उसकी एक नहीं मानता। अंततः होरी अपने खेतों में काम करते - करते प्राण त्याग देता है। ऐसी स्थिति केवल एक होरी की ही नहीं है बल्कि कई होरी इस समाज में कर्ज भरा जीवन जी रहे हैं। गोदान उपन्यास किसान जीवन के अंदरूनी तह को परत त दर - परत खोलता है। किसानों से लगान इतना अधिक लिया जाता था कि इन पंक्तियों से समझा जा सकता है

अहा विचारे दुःख के मारे निसिदिन पच पच मरे किसान।

जब अनाज उत्पन्न होय तब सब उठवा ले जाय लगान।।'

'फॉस' उपन्यास कथाकार संजीव द्वारा लिखित है जो महाराष्ट्र राज्य के विदर्भ क्षेत्र में निवास करने वाले किसानों के जीवन तथा उनके जीवन में आने वाली तमाम विनाशकारी समस्याओं पर आधारित है। यह उपन्यास सबका पेट भरने वाले और तन ढकने वाले देश के लाखों किसानों द्वारा किए जा रहे आत्महत्या पर केन्द्रित है। यह कहा जाता रहा है कि भारत किसानों का देश है और भारत की आत्मा गाँवों में निवास करती है। यहाँ आधे से अधिक जनता कृषि पर निर्भर रहती है। विगत कुछ दशकों से इस देश में किसान आत्महत्या तेजी से हो रही है। परिस्थितिवस किसान लगातार आत्महत्या कर रहे हैं। जिस त्रिवेणी की मैं बात करना चाहता हूँ, उसमें तीन उपन्यास- गोदान, न'फॉस' और अकाल में उत्सव तीनों उपन्यास आत्महत्या पर केन्द्रित हैं।

बहरहाल यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि कथाकार संजीव का यह उपन्यास भारतीय कृषक समस्या की दारुण दशा पर केन्द्रित है।। 'फॉस' उपन्यास के माध्यम से संजीव ने उन सभी पहलुओं को दिखाने की कोशिश करते हैं जिन पहलुओं से केवल विदर्भ का किसान ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारतीय किसानों को

गुजरना पड़ रहा है। हमारे सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि किसान लगातार आत्महत्या कर रहा है पिछले कुछ वर्षों से सांप्रदायिक हिंसा की घटनाओं में जितने लोग मारे गए हैं उनकी तुलना में आत्महत्या करने वाले किसानों की संख्या कई गुना ज्यादा है। सरकार द्वारा कृषि नीति बनाने और आत्महत्या जैसी भीषण समस्या को समूल खत्म करने के बजाय सिर्फ आर्थिक पैकेज के दिखावटी टोटकों के सहारे आत्महत्या जैसी समस्या को जीवित रखते हुए कृषि व्यवसाय को लगातार हाशिए पर ढकेला जा रहा है।

उपन्यास के कथावस्तु की शुरुआत महाराष्ट्र के 'येवतमाल' जिले से होती है जो आधा वन है और आधा गाँव, एक ओर देखो तो जंगल दिखाई देता है दूसरी ओर पटार। बनगाँव का चित्र संजीव इस तरह खींचते हैं - "भला कोई कह सकता है कि सुखाड़ के टनटनाते येवतमाल जिले के इस पूरबी छोर पर 'बनगाँव' जैसा कोई गाँव भी होगा जो आधा वन होगा, आधा गाँव, वआधा गीला होगा, आधा सूखा। स्कूल में लड़के के साथ लड़कियाँ भी, जुए में भैस के साथ बैल भी। जो भी होगा आधा आधा।।"

संजीव के इस उपन्यास में एक किसान की बुनियादी समस्याओं जैसे - बीज बोने से लेकर खाद - पानी तथा घर परिवार की आर्थिक समस्या या फिर उत्पादित की गई फसलों को बेचने की जैसी समस्याओं को देखते हुए सहज ही प्रेमचन्द का उपन्यास 'गोदान' के केन्द्रीय पात्र 'होरी' की आ जाती है। संजीव प्रेमचन्द की लेखन परम्परा को आगे बढ़ाने का काम करते हैं। जिस प्रकार 'गोदान' में प्रेमचन्द 'होरी' में माध्यम से भारतीय किसानों की दयनीय स्थिति को दिखाया है उसी तरह 'फॉस' उपन्यास में संजीव ने 'शिबू' के माध्यम से किसानों की बदहाली को दिखाया है। फर्क इतना है कि होरी खेतों में काम करते-करते अपना प्राण त्याग देता है अर्थात् प्रेमचन्द के यहाँ संघर्ष दिखाई देता है। वास्तव में प्रेमचन्द ने होरी को संघर्ष करते हुए प्राण त्यागते हुए दिखाते हैं पर सच्चाई कुछ और ही है वह यह कि उस समय की सामाजिक व्यवस्था का शिकार होकर होरी आत्महत्या करता है।।

'फॉस' उपन्यास में 'शिबू' आर्थिक समस्याओं का सामना करते-करते अंत में हताश और निराश होकर आत्महत्या कर लेता है। संजीव का यह उपन्यास सामाजिक संरचना के तमाम जटिलताओं के बीच खेती, किसानों की त्रासदी के हकीकतों को परत-दर-परत भेदते हुए समस्या और विकास के नाम पर जारी

उपक्रमों की समीक्षा करता है। यह किसान जो कभी 'भारत की आत्मा' के नाम से जाना जाता रहा है वही आज अपनी गरीबी भरी जिंदगी से टूटकर आत्महत्या करने पर मजबूर हो रहा है। यह आत्महत्या एक किसान की आत्महत्या नहीं है बल्कि यह किसानी संस्कृति की हत्या है।

उपन्यास में एक पात्र शिवू जब समस्याओं का सामना नहीं कर पाता और आत्महत्या कर लेता है तब उसके आत्महत्या को पात्र ठहराने के लिए घरवालों को काफी मशक्कत करनी पड़ती है यदि सरकारी कर्मचारी, बिचौलियों, दलालों को कुछ नहीं मिलता तो आत्महत्या, आत्महत्या नहीं ठहराते। अंत में घरवालों को मुआवजा भी नहीं मिलता है।

कर्ज की जाल में फँस कर किसान आत्महत्या कर रहे हैं। बहुर्चंचित उपन्यास फाँस को पढ़ते हुए ऐसा लग रहा है कि यह व्यवस्था किसानों के साथ छल कर रही है। बड़े जमींदारों, काश्तकारों तथा साधारण किसान और माध्यम वर्ग के किसानों का यही हाल है। महँगाई आकाश चूम रही है, पहले किसान फसल बोने के लिए अपने घर में ही रखे बीज का प्रयोग करते थे। उत्पादन की वृद्धि के लिए नए-नए बीजों पर प्रयोग कर तथा उर्वर शक्ति बढ़ाने के लिए नई-नई खादों जैसी सामग्री का प्रयोग किया जाने लगा जिससे खेतों की उर्वर शक्ति धीरे-धीरे समाप्त होती गई। परस्थित से मजबूर किसान कर्ज के लिए बैंकों या ग्रामीण स्तर के सूदखोरों की मदद लेने लगा। फसल अच्छी न होने से या सूखा, बाढ़ से किसान इन कर्ज को चुका नहीं पाता था। दिन प्रतिदिन कर्ज बढ़ता जाता इन्हीं समस्याओं की मकड़जाल में फँसकर किसान आत्महत्या कर रहा है।

विदेशी बीजों के प्रयोग से कर्ज तो बढ़ता ही जा रहा है साथ ही साथ जमीन की उर्वर शक्ति भी नष्ट होती रही है। बी. टी. काटन और सोयाबीन की खेती करने वाले किसान सबसे ज्यादा इस त्रासदी के शिकार हुए। कापूस की खेती से परेशान होकर किसान इस प्रकार फसलों को बदलने की बात करते हैं - "कापूस में क्या है? आत्महत्या ! हमने तो ताई कापूस छोड़कर ऊस (ईख) की शेती (खेती) करने का निर्णय ले लिया है। आप बताओ सबको, सबका भला हो जाए। सिर्फ बताया ही नहीं, उत्साह में उसे सरपंच के घर तक लाकर ही दम लिया। सरपंच के यहाँ तीन धोतीधारी, दो पैंट वाले चाय-पानी कर रहे थे। बीस-एक शेतकरी पहले से हाजिर थे।"³

यह माना जाता है कि चीन दुनिया का सबसे ज्यादा कापूस उत्पादन करने वाला देश है। पूरे विश्व में होने वाले

कापूस उत्पादन का एक चौथाई भाग भारत के हिस्से में आता है। विश्व पटल पर खासकर चीन की तुलना में कापूस उत्पादन और किसानों की बदहाली से संबंधित भारतीय आंकड़े अत्यंत सोचनीय और चिंतनीय हैं। आखिर क्या कारण है कि इसी कापूस की खेती करने वाला चीन लगातार समृद्ध होता जाता है और भारतीय किसान लगातार आत्महत्या करने पर मजबूर हो रहा है। कथाकार संजीव की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस उपन्यास में कहीं बिखराव नहीं दिखाई देता है। ये सिर्फ किसान समस्या या उसकी विडम्बना की ही बात नहीं करते बल्कि उसके समाधान का विकल्प भी प्रस्तुत करते हैं।

उपन्यासों में किसान जीवन की अभिव्यक्ति की अगली कड़ी में पंकज सुबीर का 'अकाल में उत्सव' उपन्यास है जो गाँव और किसान संस्कृति का एक बहुत ही बेहतरीन उपन्यास है। किस प्रकार किसान महाजनी, सामंती व्यवस्था सूदखोरी और कर्ज के दलदल में फँसकर आत्महत्या करने पर विवश हो रहा है। पंकज सुबीर के इस उपन्यास को पढ़ते समय प्रेमचन्द के उपन्यास गोदान और गबन की याद हो आती है। दरअसल प्रेमचन्द के समय में किसान के समक्ष जो समस्याएँ थीं वही वह ऋण सम्बन्धी समस्याएँ हो या किसानों की बदहाली सम्बन्धी अन्य समस्याएँ हो उसी कड़ी या परम्परा को उपन्यास जगत में आगे बढ़ाने का काम पंकज सुबीर ने किया है।

'अकाल में उत्सव' उपन्यास का शीर्षक जैसे ही मैंने देखा कुछ अजीब - सा लगा। पढ़ने के बाद मालूम हुआ कि एक तरफ सरकारी फंड को सही समय में उपयोग करने के लिए सरकारी प्यादों द्वारा उत्सव मनाया जा रहा है और वहीं दूसरी तरफ 'सूखापानी' नामक गाँव के किसान आत्महत्या कर रहा है। इस उपन्यास में चित्रित गाँव 'सूखापानी' का एक अजीब नाम है। यानी किसान की फसल को अतिवृष्टि और अनावृष्टि दोनों ही स्थिति में नुकसान है। किसान जीवन सम्बन्धी समस्याओं का केन्द्रीय बिंदु बनाकर यद्यपि कई उपन्यास लिखे गए हैं। किसी उपन्यास में जमीन बेदखली की समस्या तो किसी में कास्तकारों द्वारा किया जा रहा बेरहमी से शोषण। लेकिन कर्ज जैसी समस्याओं के बेसुमार मार से आत्महत्या करते किसान पर मेरे संज्ञान में अभी तक दो ही उपन्यास हैं एक है - कथाकार संजीव का उपन्यास 'फाँस' और दूसरा पंकज सुबीर का 'अकाल में उत्सव'। इन दोनों उपन्यासों में कर्ज जैसी समस्या को किसान परिवार में पीढ़ी-दर-पीढ़ी ट्रांसफर होता दिखाया गया है।

'अकाल में उत्सव' उपन्यास की कथावस्तु 'सूखापानी'

नामक गाँव से प्रारम्भ होती है जो मध्य प्रदेश का एक आदिवासी गाँव है। इसकी कहानी दो एकड़ जमीन के जोत वाले छोटे किसान रामप्रसाद के इर्द-गिर्द घूमती है। किसान खेतों में रात दिन जीतोड़ मेहनत करता है तभी तो फसलें भी अच्छी होती हैं परन्तु महाजन खलिहान पर ही फसल को उठवा लेता है। अंत में रामप्रसाद बैंक द्वारा लिया गया कर्ज के फर्जीवाड़े का शिकार होता है। ऊपर से प्रकृति की मार से उसकी सारी फसल बर्बाद हो जाती है। बैंक के कर्ज को सुनकर उसे ऐसा सदमा लगता है कि वह आत्महत्या कर लेता है। और अंत में भ्रष्ट शासन तंत्र के चलते उसे पागल सिद्ध कर दिया जाता था।।

पंकज सुबीर छोटे-छोटे वाक्यों में पूरा दृश्य खड़ा कर देते हैं - "कमला की तोड़ी बिक गई, बिकनी ही थी, छोटे जोत किसान की पत्नी के शरीर पर के जेवर क्रमशः घटने के लिए ही होते हैं। और हर घटाव का एक भौतिक अंत शून्य से होता है, घटाव की प्रक्रिया शून्य होने तक जारी रहती है।"६

-इस अपार दुःख में दाम्पत्य का विरल प्रसंग भी है जो बेहत मर्मस्पर्शी है। संवेदना और विचार में संतुलन 'अकाल में उत्सव' की बहुत बड़ी उपलब्धि है।।

इस उपन्यास में प्रशासन की कथित चालाकियों को बेपर्दा किया गया है। शासन तंत्र इतना भ्रष्ट है कि किसानों के हित में सरकार द्वारा चलाई गई योजना जिसके अंतर्गत किसान अपना 'क्रेडिट कार्ड' डिटिखाकर कृषि कार्य हेतु बैंक से लोन के रूप में रूपया ले सकता है। समाज में फर्जीवाड़ा इतना हो रहा है कि बैंक अधिकारी और दलाल की मिली भगत से गरीब और भोले भाले किसानों के नाम पर लोन ले लिया करते हैं।

अकाल में उत्सव उपन्यास की कथावस्तु दो खण्डों में चलती है। एक तरफ मुख्यमंत्री के आदेशानुसार भव्य उत्सव के आयोजन की चर्चा हो रही है तो दूसरी तरफ वर्षा, तूफान और ओले पड़ने से किसानों के नष्ट हुई फसल का दृश्य दिखाई दे रहा है। प्रशासनिक अधिकारियों को मंच की सजावट की चिंता ज्यादा रहती है। भारत का अन्नदाता किसान की कोई चिंता नहीं रहती है। वास्तव में यह उपन्यास किसानों के शोषण का रेशे-रेशे को उधेड़ने वाला उपन्यास है जो यह जाहिर करता है कि किसानों की आत्महत्या के पीछे केवल ओला वृष्टि, सूखा और प्रशासनिक निष्पूरता ही जवाबदार है। इसके पीछे और भी कई कारण हैं जो साफ-साफ दिखाई नहीं देते हैं।।

भारतीय किसानों का हृदय इतना सरल और निष्कपट होता है कि वह मनुष्य तथा मानवैतर प्राणियों से भी भावनात्मक

लगाव रखता है।। 'तोड़ी' नामक आभूषण जिसे स्त्रियाँ पैरों में पहनती हैं को आधार बनाकर लेखक ने किसानों का जो गहनों के प्रति परंपरागत लगाव होता है उसे बड़े ही हृदयविदारक लहजे में अभिव्यक्त किया है। रामप्रसाद जब तोड़ी बेचने महाजन के पास जाता है वहाँ का दृश्य उसे अपने पुरखों की बनी बनाई ईमारत को ढहते दिखाई देता है। तोड़ी पिघल रही है ऐसा लग रहा है कि कोई पदार्थ नहीं बल्कि रामप्रसाद का हृदय पिघल रहा है।

'अकाल में उत्सव' उपन्यास का ताना बना मुहावरों और कहावतों से बुना गया है। इस उपन्यास को आलोचकों ने अपने - अपने तरीके से व्याख्यायित किया है। नासिरा शर्मा ने इसे 'प्रेमचन्द का गाँव एक नई भाषा शैली में फिर से जिन्दा हो उठा' कहा है, महेश कटारे ने 'भारतीय किसान के जीवन का शोकगीत', डॉ. पुष्पा दुबे ने 'कंपकंपाती लौ और थरथराते धुँएँ की दुःख भरी कहानी' कहा, ब्रजेश राजपूत ने 'किसानों के दुःख दर्द का बेचैन करने वाला किस्सा' कहा, ओम शर्मा ने 'आज के किसान की जिंदगी का सच्चा दस्तावेज़' कहा। मेरे हिसाब से यह उपन्याससकिसान की बदकिस्मती का जीता जागता आईना' है। ऐसा आईना जिसमें किसानों की दयनीयता को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। एक बार फिर से पंकज सुबीर ने गंवाई जीवन शैली और किसान आत्महत्या जैसे विषय को कथा साहित्य में पाठकों, आलोचकों और समीक्षकों को सोचने पर मजबूर करता है।

निष्कर्ष - गोदान, नफ़ास और अकाल में उत्सव इन तीनों उपन्यास में किसानों की संघर्ष की कारुणिक कहानी है किसी में किसान महाजनी या जमींदारी व्यवस्था का शिकार है तो किसी में सरकारी बैंकों से लिया गया कर्ज का। कर्ज की अदायगी न होने के कारण किसान आत्महत्या कर रहा है इन त्रासदियों के घटनाचक्र को सम्पूर्ण सामाजिक विडम्बनाओं के साथ शब्दबद्ध किया गया है। वह सिर्फ हमारी संवेदना को झकझोरता ही नहीं बल्कि उपन्यास को एक कलात्मक ऊँचाई भी प्रदान करता है। देखा जाय तो आज भी सामंती और पूँजीवादी संस्कृति की टकराहट में किसानों की संस्कृति पिस रही है। इसका इतना बड़ा दुष्परिणाम है यही है कि वर्तमान समय में किसान लाखों की संख्या में आत्महत्या कर रहे हैं।।

संदर्भ

१. फ़ॉस - संजीव, व पृ. सं ९
२. फ़ॉस - संजीव, व पृ. सं १५३
३. फ़ॉस - संजीव, व पृ. सं १२२
४. अकाल में उत्सव - पंकज सुबीर, र पृ. सं. १०७



मराठी व अन्य संकेतस्थळावरील रोजगाराच्या संधी

प्रा. शिवाजी संभाजी गायकवाड,

मराठी विभागप्रमुख

रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय उस्मानाबाद.

प्रस्तावना:-

एकवीसावे शतक हे माहिती तंत्रज्ञानाचे युग आहे इंटरनेट आणि संकेतस्थळ यांच्यामुळे जग जवळ आले आहे. तसेच ते गतिमान झाले आहे. या संकेतस्थळामुळे ज्ञानाच्या कक्षा रुंदावल्या आहे त्याचा अवाका जगाच्या सिमारेषेपर्यंत पोहोचला तो अनेक प्रसंग आणि विषयांना भिडु लागला त्याची उकल करू लागला. तो स्वतःला अपडेट होऊ लागला. एका क्लिकवर जगाला कवेत घेण्याचा माणसाने प्रयत्न करू लागला. संकेतस्थळाने माणसाच्या वर्तन व्यवहारातच नाहीतर जीवन जगण्याच्या पध्दतीतही बदल झाले. जगण्याच्या पध्दतीसाठी माणुस संकेतस्थळाचा व्यवहाराच्या पातळीवर उपयोग करू लागला या संकेतस्थळाला व्यवसायात रूपांतर करून माणुस रोजगार उपलब्ध करण्यासाठी पुढे आला. मराठी संकेतस्थळ व अन्य संकेतस्थळाचा रोजगार उपलब्धतेसाठी कसा उपयोग होऊ शकतो याचा परामर्श हा खालील संशोधन लेखाद्वारे घेत आहे.

उद्दीष्ट्ये :-

1. संकेतस्थळ निर्माती प्रक्रिया समजून घेणे
2. संकेतस्थळाची विश्वासार्हता समजावून सांगणे
3. संकेतस्थळावरील रोजगाराच्या संधीची माहिती करून देणे
4. संकेतस्थळाची मानवी जीवनातील उपयोगिता सांगणे

1. संकेतस्थळाचा परिचय :- संकेतस्थळ वापरण्यासाठी पहिले पाऊल म्हणजे

इंटरनेटबरोबर कनेक्ट होणे होय. इसवी सन 1669 मध्ये इंटरनेट लोकांसमोर आलं पुढे 1992 साली स्वित्झर्लंड येथील ' सेंटर वर्ल्ड वाईड वेब ' आपल्यापर्यंत पोहोचले संकेतस्थळाचा शोध लागण्यापुर्वी इंटरनेट म्हणजे केवळ ग्राफिक्स अॅनिमेशन्स, ध्वनी, व्हिडीओ इंटरफेस नसलेलं माध्यम होतं पण वेबमुळे या सर्व बाबी इंटरनेटवर येणे शक्य झालेसंकेत स्थळामुळे इंटरनेट बऱ्यासाठी मल्टीमीडीया इंटरफेस मिळाले.

इंटरनेटवर मराठी व अन्य भारतीय संकेतस्थळे आहेत या संकेतस्थळाच्या माध्यमातून विद्यार्थ्यांच्या ज्ञानात भर पडत आहे नवनवीन माहिती उपलब्ध होत आहेत. तसेच रोजगाराच्या संधी उपलब्ध झाल्या आहेत 1990 मध्ये सर्नचे अभियंता टिम बर्नर्स - ली याने संकेत स्थळाची निर्माती केली आणि 30 एप्रिल 1993 पासून संकेतस्थळ सर्वासाठी खुले केले सायबर विश्वात मराठीचे पहिले पाऊल रोवण्याचा मान मराठी मायबोली या संकेतस्थळाला जातो 1996 मध्ये मायबोली हे संकेतस्थळ सुरु झाले जगातील मराठी भाषकांना या संकेतस्थळाने एकत्र आणले त्यामुळे विविध विचारांची देवाण- घेवाण होवू लागली. मराठी साहित्यातील विविध प्रवाह आणि प्रकारांची माहिती आज संकेतस्थळावर उपलब्ध आहे " तुकारामाची गाथा, छत्रपती शिवाजी महाराज, शाहिरा काव्य ते थेट गदिमा, पुलं पर्यंतची मराठी मनात घर करून बसलेली अनेक श्रध्दास्थाने इंटरनेटवर उपलब्ध आहेत" । यावरून आधुनिक जगाचे संवादमाध्यम असलेल्या वेब विश्वात आत्मविश्वासाने संचार करून मराठी भाषा अमृताशी ही पैज जिंकलेली आहे असे वाटतेमायबोली या वेबसाईटवर 84 हजारपेक्षा जास्त पानांचा मजकूर आहे. दर महिन्याला 1 लाखाहून जास्त मराठी वाचक या संकेतस्थळाला भेट देतात. मायबोलीचे 28,114 सभासद आहेत. नोंदणी नसलेले 1,42,198 लोक महिन्याला भेट देतात या संकेतस्थळावरील वाचकांचा आणि सभासदांचा टक्का वाढविणे गरजेचे आहे

2. संकेतस्थळांची विश्वासार्हता:- संकेतस्थळाच्या माध्यमातून ह्यी ती माहिती मिळविता येत असली तरी ती किती खोटी आणि किती खरी आहे याबद्दल शंका उत्पन्न होतात. पुस्तक, लेखन, वक्तृपत्रे यामध्ये असते तशी संकेतस्थळावरची माहिती काटेकोरपणे असतेच याची खात्री देता येत नाही यासाठी संकेतस्थळावर मिळणाऱ्या माहितीचे मुल्यमापन करण्यासाठी खालील " चार गोष्टी " लक्षात ठेवणे गरजेचे आहे.

1. अधिकार प्रमाणता - संकेतस्थळावरील माहितीचा लेखक त्या विषयातला तज्ञ आहे का? दुसरी गोष्ट म्हणजे ही वेबसाईट अधिकृत आहे की कोणाची खासगी आहे हे तपासून पाहावे
2. अचुकता - संकेतस्थळावर माहिती टाकण्यापुर्वी आणि ती टाकल्यानंतर तपासली गेली आहे का? माहितीतील त्रुटी लेखकापर्यंत पोहोचवण्यासाठी संकेतस्थळावर सोय आहे का? तपासून बघावे.

3. वस्तुनिष्ठता - माहिती समतोल आहे का ? का लेखक फक्त स्वतःचा दृष्टिकोन मांडत आहे ? वाचकांचे मत बनवण्यामागे लेखकाचा व्यक्तिगत हेतु आहे का ? तपासावे लागेल.

4. प्रवाहीपणा :-माहिती ताजी आहे का ? साईट अपडेट झाल्याची तारीख वेबवर आहे का ? पहावे.

उपरोक्त चार गोष्टी तपासूनच कोणत्याही संकेतस्थळावर व्यवहार करावा अन्यथा आपली स्वतःची फसवणुक होण्याची दाट शक्यता असते.

3. संकेतस्थळाद्वारे रोजगाराची संधी :-आज संकेतस्थळाच्या माध्यमातून व्यक्तीगत पातळीवर अनेक प्रकारची कमाई करता येण्यासारखी आहे. खालील " चार " ³ प्रकारे रोजगाराच्या संधी आहेत

1. संकेतस्थळावरील जाहीराती :- प्रसिध्द संकेतस्थळ असेल तर अनेक लोक वारंवार भेटी देत असतातयेथे उत्पादकांना आपल्या उत्पन्नाची जाहीरात देता येते. लोकप्रिय वृत्तपत्रात जसे पानाच्या क्रमांकावरून जाहीरातीचे दर ठरविले जातात तसेच संकेतस्थळ धारकही करू शकतो.

2. ऑफिलिएट प्रोग्राम :- हा एक ' क्लिक थ्रु ' चा प्रकार आहे. अनेक प्रसिध्द साईट आहेत की तुमच्या साईटला एजन्सी देतात उदा अमेझॉन, डॉटकॉम ही साईट तुम्हाला ऑफिलिएटशीप या योजनेत तुम्ही एक छोटा चौकोन टाकू शकता त्या चौकोनात एक एजन्सी देणाऱ्या साईटचे नाव असते. व पुस्तके सी डी हवी असेल तर " येथे क्लिक करा ' असे आवाहन असते जर या चौकोनावर क्लिक करून एखाद्याने ' अमेझॉनकडून खरेदी केली तर त्यावर तुम्हाला कमिशन असते. अशा शेकडो प्रसिध्द कंपन्या आज तुम्हाला एजन्सी द्यायला उत्सुक आहेत. नेटवर्क सोल्युशन्स ही साईट ही अशी एजन्सी देते

3. पेडसाईट :- वृत्तपत्राद्वारे जसे पेडन्युज देता येते तसे संकेतस्थळाद्वारेही करता येते तुमच्या साईटवर दुर्मिळ माहिती आहे तिला जर खूप मागणी असेल तर अशी पाने पासवर्ड प्रोटेक्ट करा ज्यांना पाहायची आहे त्यांनाच पासवर्ड द्या त्यासाठी ही चार्ज करता येते. त्यातूनही कमाई करता येते.

4. संपुर्ण साईटची विक्री :-साईट लोकप्रिय आहे परंतु त्यात उत्पन्न काहीच होत नसेल तरती साईट तुम्ही विकू शकता. सत्यम कंपनीने 500 कोटी रुपयांना इंडीया वर्ल्ड ही साईट विकत घेतली

5. " ई कॉमर्स साईट ' द्वारेही कमाई करता येते.

6. वेब ऑथॉरिगच्या माध्यमातूनही पैसे कमावता येतात" हॉटमेल डॉट कॉम ' ही साईट मोफत ई-मेल सुविधा पुरविते ही साईट साबीर भाटीया बंगलोर च्या युवकाने तयार केली आणि 1400 कोटी रुपयाला " मायक्रोसॉफ्ट ' या कंपनीला विकली. आणि वेबमास्टर म्हणुनही संधी मिळाली. याव्यतिरीक्त काही मराठी संकेतस्थळे आहेत उदा. मायबोली, मनोगत, उपक्रम, मिसळपाव, लोकयत, मी मराठी, पुस्तक विश्व डॉट कॉम, मराठी ब्लॉग विश्व, महाराष्ट्र शासनाचे संकेतस्थळ तुकाराम विकीपीडीया मुक्त ज्ञानकोश ग. दि. माडगुळकर, पु. ल. देशपांडे, मराठी सृष्टी, मुक्तांगण ब्लॉग अनुदिनी अशा विविध प्रकारच्या मराठी संकेत स्थळावरून मराठी साहित्याचे प्रकार नियतकालिक, दिवाळीअंक प्रकाशित होत असतात. या खेरीज गणित, भुगोल, विज्ञान, स्थापत्यशास्त्र, इतिहास, ज्योतीषशास्त्र इत्यादींची माहिती देवाण - घेवाण तर होतेच परंतु प्रचंड प्रमाणात खरेदी - विक्री सुद्धा या संकेतस्थळावरून करता येतात लाखो रुपयांची उलाढाल आज अशा संकेतस्थळांच्या माध्यमातून होताना दिसते.

समारोप :-

अशा प्रकारे विविध संकेतस्थळाच्या माध्यमातून विविध प्रकारची देवाण - घेवाण होत असली तरी त्यातून अनेक प्रकारच्या रोजगाराच्या संधी उपलब्ध झालेल्या आहेत संकेतस्थळातून संवाद शोषण, सर्चिंग, मनोरंजन, ई-लर्निंगच्या माध्यमातून अर्थांजन करता येते. ज्याच्या त्याच्या उपयोगीतेवर हे सर्व अवलंबून आहे ज्याला स्वतःला करिअर करायचे आहे त्यांना संकेतस्थळाविषयीची सखोल माहिती घेवून त्यात स्वतःला झोकून दिल्यास चांगल्या प्रकारे रोजगार उपलब्ध होवू शकतो

निष्कर्ष :-

1. संकेतस्थळाविषयी समाजात विश्वासाहर्ता निर्माण करणे आवश्यक आहे.
2. मायबोली या पहिल्या मराठी संकेत स्थळाचे वाचक व सभासद वाढविणे गरजेचे आहे
3. संकेतस्थळाच्या प्रभावी उपयोगीतेवर रोजगाराची संधी अवलंबून आहे
4. संकेतस्थळाद्वारे पातळीवर अर्थांजन भरपूर प्रमाणात करता येते
5. मराठी संकेतस्थळावरून विविध मराठी पुस्तकांची नियतकालिकांची खरेदी - विक्री, करता येते.
6. मराठी संकेतस्थळावरून विविध प्रकारच्या जाहीराती, तसेच पुस्तकांचे प्रकाशन करता येवू शकते

संदर्भसूची

1. मराठी संकेतस्थळे: विकीपीडीया (<https://mr.m.wikipedia.org>)
2. डॉ. भारत हंडीबाग / डॉ. सदाशिव सरकरे (संपादक) द्रक / श्राव्य माध्यमांसाठी लेखन कौशल्ये, एज्युकेशनल पब्लिशर्स अॅण्ड डिस्ट्रीब्युटर्स, औरंगाबाद. प्र. आ. 2014. पृष्ठक्रमांक 55-56
3. तजैच, पृष्ठक्रमांक 56-57.

29

Jan - 2020 11

Facing An Interview : Techniques

Dr. A. B. Indalkar
 Head, Dept. of English
 Ramkrishna Paramhansa
 Mahavidyalaya, Osmanabad

The word 'Interview' refers to one-to-one conversation between an interviewer and interviewee. Interview is a face-to-face interpersonal communication in which a candidate is asked questions to assess his capability for the recruitment, promotion or the expected situation. It is a systemized method to assess a person, usually a panel of experts. A job or an academic interview is a formal meeting at which people are asked questions by one or a panel of interviewers to find out for a job or a course of study. Being a form of oral communication, interviews are usually conducted face-to-face, but this is now also being done increasingly over the telephone. Getting job in India seems to be difficult job for everyone because there are thousands of applicants applying for the same company. However, finding job is not really a huge task if you have got some amazing skills along with a good resume.

The candidate like a salesman should try to persuade the proposed employer that his abilities and skills are worth buying. With the advancement in technology, education, communication media and literary rate, today the job market has drastically changed. Everyday new avenues are added to it. Specialities and superspecialities are in demand. Therefore, a candidate has to face stiff competition in the job market. And of this, the one emerges as a winner, who is fully equipped with academic resources, professional skills, positive traits and unique way of presentation through good interview techniques.

The interview technique is employed for the purpose of assessing candidate's true personality and it helps us to eliminate those candidates who merely memorise facts and reproduce them in the written examinations but are unable to apply these in their daily life or to influence others by their personality.

The candidate who is able to find a job of his or her choice should have a good academic record. Further, he should face an interview with ease and self-confidence. It is so because the interviewers select only some of the candidates from among the many with apparently the degree of qualifications and capability. At the same time one should remember in mind that in addition to sound subject knowledge, one should leave a positive impression on interviewers. The attempt of the interviewers is to find out whether the candidate being interviewed has the qualities and attitudes they are looking for.

While most written tests seek to focus on inherent qualities and the potential of the candidates in various areas of intelligence, reasoning, etc., there is still an unexplored area of a person's personality which plays an important role in performing various functions and shouldering various responsibilities in the varied spheres of life. These lists vary from post to post. Not only individual traits but the importance of each would depend on the job content and the manner in which, responsibilities have to be discharged by the incumbent of the post. Quite a few important elements of personality like poise and composure, liveliness, impact created on persons by their presence, qualities of leadership, initiative, drive, motivation, value system, etc., are required in varying degrees for various jobs. An intelligent review of the duties and responsibilities assigned to the job should enable the candidate to draw out in advance qualities that would be required for successful performance therein. Information about the various personality traits that are considered critical for the job in question is evaluated by trying to focus on the performance and functioning of the candidates in various fields like the educational career, sports, games, NCC, NSS, extracurricular activities, hobbies, etc. Also efforts are made to find out how wide awake you are in day-to-day living. In other words, a candidate is supposed to know the happening in the environment in which he lives, works, and plays and how he tackles the day-to-day problems of living.

The Internal Structure of the Interview:-

It is important for the candidate to understand the internal structure of the interview which consists of a beginning, a middle and an end. The first part relates to preliminaries, such as greetings, introduction and opening remarks of a general nature. It is observed that 50 per cent of an interviewer's decision is made about the candidate in the first 50 to 60 seconds of the interview, so the initial interaction is very important. The main part (middle) involves the real exchange of questions and answers that will allow the interviewers to assess the candidate. Here 'open' or 'closed' questions are asked. Open questions provide a candidate with an opportunity to answer quite extensively in response to a particular question. Generally these questions begin with 'Why', 'How', 'Please describe....' The candidate should not ramble on with the story of his life and tell the interviewers the things relevant to the position he would like to be known. Answering 'Yes' or 'No' to questions is called a closed question. However, the candidate should not simply respond by saying 'Yes' or 'No' but provide more information by way of an explanation. The third part consists of remarks that signal the

end of the interview, clarifications the interviewee may want to ask for, expression of thanks and leave-taking. A candidate who is able to end on a positive yet assertive note is likely to make a good impression.

Interview Techniques :-

"Life is a series of interviews," says Matthew Arnold, the great British poet and critic. From birth to death man has to put up with infinite tests and endless trials. Man has to be ever prepared to face the ordeal of interview in any walk of life. Life is a great struggle. Anyone who has to face the struggle successfully must not fight shy of facing the interview, whatever position one occupies.

Before appearing for interview, apart from personal grooming, there is a lot of mental grooming also to be done. Nervousness is a common occurrence among many candidates. This obscures talents and knowledge and at times spoils entire interview. So the candidates should feel confident and get rid of nervousness. He should convince himself that he is the right person for the job and has all the necessary qualities for it. This is how one can gain self-confidence and courage to face the interviewers. At the same time the candidate ought to be careful about his behaviour, presentation and manners should not reflect over confidence and rashness. This however, does not mean that the candidate should appear as servile or timid candidate. The candidate should present himself as a cool, composed and confident. An interviewer judges a candidate based on the following golden rules to get a more or less correct picture of the candidate's personality.

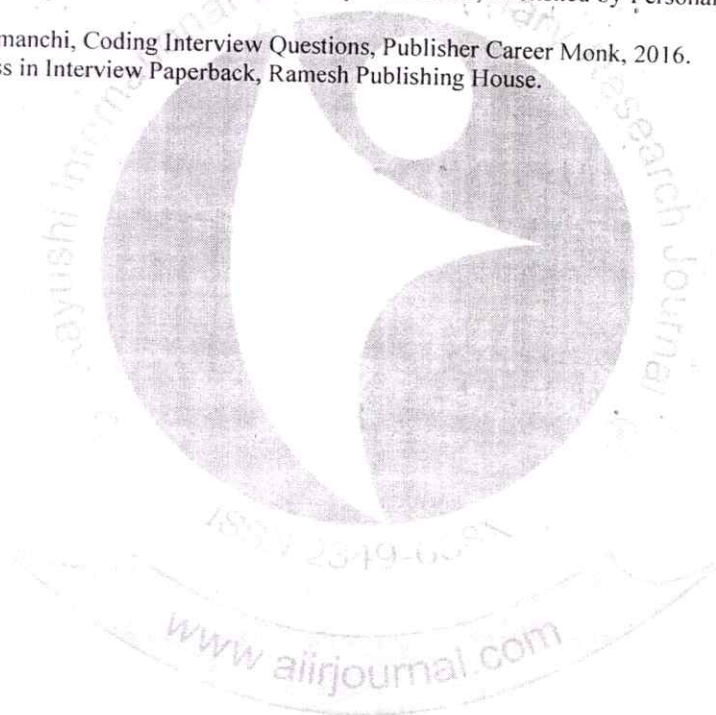
- 1) At the time of interview the candidate should wait his name to be announced, and knock or seek permission before he enters the room.
- 2) He should greet the interviewers in the room formally, but in a pleasant manner.
- 3) Don't sit until you are asked to.
- 4) Be conscious about making eye contact with the person speaking to you and of maintaining a proper and relaxed body posture and a steady tone of voice, which should not be either too loud or too soft. Your speech should be natural.
- 5) Think positively and banish all kinds of fear. Imagine that you are a born winner and once you have made up your mind to succeed at all costs, you will find that all circumstances work in such a way as to contribute to your successful journey to the destination.
- 6) Do not interrupt the interviewer and allow him/her to finish speaking before you answer a question or react to a statement or opinion.
- 7) Listen carefully to the interviewer's questions and comments and speak clearly and at a moderate pace to avoid having any of them repeat themselves.
- 8) Impress your interviewers with your honesty, knowledge and pleasing personality.
- 9) Be a tactful but strong advocate of your own line of argument.
- 10) Do not pretend to be different from what you are.
- 11) "Apparel often proclaimed the man" said William Shakespeare. The dress of a person is certainly a pointer to his personality. Your dress should be neat, clean, smart, well fitted and well dressed, it should not be gaudy and need not be very expensive.
- 12) Try to draw the interviewer's attention to your achievements, knowledge, skills but you should not boast or display your knowledge, skills, etc.
- 13) Do not pose to be quick-witted.
- 14) Do not try to show that you know all about something, when you really know only a little about it.
- 15) Stick to the truth, This is the only easiest, but also the best.
- 16) The interviewer would elicit your forthright views and observations on vital topics and it pays to be candid and through about what you feel about the subject broached.
- 17) Provide substantive and solid facts and arguments when you take up a specific stand on a particular issue.
- 18) Avoid repeating yourself, long silences, fillers such as 'hmm...', 'er...' 'you know' and 'Okay'.
- 19) Your answers should be brief and to the point. Do not talk too much. Always confine your talk within the limits of your subject and do not go astray. If you talk unnecessarily, you are likely to give out many of your shortcomings.
- 20) When you do not know the answer to a question frankly admit that.
- 21) If you make a false statement, you lose chances of selection.
- 22) Do not get into arguments or speak negatively or criticize former teachers, colleagues or employers.
- 23) If the interviewer asks you any question which you consider silly, do not get upset. Give your answer politely.
- 24) In case you do not hear a question you are asked or if you do not understand it, you could politely ask for it to be repeated or explained. For example :
 - "I beg your pardon, sir."
 - "Could you clarify the question, please."
 - "I am sorry, but could you repeat the question please."
- 25) Wait for the interviewers to invite you to ask questions in case you have queries. In case this does not happen, wait until you sense that the interviewers are done before asking them politely if they could clarify something.

- for you. For example, 'Could you tell me whether the position involves travelling, please' or 'Could I know when I can expect to hear from you, please.'
- 26) When you are given an indication that the interview is over, get up and give a slight courteous bow and thank all the persons in the room before walking out of the door and closing it softly behind you.

In conclusion, we can say that success in interview can be surely and easily secured by clearly understanding its techniques correctly, following the procedures, grasping its rationale and mastering its secrets. Interview as a tool of selection is used for all managerial, executive and other appointments in the government departments, in the Union Public Service Commission selections, in the public and private sectors, and also in the universities, colleges, schools, etc. Even where other methods like written tests, intelligence tests, objective tests, group discussions, etc., are employed, the ultimate or final selection is invariably made only after the formal face-to-face interview.

References :

- 1) Bretag, Tracey, Communication Skills/Bretag Crossman Bordia Tata McGraw Hill Education Private Limited, New Delhi, 2012.
- 2) D. S. Paul, Manpreet Kaur, Interview Skills Goodwill Publishing House, 2017.
- 3) Manoj K. Sharma, Universal Interviews and Group Discussion, Published by Personality Development Classes, 2004.
- 4) Narasimha Karumanchi, Coding Interview Questions, Publisher Career Monk, 2016.
- 5) R. Gupta, Success in Interview Paperback, Ramesh Publishing House.



Facing An Interview : Techniques

Dr. A. B. Indalkar
Head, Dept. of English
Ramkrishna Paramhansa
Mahavidyalaya, Osmarabad

The word 'Interview' refers to one-to-one conversation between an interviewer and interviewee. Interview is a face-to-face interpersonal communication in which a candidate is asked questions to assess his capability for the recruitment, promotion or the expected situation. It is a systemized method to assess a person, usually a panel of experts. A job or an academic interview is a formal meeting at which people are asked questions by one or a panel of interviewers to find out for a job or a course of study. Being a form of oral communication, interviews are usually conducted face-to-face, but this is now also being done increasingly over the telephone. Getting job in India seems to be difficult job for everyone because there are thousands of applicants applying for the same company. However, finding job is not really a huge task if you have got some amazing skills along with a good resume.

The candidate like a salesman should try to persuade the proposed employer that his abilities and skills are worth buying. With the advancement in technology, education, communication media and literary rate, today the job market has drastically changed. Everyday new avenues are added to it. Specialities and superspecialities are in demand. Therefore, a candidate has to face stiff competition in the job market. And of this, the one emerges as a winner, who is fully equipped with academic resources, professional skills, positive traits and unique way of presentation through good interview techniques.

The interview technique is employed for the purpose of assessing candidate's true personality and it helps us to eliminate those candidates who merely memorise facts and reproduce them in the written examinations but are unable to apply these in their daily life or to influence others by their personality.

The candidate who is able to find a job of his or her choice should have a good academic record. Further, he should face an interview with ease and self-confidence. It is so because the interviewers select only some of the candidates from among the many with apparently the degree of qualifications and capability. At the same time one should remember in mind that in addition to sound subject knowledge, one should leave a positive impression on interviewers. The attempt of the interviewers is to find out whether the candidate being interviewed has the qualities and attitudes they are looking for.

While most written tests seek to focus on inherent qualities and the potential of the candidates in various areas of intelligence, reasoning, etc., there is still an unexplored area of a person's personality which plays an important role in performing various functions and shouldering various responsibilities in the varied spheres of life. These lists vary from post to post. Not only individual traits but the importance of each would depend on the job content and the manner in which, responsibilities have to be discharged by the incumbent of the post. Quite a few important elements of personality like poise and composure, liveliness, impact created on persons by their presence, qualities of leadership, initiative, drive, motivation, value system, etc., are required in varying degrees for various jobs. An intelligent review of the duties and responsibilities assigned to the job should enable the candidate to draw out in advance qualities that would be required for successful performance therein. Information about the various personality traits that are considered critical for the job in question is evaluated by trying to focus on the performance and functioning of the candidates in various fields like the educational career, sports, games, NCC, NSS, extracurricular activities, hobbies, etc. Also efforts are made to find out how wide awake you are in day-to-day living. In other words, a candidate is supposed to know the happening in the environment in which he lives, works, and plays and how he tackles the day-to-day problems of living.

The Internal Structure of the Interview:-

It is important for the candidate to understand the internal structure of the interview which consists of a beginning, a middle and an end. The first part relates to preliminaries, such as greetings, introduction and opening remarks of a general nature. It is observed that 50 per cent of an interviewer's decision is made about the candidate in the first 50 to 60 seconds of the interview, so the initial interaction is very important. The main part (middle) involves the real exchange of questions and answers that will allow the interviewers to assess the candidate. Here 'open' or 'closed' questions are asked. Open questions provide a candidate with an opportunity to answer quite extensively in response to a particular question. Generally these questions begin with 'Why', 'How', 'Please describe....' The candidate should not ramble on with the story of his life and tell the interviewers the things relevant to the position he would like to be known. Answering 'Yes' or 'No' to questions is called a closed question. However, the candidate should not simply respond by saying 'Yes' or 'No' but provide more information by way of an explanation. The third part consists of remarks that signal the

end of the interview, clarifications the interviewee may want to ask for, expression of thanks and leave taking. A candidate who is able to end on a positive yet assertive note is likely to make a good impression.

Interview Techniques :-

"Life is a series of interviews," says Matthew Arnold, the great British poet and critic. From birth to death man has to put up with infinite tests and endless trials. Man has to be ever prepared to face the ordeal of interview in any walk of life. Life is a great struggle. Anyone who has to face the struggle successfully must not fight shy of facing the interview, whatever position one occupies.

Before appearing for interview, apart from personal grooming, there is a lot of mental grooming also to be done. Nervousness is a common occurrence among many candidates. This obscures talents and knowledge and at times spoils entire interview. So the candidates should feel confident and get rid of nervousness. He should convince himself that he is the right person for the job and has all the necessary qualities for it. This is how one can gain self-confidence and courage to face the interviewers. At the same time the candidate ought to be careful about his behaviour, presentation and manners should not reflect over confidence and rashness. This however, does not mean that the candidate should appear as servile or timid candidate. The candidate should present himself as a cool, composed and confident. An interviewer judges a candidate based on the following golden rules to get a more or less correct picture of the candidate's personality.

- 1) At the time of interview the candidate should wait his name to be announced, and knock or seek permission before he enters the room.
- 2) He should greet the interviewers in the room formally, but in a pleasant manner.
- 3) Don't sit until you are asked to.
- 4) Be conscious about making eye contact with the person speaking to you and of maintaining a proper and relaxed body posture and a steady tone of voice, which should not be either too loud or too soft. Your speech should be natural.
- 5) Think positively and banish all kinds of fear. Imagine that you are a born winner and once you have made up your mind to succeed at all costs, you will find that all circumstances work in such a way as to contribute to your successful journey to the destination.
- 6) Do not interrupt the interviewer and allow him/her to finish speaking before you answer a question or react to a statement or opinion.
- 7) Listen carefully to the interviewer's questions and comments and speak clearly and at a moderate pace to avoid having any of them repeat themselves.
- 8) Impress your interviewers with your honesty, knowledge and pleasing personality.
- 9) Be a tactful but strong advocate of your own line of argument.
- 10) Do not pretend to be different from what you are.
- 11) "Apparel often proclaimed the man" said William Shakespeare. The dress of a person is certainly a pointer to his personality. Your dress should be neat, clean, smart, well fitted and well dressed, it should not be gaudy and need not be very expensive.
- 12) Try to draw the interviewer's attention to your achievements, knowledge, skills but you should not boast or display your knowledge, skills, etc.
- 13) Do not pose to be quick-witted.
- 14) Do not try to show that you know all about something, when you really know only a little about it.
- 15) Stick to the truth, This is the only easiest, but also the best.
- 16) The interviewer would elicit your forthright views and observations on vital topics and it pays to be candid and through about what you feel about the subject broached.
- 17) Provide substantive and solid facts and arguments when you take up a specific stand on a particular issue.
- 18) Avoid repeating yourself, long silences, fillers such as 'hmm...', 'er...' 'you know' and 'Okay'
- 19) Your answers should be brief and to the point. Do not talk too much. Always confine your talk within the limits of your subject and do not go astray. If you talk unnecessarily, you are likely to give out many of your shortcomings.

When you do not know the answer to a question frankly admit that.

If you make a false statement, you lose chances of selection.

Do not get into arguments or speak negatively or criticize former teachers, colleagues or employers.

If the interviewer asks you any question which you consider silly, do not get upset. Give your answer politely. In case you do not hear a question you are asked or if you do not understand it, you could politely ask for it to be repeated or explained. For example :

"I beg your pardon, sir."

"Could you clarify the question, please."

"I am sorry, but could you repeat the question please."

It is better to wait for the interviewers to invite you to ask questions in case you have queries. In case this does not happen, it is better to ask until you sense that the interviewers are done before asking them politely if they could clarify something.

- for you. For example, 'Could you tell me whether the position involves travelling, please' or 'Could I know when I can expect to hear from you, please'
- 26) When you are given an indication that the interview is over, get up and give a slight courteous bow and thank all the persons in the room before walking out of the door and closing it softly behind you.

In conclusion, we can say that success in interview can be surely and easily secured by clearly understanding its techniques correctly, following the procedures, grasping its rationale and mastering its secrets. Interview as a tool of selection is used for all managerial, executive and other appointments in the government departments, in the Union Public Service Commission selections, in the public and private sectors, and also in the universities, colleges, schools, etc. Even where other methods like written tests, intelligence tests, objective tests, group discussions, etc., are employed, the ultimate or final selection is invariably made only after the formal face-to-face interview.

References :

- 1) Bretag, Tracy, Communication Skills/Bretag Crossman Bordia Tata McGraw Hill Education Private Limited, New Delhi, 2012.
- 2) D. S. Paul, Manpreet Kaur, Interview Skills Goodwill Publishing House, 2017.
- 3) Manoj K. Sharma, Universal Interviews and Group Discussion, Published by Personality Development Classes, 2004.
- 4) Narasimha Karumanchi, Coding Interview Questions, Publisher Career Monk, 2016.
- 5) R. Gupta, Success in Interview Paperback, Ramesh Publishing House.

25

13

Impact Factor - 6.293

ISSN-2349-638x

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

JANUARY – 2020

Executive Editor

Dr. S. M. Maner

Principal

Tuljabhavani Mahavidyalaya, Tuljapur,
Dist. Osmanabad (M. S.) India

Chief Editor

Pramod P. Tandale

Co-Editor

Prof. G.V.Baviskar
Head, Dept. of History

Dr. B.W.Gund
Head, Dept. of Pol. Sci.

Prof. B.J.Kukde
Head, Dept. of Sociology

Tuljabhavani Mahavidyalaya, Tuljapur, Dist. Osmanabad (M.S.) India

IMPACT FACTOR

SJIF 6.293

For details Visit our website

www.aiirjournal.com

Sr No	Author Name	Title of Article	Page No.
84	इब्राहीम जमन तडवी	डॉ. बी. आर. आंबेडकरांच्या वैचारिक धोरणातील आरक्षण	242
85	डॉ. मारोती घंटेवाड	भारताच्या परराष्ट्र धोरणात पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांची भूमिका	244
86	प्रा डॉ. गजाजन हनवते	स्त्री - पुरुष तुलना एक वास्तविक अभास विशेष संदर्भ - राजकरण	248
87	डॉ. निलेश गोकूल शेरे	नक्षलवादी चळवळ आणि मानवी हक्क	251
88	दिनकर सुदामराव रासवे	महिलांचा राजकारणातील सहभाग	253
89	प्रा. ए. एन. भोसले	महिलांचा राजकारणातील सहभाग	255
90	Dr. Deepak Singh Mr. Ravindra Vyankatrao Mugale	Sardar Vallabhbhai Patel : A Real Actor In India's Freedom Movement	257
91	Shri. D.R. Nikalje	Global History as a Trend of Global Studies	261
92	प्रा.डॉ. फुलचंद सुर्यभान दुधभाते	इतिहासाचे पुनर्लेखन	264
93	प्रा. संतोष सोमनाथ कपाळे	वंचितांचा इतिहास लेखन प्रवाह एक चिंतन	266
94	प्रा. निल नागभिडे	भारतीय समाजसुधारणा चळवण व राष्ट्रवाद	269
95	प्रा.डॉ. आर. बी. गव्हाणे	स्थानिक इतिहास लेखनाचे महत्व	271
96	प्रा.सिध्देश्वर चंद्रकांत सुरवसे	स्थानिक इतिहास लेखनातील महत्वपूर्ण घटक व महत्व एक चिकित्सक अध्ययन	274
97	Shri. G.V. Baviskar	Subaltern Studies : A New Trend in Writing History	277
98	प्रा.धनेश मधुकर हरड	इतिहास संशोधनातील नवीन प्रवाह -स्थानिक इतिहास - एक दृष्टिक्षेप	283
99	प्रा. डॉ. उद्धव उमाजी राऊत	रामपूरचे मूर्तिशिल्प	286
100	श्री.अनिल महादेव बोराडे	स्थानिक इतिहास एक ऐतिहासिक दृष्टीक्षेप	288
101	डॉ अब्दु ल समद बादशाह शेख	अहमदनगर जिल्ह्यातील गोगल गावचा इतिहास	292
102	डॉ. वनिता साबळे-चव्हाण	औरंगाबाद जिल्ह्याचा प्राचीन राजकीय वारसा	294
103	प्रा. संदिप भैरू जाधव	जागतिक महामंदीच्या काळातील महाराष्ट्रातील सहकार चळवळ : एक ऐतिहासिक अभ्यास	296
104	प्रा.डॉ.नानासाहेब पंडितराव मनाळे	ढोकी गावाचा स्थानिक इतिहास	301

भारतीय समाजसुधारणा चळवण व राष्ट्रवाद

प्रा. निल नागभिडे

उस्मानाबाद.

घोषवारा :-

राष्ट्र राज्य या संकल्पनेमध्ये भूप्रदेश, लोकसंख्या, शासन संस्था, सार्वभौमत्व या घटकांना महत्त्व जरी असले तरी “ आम्ही सर्व एक आहोत ” ही भावना, राष्ट्रविषयाची एकनिष्ठता असणे म्हत्वाचे ठरते हे जर नसेल तर एखाद्या राष्ट्राचे विभाजन सुध्दा होवू शकते म्हणजेच सर्व सामान्य लोकांमध्ये “ राष्ट्रवाद ” हा विचार वा भावना तयार होणे महत्वाचे ठरते तेव्हा भारता संदर्भात विचार केला असता आपणास येथील राष्ट्रवाद वासाहतिक धोरण आणि सामाजिक – धार्मिक सुधारणा आंदोलन यांच्या क्रिया प्रतिक्रियेतून उदयास आलेला दिसून येतो.

महत्वाचे शब्द राष्ट्रवाद, सरंजामशाही, सार्वभौमत्व, स्वराज्य, स्वातंत्र्य, वासाहतिक धोरण, जातीसंस्था, अस्पृश्यता, केशवपन, व्यक्तीस्वातंत्र्य, बुद्धीवाद, समता,

प्रास्ताविक :-

“ राष्ट्रवाद ” या संकल्पनेमध्ये समान भाषा, संस्कृति, भू- प्रदेश या घटकांचे फक्त अस्तित्व पुरेसे होत नाही तर आपण एक आहोत व इतरांपेक्षा वेगळे आहोत. अशी स्वत्वाची जाणीव स्पष्टपणे व्यक्त व्हावी लागते व त्यासाठी आपले स्वतंत्र, सार्वभौम, राज्य स्थापन करण्याची आकांक्षा निर्माण व्हावी लागते. ब्रिटिश साम्राज्याच्या कालखंडात भारतीयांमध्ये स्वत्वाची जाणीव निर्माण झाली व त्यांच्या मध्ये स्वतंत्र, सार्वभौम राज्य स्थापन करण्याची आकांक्षा निर्माण होवून राष्ट्रवादी विचारप्रणालीने मुळ धरले हि विचार प्रणाली मवाळ, जहाल, मुस्लीम व गांधीवादी स्वरूपात व्यक्त झाली. एकोणीसाव्या शतकात राष्ट्रवाद ही स्वातंत्र्यवादी विचारसरणी होती परंतु विसाव्या व एकवीसाव्या शतकात मात्र राष्ट्रवादने आक्रमक स्वरूप धारण केले आहे.

राष्ट्रवादाचे उगमस्थान :-

राष्ट्रवादाचे मूळ वा उगमस्थान आपणास प्राचीन ग्रीक नगर राज्यांमध्ये प्रथम दिसून येते वैचारिकदृष्ट्या श्रेष्ठ असलेल्या हया ग्रीक संस्कृतीनंतर मध्ययुगात सरंजामशाही निर्माण झाली. सरंजामशाहीचे स्वरूप मुख्यतः स्थानिक होते. शांतता आणि सुव्यवस्था हयांचा अभाव असल्याने सरंजामशाहीचा हास होऊन राष्ट्र - राज्याचा उदय झाला. सरंजामदारांची अधिकार क्षेत्रे राज्याच्या सत्तेखाली एकत्रित आली. हया काळात राजा हा राष्ट्रवादाचा प्रतिक होते. राजाचे इच्छा, आकांक्षा, सत्ता यांना अधिक महत्त्व होते. त्यानंतर युरोपातील आपापसातील संघर्षामुळे, युद्धामुळे राष्ट्रवाद वाढला आणि फ्रेंच क्रांतीतून राष्ट्रवादी भावनेला समग्र युरोप व इतर प्रदेशात प्रोत्साहन, प्रेरणा मिळाली व त्या भावनेचा प्रत्यक्ष परिणाम म्हणजे एकोणीसाव्या शतकाच्या उत्तरार्धात राष्ट्रवादी भावना वाढीस लागल्यामुळेच इ.स. १८७० मध्ये इटलीचे एकीकरण व १८७१ मध्ये जर्मनीचे एकीकरण घडून आले व दोन नव्या राष्ट्रांचा उदय झाला.

भारतीय राष्ट्रवाद :-

ब्रिटिश वासाहतिक धोरणांचा परिणाम म्हणजे भारतीय राष्ट्रवाद होय. भारतात ब्रिटिशसत्ता प्रस्थापित होत असतांना त्यांनी ज्या धोरणांचा अवलंब केला उदाहरणार्थ भारतात शांततेची व प्रशासकीय ऐक्याची निर्मिती, दळणवळण व संचार साधनांचा विकास, इंग्रजी माध्यमातून आधुनिक शिक्षण पद्धतीचा लाभ एतद्देशीयांना करून देणे परिणामी बुद्धीजीवी मध्यम वर्गाचा उदय होणे व त्यांनी पाश्चात्य समाज जीवन व भारतीय समाजजीवन यांचा तुलनात्मक विश्लेषण करून समाजातील विषमता, अन्याय रूढी, प्रथा, परंपरा नष्ट करण्यासाठी प्रयत्न करणे. त्याकरीता वृत्तपत्राच्या माध्यमातून आणि सामाजिक संघटन निर्माण करून सामाजिक सुधारणा आंदोलनाच्या माध्यमातून सर्व सामान्य लोकांमध्ये आत्मभान, जागृती आणण्याचे कार्य केले.

एकोणीसाव्या शतकातील भारतीय राष्ट्रीय जागृती वसाहतवादी शासकांना आवडली नाही. प्रारंभी तर अशी अवस्था होती की, भारतातील राष्ट्रवादाचे अस्तित्व, मानायला ब्रिटिश विद्वान मंडळी, तयार नव्हती उदा.जे. आर. सीली भारताचा उल्लेख “ राष्ट्रीय ऐक्याची भावना नसलेला भौगोलिक प्रदेश ” असा केला. तर जॉन स्ट्रॅची १८८४ मध्ये केंब्रिज विद्यापीठाच्या विद्यार्थ्यांसमोर बोलताना म्हटले की, “ भारतासंबंधी सर्वप्रथम व सर्वात आवश्यक, जाणून घेण्यासारखी गोष्ट म्हणजे भारत अस्त्वात नाही आणि कधीही नव्हता ” त्यांनी भाकित केले की, भारत कधीही एक राष्ट्र बनणार नाही. परंतु एकोणीसाव्या शतकाच्या शेवटी आणि वीसाव्या शतकाच्या प्रारंभी हे स्पष्टपणे दिसू लागले की,

भारतात राष्ट्रवाद निर्माण झाला आहे. तेव्हा ब्रिटिश विद्वानांनी आपल्या भूमिकेत बदल केला. उदा. कूपलँड यांच्या मते "भारतीय राष्ट्रवाद ब्रिटिश सत्तेचे अपत्य आहे.

सामाजिक व धार्मिक सुधारणा चळवळ - राष्ट्रवाद :-

एकोणीसाव्या शतकात सुशिक्षित भारतीयांनी पाश्चात्य तत्त्वज्ञान व विज्ञानाच्या प्रकाशात आपल्या धार्मिक श्रद्धा, चालीरिती, सामाजिक प्रथांना पुन्हा तपासून पाहण्यास सुरुवात केली. त्याचा परिणाम म्हणजे ब्राम्हो समाज (१८२८) प्रार्थना समाज (१८६७) सत्यशोधक समाज, (१८७३) आर्य समाज (१८७५) रामकृष्ण मिशन १८९७ इत्यादी सामाजिक व धार्मिक सुधारणा संघटनांची स्थापना होण्यात आणि या संघटनांच्या माध्यमातून हिंदु समाज व्यवस्थेत सुधारणा करण्याचा प्रयत्न होणे उदा. सतिप्रथा, बालविवाह, बहुपत्नीत्व, केशवपन, जातिप्रथा, अस्पृश्यता, विषमविवाह पध्दत इत्यादी प्रथांना व विरोध तर स्त्री शिक्षण, विधवांचा विवाह, स्त्री - पुरुष विवाह वय वाढविणे इत्यादीचे प्रयत्न वा समर्थन केले गेले. या सर्वच चळवळी प्रगती पथावर होत्या आणि त्यांचा उद्देश लोकशाही, सामाजिक व व्यक्तिगत समता, तर्क, बुद्धीवाद इत्यादी आधारावर समाजाची निर्माती हा होता.

राजा राममोहन रॉय, लोकहितवादी, न्या. रानडे, गो.ग. आगरकर आदिंनी सामाजिक सुधारणा व धार्मिक सुधारणा, आर्थिक सुधारणा, राजकीय सुधारणा या कधीच भिन्न मानल्या नाहीत. 'आधी राजकीय की, आधी सामाजिक' या वादात आगरकरांनी सामाजिक सुधारणा व राष्ट्रवाद यांचा संबंध स्पष्ट केला आगरकरांच्या मते 'स्वातंत्र्यासाठी समाज एकसंध असणे आवश्यक होते. परंतु भारतीय समाज अनेक दोषांमुळे विशेषतः जातिभेदांमुळे दुभंगलेला होता हा भेद व हे दोष दूर केल्याशिवाय हा देश, हा समाज आपला आहे, असे लोकांना वाटणार नाही, 'असे आगरकरांचे मत होते. त्यामुळे त्यांना आधी सामाजिक सुधारणा आवश्यक वाटली होती.

सारांश :-

सामाजिक व धार्मिक सुधारणा चळवळ आणि राष्ट्रवाद यांच्या संबंधाचा आढावा घेत असताना एक राष्ट्रीयत्वाची भावना ही सुधारकांच्या विचारातून व कार्यातून दृष्टिस पडते. सामाजिक व धार्मिक सुधारणांचे क्षेत्र जरी प्रादेशिक वाटले तरी राष्ट्रीय स्वरूपाचे होते. प्रत्यक्षात सती प्रथा बंगाल मध्ये जास्त प्रचलित होती. पण तिच्या विरुद्ध महाराष्ट्रातही आवाज उठवला गेला राजस्थानातील बालहत्येचा निषेध महाराष्ट्रातही केला गेला. विष्णुशास्त्री पंडितांना व विरेसर्लिंगम पंतलंनू विधवा पुनर्विवाहाबाबत विशेष स्फुर्ती मिळाली ती बंगालमधील पंडित इश्वचंद्र विद्यासागर यांच्या लिखाण व कार्यापासून स्वामी दयानंद सरस्वतींनी स्थापन केलेला आर्य समाज पंजाब मध्ये विशेष लोकप्रिय झाला असला तरी त्याची स्थापना झाली ती मुंबई मध्ये. मंहुं ई इलाख्यात कार्यरत असणाऱ्या प्रार्थना समाजाच्या स्थापनेला कारणीभूत ठरले ते बंगालमधील ब्राम्हो समाज व त्याचे कार्यकर्ते केशवचंद्र सेन पुढे न्यायमुर्ती रानडे यांनी तर विविध प्रांतातील समाज सुधारकांमध्ये परस्पर सहकार्य निर्माण होण्यासाठी राष्ट्रीय स्वरूपाच्या ' सामाजिक परिषदेची' स्थापना केली. परंतु धर्म सुधारणा आणि समाज सुधारणा ही राष्ट्रीय चळवळीला मारक ठरेल म्हणून सामाजिक सुधारणा करण्याआधी 'स्वराज्य' मिळणे आवश्यक आहे. असे काही नेत्यांना वाटत होते यामुळे राजकीय चळवळीला प्राधान्य प्राप्त झाले. आणि सामाजिक सुधारणा चळवळ मागे पडली असे असले तरी सुधारकांचा राष्ट्रवादी दृष्टिकोन महत्त्वाचा ठरतो. तसेच सामाजिक व धार्मिक क्षेत्रातील जागृती ही मर्यादीत राहणे शक्य नव्हते. तिचा प्रभाव राजकीय क्षेत्रातही दिसून येतो.

संदर्भ :-

- i) Chandra Bipan, ' Indias struggle for Independence 1857-1947, ' 1988.
- ii) Sarkar Sumit, 'Modern India 1885 -1947' Macmillian India limited, New Delhi, 1983
- iii) Desai A.R., ' Social Background of Indian Nationalism', popular prakashan, Mumbai, 1984.
- iv) Dr. Hansraj, 'Western World mid 15th century to World war II' Surjit publication, Delhi , 2008

ISSN 2349-638x
Impact Factor 6.293

**AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY
RESEARCH JOURNAL**

PEER REVIEW & INDEXED JOURNAL

Email id : aiirjpramod@gmail.com

www.aiirjournal.com

SPECIAL ISSUE No. 64

Executive Editor

Dr. S.M. Maner

Principal

Tuljabhavani Mahavidyalaya,

Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Co-Editor

Dr. S.M. Deshmukh

Head, Dept. of Marathi

Tuljabhavani Mahavidyalaya,

Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Chief Editor

Prof. Pramod Tandale

Sr No	Author Name	Title of Article / Research Paper	Page No.
42.	डॉ. सूर्यकांत माधवराव दळवे	विज्ञापन के क्षेत्र में आकाशवाणी की भूमिका	114
43.	प्रा डॉ अर्जुन पवार	विज्ञापन में जनसंचार माध्यमों की भूमिका	116
44.	डॉ. एन. एन बोईनवाड	विज्ञापन क्षेत्र और व्यावसायिक अभिरुचि	119
45.	प्रा. डॉ. आर. यु. आडे	विज्ञापन क्षेत्र : "अखबार (समाचार), रेडिओ, दूरदर्शन के विशेष संदर्भ में"	121
46.	सुफी शहेमिना सबा डॉ. रविन्द्रनाथ माधव पाटील	भाषा अध्ययन के रोजगारोन्मुख आयाम विज्ञापन क्षेत्र के संबध में	124
47.	डा. मिर्ज़ा अनिसबेग रजाकबेग	खेल पत्रकारिता का बदलता परिदृश्य	128
48.	डॉ. संतोष इंद्रसेन भड	जनसंचार माध्यमों में समाचार पत्रों का योगदान	131
49.	डॉ. केशव क्षिरसागर	हिंदी पत्रकारिता में रोजगार की संभावनाएँ	133
50.	डॉ. रमेश टी. बावनथडे	हिन्दी पत्रकारिता की विकास यात्रा एक अध्ययन	137
51.	डॉ. एकनाथ श्रीपती पाटील	सोशल मीडिया और पत्रकारिता	140
52.	प्रा. प्रतापसिंग दत्तुसिंग राजपूत	पत्रकारिता के विविध क्षेत्र	144
53.	डॉ काकासाहेब गंगने. स्विनल रघुनाथराठोड	पत्रकारिता के माध्यम से रोजगार की संभावनाएँ	147
54.	प्रा डॉ शहाजी चव्हाण	पत्रकारिता की नई चुनौतियाँ	151
55.	प्रा डॉ महावीर उदगीरकर	पत्रकारिता और रोजगार के अवसर	154
56.	डॉ. एस. एस. उप्पे	हिंदी साहित्यकार और पत्रकारिता	156
57.	जैनु हमिद मुजावर	पत्रकारिता की अवधारणा एवं क्षेत्र	158
58.	डॉ. मंत्री आर आडे	अनुवाद के माध्यम से रोजगार की संभावनाएँ	163
59.	प्रा. नितेश गांगवे	अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के अवसर	167
60.	प्रा. डॉ. एम.के. कलशेट्टी	अनुवाद क्षेत्र	169
61.	श्री. महेश बापुराव चव्हाण	अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के अवसर	172
62.	डॉ. विठ्ठलसिंग रूपसिंग घुनावत	अनुवादका स्वरूप	175
63.	सौ. अनुराधा नामदेवराव शिंदे	अनुवाद क्षेत्र	177
64.	प्रा. बीना आर लोकरे	भारतीय भाषाओं को जोड़ने की कड़ी : अनुवाद	179

हिंदी पत्रकारिता में रोजगार की संभावनाएँ

डॉ. केशव क्षिरसागर

हिंदी विभाग

रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय, उस्मानाबाद.

प्रस्तावना :-

आजकल हर कोई एक ऐसा करियर बनाना चाहता है जिसमें वह कुछ सृजनात्मक कर सके, एक ऐसा करियर जो उसके गुणों और काबिलियत को और भी निखार दे, एक ऐसा करियर जो उसके पसंदीदा विषय से जुड़ा हो। हर किसी के लिए उसका पसंदीदा विषय अलग - अलग होता है। पत्रकारिता यानी जर्नलिज्म समय के साथ बहुत बदल चुका है। आज **मीडिया में करियर बनाना या पत्रकारिता में भविष्य बनाना** बहुत आसन हो गया है। अगर आप अपनी लाइफ में कुछ अलग मुकाम हासिल करना चाहते हैं तो आपके लिए पत्रकारिता अथवा मास कम्युनिकेशन की फील्ड अच्छी साबित हो सकती है। आपको बता दें कि भारतीय मीडिया इंडस्ट्री हर साल 10.55% की दर से वृद्धि कर रही है जबकि पूरी दुनिया की मीडिया की ग्रोथ रेट सिर्फ 4.2% ही है। इस हिसाब से देखा जाए तो भारत में मीडिया इंडस्ट्री का भविष्य काफी उज्वल है। पत्रकारिता और मास कम्युनिकेशन की फील्ड में कोई कोर्स करके आप प्रिंट रेडियो, वेब, एंटरटेनमेंट, जनसंपर्क आदि से जुड़कर अपना करियर संवार सकते हैं। अगर आप चीजों को एक अलग ही नजरिये से देखते हैं और आपको लेखन में खास दिलचस्पी है तो पत्रकारिता और मास कम्युनिकेशन की फील्ड में जाकर आप न सिर्फ अच्छा करियर बना सकते हैं बल्कि नाम और पैसा भी कमा सकते हैं। पत्रकारिता और मास कम्युनिकेशन की फील्ड में आने के लिए आपको इससे जुड़े कोर्स करने होंगे। इस फील्ड से जुड़े कई कोर्स हैं जैसे- बैचलर डिग्री, मास्टर डिग्री और डिप्लोमा कोर्सेस। इसके अलावा एमफिल और पीएचडी जैसे कोर्स भी इस फील्ड में उपलब्ध हैं। तो आइये जानते हैं पत्रकारिता और मास कम्युनिकेशन की फील्ड में करियर के बारे में - हर किसी के मन में आता है कि एक कोर्स करने के बाद उसके लिए रोजगार के क्या अवसर होंगे।

भूमिका

पत्रकारिता यानी कि जर्नलिज्म जो पहले के अनुसार बहुत बदल गया है। नई- नई तकनीकों और तकनीकी क्रांति के कारण भी इसमें बहुत बदलाव आये हैं। पहले जहाँ पत्रकारिता सिर्फ अखबार, रेडियो, पत्रिकाएँ और टीवी तक ही सिमित थी अब **ऑनलाइन पत्रकारिता** भी इस कतार में शामिल हो गई है। पत्रकारिता के बढ़ रहे महत्व को देखते हुए, कई मीडिया संस्थाएँ, शैक्षिक संस्थाएँ और इलेक्ट्रॉनिक चैनल स्थापित किए गए हैं। मीडिया समाज तथा शासन का वास्तविक दर्पण बन गया है और जन-साधारण की समस्याओं उनकी माँगों को उठाने तथा उन्हें न्याय दिलाने का एक प्रभावी साधन (प्लेट फार्म) बन गया है। बदलते परिवेश में प्रायः प्रत्येक करियर की संभावनाओं में आमूल परिवर्तन कर दिया है। पत्रकारिता में करियर एक प्रतिष्ठित व्यवसाय है और कुछ मामलों में एक उच्च वेतन देने वाला व्यवसाय भी है, जो युवाओं की बड़ी संख्या को आकर्षित कर रखा है। किसी भी राष्ट्र के विकास में पत्रकारिता एक अहम भूमिका निभाती है। पत्रकारिता ही वह साधन है, जिसके माध्यम से हमें समाज की दैनिक घटनाओं के बारे में सूचना प्राप्त होती है। वास्तव में पत्रकारिता का उद्देश्य जनता को सूचना देना समझाना, शिक्षा देना और उन्हें प्रबुद्ध करना ही है। पत्रकारों के लिए अवसर अनंत है किंतु साथ ही साथ किसी भी पत्रकार का कार्य अधिक चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि नया विश्व, इस कहावत को चरितार्थ कर रहा है कि "कलम और कैमरा तलवार से कहीं अधिक प्रभावशाली है।" अब घटनाओं की मात्र साधारण रिपोर्ट देना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि रिपोर्टिंग में अधिक विशेषज्ञता और व्यावसायिकता होना आवश्यक है। यही कारण है कि पत्रकार समाचारपत्रों एवं पत्र-पत्रिकाओं के लिए राजनीतिशास्त्र वित्त एवं अर्थशास्त्र, जाँच, संस्कृति एवं खेल जैसे विविध क्षेत्रों में इसके अतिरिक्त भारत में बड़े-बड़े कॉलेज और यूनिवर्सिटी में **जर्नलिज्म में डिग्री कोर्स** भी करवाया जाता है। सिर्फ यहीं तक ही नहीं अगर आप आगे भी जर्नलिज्म की ही पढ़ाई करना चाहते हैं तो स्नातक के बाद जर्नलिज्म में पीजी और पीएचडी भी कर सकते हैं।

पत्रकारिता क्या है ?

पत्रकारिता आधुनिक समय में एक महत्वपूर्ण व्यवसाय बन गया है। जिसमें समाचार का एकत्रीकरण समाचार लिखना, सारी जानकारियों को जुटाना, सम्पादित करना और सम्यक प्रस्तुतिकरण जैसे काम करने होते हैं। आज के समय में पत्रकारिता के अनेक माध्यम हो गए हैं जैसे कि अखबार, पत्रिकाएँ, दूरदर्शन, रेडियो, वेब - पत्रकारिता आदि। जैस - जैसे इंटरनेट चर्चित हुआ है वैसे- वैसे

पत्रकारिता ने भी अपने आप को विस्तृत किया है। अब हर कोई दुनिया में घट रही घटनाओं को और समाचारों को सबसे पहले जानना चाहता है। सब चाहते हैं कि वे बिना समय व्यर्थ किए मोबाइल में ही सारी जानकारी प्राप्त कर लें। जिस कारण पत्रकारिता ने अपने कार्य क्षेत्र को भी बहुत बढ़ाया है। अगर आपकी भी रूचि समाचार दुनिया में घट रही घटनाओं में और लिखने में है तो आप भी पत्रकारिता में अपना करियर बना सकते हैं।

पत्रकार कैसे बने ?

अगर आपकी भी रूचि समाचार में, दुनिया में घट रही घटनाओं में और लिखने में है तो आपके लिए पत्रकार बनना कोई बड़ी बात नहीं है। पत्रकार बनने के लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज सच्चाई और ईमानदारी है। अगर आप सच्चाई के साथ खड़े हैं और ईमानदारी से अपना कार्य करते हैं तो आपको पत्रकार बनने से कोई नहीं रोक सकता है। अगर देखा जाए तो पत्रकारिता का इतिहास हमारी आजादी से भी पहले का है। उस समय पत्रकारिता के लिए कोई कोर्स या विशेष संस्थान नहीं थे। पर आज के तकनीकी युग में और बढ़ते प्रतियोगिता के कारण इन संस्थाओं का एक व्यक्तिको पत्रकार बनाने में बहुत बड़ा योगदान रहा है। भारत में ऐसे बहुत सारे सरकारी संस्थान और यूनिवर्सिटी हैं जो पत्रकारिता में डिप्लोमा कोर्स, पत्रकारिता में सर्टिफिकेट कोर्स, पत्रकारिता में ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन लेवल के कोर्स करवाते हैं।

पत्रकारिता में करियर :

अगर आप भी पत्रकारिता में करियर बनाना चाहते हैं तो ये बात जान लें कि पत्रकारिता एक बहुत विस्तृत क्षेत्र है। पत्रकारिता एक ऐसा विषय है जहाँ आप अपने पसंदीदा विषय के अनुसार अपना करियर बना सकते हैं। एक मीडिया हाउस में पत्रकारिता से सम्बंधित लगभग 27 अलग-अलग विभाग होते हैं। इसमें आप अपने पसंदीदा विषय के अनुसार एक विषयको अपने करियर के रूप में चुन सकते हैं। अगर आपकी रूचि लॉ में है तो आप विधि पत्रकारिता कर सकते हैं, अगर आपकी रूचि इकोनॉमिक्स में है तो आप आर्थिक पत्रकारिता कर सकते हैं, अगर आप की रूचि पॉलिटिक्स में है तो आप राजनैतिक पत्रकारिता कर सकते हैं। ऐसे ही आप 27 विभागों में से किसी भी विभाग में अपनी रूचि के अनुसार करियर बना सकते हैं। पत्रकार को एक बुद्धिजीवी इंसान माना जाता है, एक ऐसा इंसान जो आम लोगों से कुछ हट कर सोचता और लिखता है। अगर आप भी किसी विषय को लेकर ऐसे ही अलग नजरिया रखते हैं और उसे लिखने में रूचि रखते हैं तो आप भी पत्रकार बन सकते हैं। क्योंकि पत्रकार हमेशा सिक्के के दोनों पहलुओं को देखने में दिलचस्पी रखते हैं। अगर आप सोच रहे हैं कि पत्रकारिता पाठ्यक्रम करने के बाद पत्रकारिता के क्षेत्र में नौकरी के क्या - क्या अवसर है। पत्रकारिता प्रशिक्षण के बाद आप किसी न्यूज एजेंसी में काम कर सकते हैं, न्यूज वेबसाइट में, प्रोडक्शन हाउस में, प्राइवेट या सरकारी न्यूज चैनल में, प्रसारभरती में, रेडियो चैनल में, फिल्म मेकिंग में, किसी कंपनी में काम कर सकते हैं।

अगर आप पत्रकारिता का कोर्स करना चाहते हैं तो बता दें कि पत्रकारिता पाठ्यक्रम करने के बाद आप गवर्नमेंट सेक्टर और प्राइवेट सेक्टर दोनों में काम कर सकते हैं। प्राइवेट सेक्टर में आप न्यूज चैनल, प्रोडक्शन हाउस, प्राइवेट रेडियो चैनल, फिल्म मार्किंग जैसे काम कर सकते हैं। बहुत से ऐसे प्राइवेट न्यूज चैनल हैं जहाँ समय-समय पर नौकरी के लिए आवेदन निकलते रहते हैं। इसके अलावा आप प्राइवेट पब्लिकेशन हाउस में भी काम कर सकते हैं। अगर बात करें गोवर्नमेंट सेक्टर में जॉब की तो आप लोकसभा और राज्यसभा जैसे न्यूज चैनल के लिए काम कर सकते हैं। दूरदर्शन और आकाशवाणी में भी आप काम कर सकते हैं। इसके अलावा आप रोजगार समाचार में भी काम कर सकते हैं।

पत्रकारिता कार्यक्षेत्र और करियर ऑप्शन :

अगर आप भी पत्रकारिता कोर्स करना चाहते हैं पर इस बात को लेकर दुविधा में है कि इसके आगे क्या करें। पत्रकारिता पाठ्यक्रम करने के बाद इसका कार्य क्षेत्र और करियर ऑप्शन क्या होगा तो आप निचे दिए गए बिंदुओं को पढ़ें लीजिए

- एडिटर
- कार्टूनिस्ट
- फोटो जर्नलिज्म
- प्रूफ रीडर
- फीचर लेखक
- लीडर राइटर
- विशेष रिपोर्टर
- आलोचक
- प्रस्तुतकर्ता
- शोधकर्ता
- रिपोर्टर
- ब्रॉडकास्ट रिपोर्टर

- स्तम्भकार (कॉलमनिस्ट)

पत्रकारिता के विभाग :

अगर आप जर्नलिज्म कोर्स करना चाहते हैं तो ये जरूरी है कि आप पहले से ही निर्धारित कर लें कि आप किस फील्ड में जाना चाहते हैं। पत्रकारिता के लिए अलग - अलग फील्ड है जैसे कि - प्रिंट जर्नलिज्म, इलेक्ट्रॉनिक जर्नलिज्म, वेब पत्रकारिता, पब्लिक रिलेशन आदि। पत्रकारिता में विषय के अनुसार अलग - अलग विभाग होते हैं। आप अपने पसंदीदा विषय के अनुसार अपने विभाग का चुनाव कर सकते हैं। हर क्षेत्र के लिए अलग विभाग होते हैं। नीचे कुछ विभाग के नाम दिए जा रहे हैं -

- | | |
|--|-------------------------|
| १) खोजी पत्रकारिता (इनवेस्टिगेटिव जर्नलिज्म) | ११) रेडियो पत्रकारिता |
| २) पीत पत्रकारिता (येलो जर्नलिज्म) | १२) टीवी पत्रकारिता |
| ३) बाल पत्रकारिता | १३) दूरदर्शन पत्रकारिता |
| ४) खेल पत्रकारिता | १४) फोटो पत्रकारिता |
| ५) आर्थिक पत्रकारिता (इकनोमिक जर्नलिज्म) | १५) विधि पत्रकारिता |
| ६) ग्रामीण पत्रकारिता | १६) अंतरिक्ष पत्रकारिता |
| ७) व्याख्यात्मक पत्रकारिता | १७) रक्षा पत्रकारिता |
| ८) विकास पत्रकारिता | १८) सर्वोदय पत्रकारिता |
| ९) सन्दर्भ पत्रकारिता | १९) फिल्म पत्रकारिता |
| १०) संसदीय पत्रकारिता | २०) महिला पत्रकारिता |

पत्रकारिता के प्रमुख कोर्सेस :

पत्रकार बनने के लिए आप कभी भी पढ़ाई शुरू कर सकते हैं। आप 12 वीं के बाद भी सीधे जर्नलिज्म के डिग्री कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं। इसके लिए बहुत से संस्थान और विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा भी आयोजित करते हैं। कुछ संस्थान या कॉलेज 12 वीं बोर्ड में प्राप्त अंक के अनुसार भी एडमिशन देते हैं। पत्रकारिता में प्रमुख कोर्सेस नीचे तालिका में दिए जा रहे हैं-

क्रमांक	कोर्स का नाम	अवधि
1.	बी. ए. इन जर्नलिज्म	3 वर्ष
2.	जी. ए. इन जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन	3 वर्ष
3.	बैचलर इन जर्नलिज्म	3 वर्ष
4.	बैचलर इन जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन	3 वर्ष
5.	बी. एससी इन जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन	3 वर्ष
6.	बी. ए. इन मीडिया एंड कम्युनिकेशन	3 वर्ष
7.	बी. ए. इन मीडिया एंड कम्युनिकेशन मैनेजमेंट	3 वर्ष
8.	बी. ए. इन मीडिया एंड कम्युनिकेशन डिजाइन	3 वर्ष
9.	बी. ए. इन मीडिया स्टडीज	3 वर्ष
10.	बैचलर ऑफ मास मीडिया	3 वर्ष
11.	बीबीए इन मास कम्युनिकेशन एंड जर्नलिज्म	3 वर्ष
12.	डिप्लोमा इन जर्नलिज्म	1 वर्ष
13.	एम. ए इन जर्नलिज्म	2 वर्ष

14.	एम. ए इन जर्नलिस्टि एंड मास कम्युनिकेशन	2 वर्ष
15.	एमजेएमसी	2 वर्ष
16.	पीजी डिप्लोमा इन एडवर्टिसमेंट एंड पब्लिक रिलेशन	1 वर्ष

पत्रकारिता के लिए योग्यता

अगर आप पत्रकारिता कोर्स करना चाहते हैं तो जरूरी है कि आप ने 12 वीं कक्षा उत्तीर्ण की हो। पत्रकारिता करने के लिए आपको मानसिक रूप से मजबूत होना होगा। क्योंकि आप को काम डेस्क पर भी करना होगा और बाहर फील्ड में भी। जर्नलिस्ट होने के लिए बेहतर कम्युनिकेशन स्किल की भी आवश्यकता है। जर्नलिस्ट होने के लिए लिखने, एडिटिंग करने और खोज करने की अच्छी क्षमता होनी चाहिए। अगर आप डेस्क में काम करेंगे तो जरूरी है कि आपको कंप्यूटर ज्ञान भी होना चाहिए। इसके अलावा जरूरी है की आप समय का सही से प्रबंधन करते हो। चीजों की गहराई में पड़ताल करने की योग्यता भी चाहिए। इसके अलावा पत्रकार होने के लिए सत्यनिष्ठ और ईमनादार होना भी जरूरी है।

पत्रकारिता में वेतन :

अगर आप भी पत्रकारिता कोर्स करने की सोच रहे हैं और कोर्स के बाद नौकरी में मिलने वाला वेतन होगा, एक जर्नलिस्ट की पूरे वर्ष की सैलरी 2,00,000 से 5,00,000 के बीच हो सकती है। अगर भारत में जर्नलिस्ट की सैलरी की बात करें तो यहाँ शुरुआती सैलरी 10,000 से 20,000 होती है। पर धीरे - धीरे जैसे अनुभव बढ़ता रहता है वैसे सैलरी भी बढ़ती रहती है। एक सीनियर रिपोर्टर की सैलरी जिसे 10 से 12 वर्ष का अनुभव हो उसकी सैलरी 1 - 2 लाख रु. और चीफ एडिटर की 5 लाख या उससे भी अधिक हो सकती है। अंत में यही कहना सही होगा की कार्य अनुभव किसी भी कर्म क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण होता है। जैसे - जैसे अनुभव बढ़ता जायेगा सैलरी भी बढ़ती रहेगी।

2349-638x
www.aiirjournal.com

ग्रेड में
कारिता,
अनुसार

कोर्स में
लेज 12

—Make in India Prospects of Policy

”

Maruti Abhiman Londhe

Assistant Professor,

Department of Economics,

Ramkrishna Paramhans Mahavidyalaya Osmanabad,

Dist :Osmanabad

marutilondhe99@mail.com

Abstract

India's Prime Minister Narendra Modi has rightly picked "Make in India" as the most important plank in his drive to help accelerate the country's rise towards becoming an economic superpower. The world is looking at India as it begins a new phase in its journey towards being a global economic powerhouse. Often labeled as a nation of shop keepers and traders it is easy to forget that India represented almost half the world's GDP right up to the 18th Century, one that rapidly declined over the next 100 years. This is testimony to the fact that India has always had a very mature consumer market as well as a well-entrenched distribution and commerce framework that extends well beyond its geographical boundaries. The Make in India is an international marketing strategy which aims to take a share of manufacturing in country's gross domestic product from stagnant 16% currently to 25% by 2022. This campaign to "transform India into a global manufacturing hub" aims to use manufacturing as a vehicle for job growth. This paper showcases the potential of design, innovation and sustainability across India's manufacturing sector in the coming decade. This will spark a renewed sense of pride in India's manufacturing- and take corporate and public participation to the next level.

Keywords: Make in India, Prospects, Policy, Vision

Introduction:

Make in India initiative launched by Prime Minister Narendra Modi on 25th September 2014 was an initiative aimed at making India a global manufacturing hub. It was also rolled out with the aim of creating millions of jobs in the country.

The logo for the Make In India campaign is an elegant lion, inspired by the Ashoka Chakra and designed to represent India's success in all spheres. Wheel denotes peaceful progress and dynamism. lion has been the official emblem of India" and it stands for "courage, tenacity and wisdom -- all Indian values The campaign was dedicated by the Prime Minister to the eminent

patriot, philosopher and political personality. Pandit Deen Dayal Upadhyaya who had been born on the same date in 1916.

Under the 'Make in India' initiative, the government has, in the last one year, announced several steps to improve the business environment by easing processes to do business in the country, and attract foreign investments.

The key sectors that will play a major role in the manufacturing sector in the future:

- Aerospace & Defence
- Automobiles & Automobile Components
- Chemicals & Petrochemicals
- Construction Equipment, Materials & Technology
- Food Processing
- Infrastructure Development
- IT & Electronics
- Micro, Small & Medium Enterprises
- Pharmaceuticals
- Textiles

The Vision of Make in India

The national programme aims at time-bound project clearances through a single online portal which will be further supported by the eight-member team dedicated to answering investor queries within 48 hours and addressing key issues including labor laws, skill development and infrastructure.

- The objective of the mega programme is to ensure that manufacturing sector which contributes around 15% of the country's Gross Domestic Products is increased to 25% in next few years.
- It will ultimately generate more employment opportunities for the poor and give greater purchasing power in their hands.

Cutting down on procedural delay: Delay in getting regulatory clearances lead to rise in cost of production. A leading multinational automobile major said "costs of production in India increase because of various government policies, procedures, regulations and the way some of the laws are implemented," The quicker the government addresses these challenges its better for the industry to set up facilities in the country.

Tax sops & focus on innovation: Economists have noted that with the globalization becoming a reality, Indian manufacturers will have to compete with the best and cheapest the rest of the world has to offer even in the domestic market. " India should be more focused towards novelty and innovation for the sectors indentified and integration with the country's premier institute for

carrying out research and development would be critical to the success of the make in India programme,” a leading industrialist said.

Skill development & thrust on education: Experts argue that the country needs to focus on quality education not just skill development. “ In the emerging economy, people will need to continuously learn new skills to meet the economy’s changing requirements,” an official with an industry association observed. In the last couple of years, National Skill Development Agency (NSDA) initiated work on creating a labour market information system which would help industry sourcing their manpower requirement

Reforms in the labour laws: Besides the skill development, labour law flexibility is a key element for the success of this campaign for increasing manufacturing in the country. Economists say that “ labour law flexibility does not imply ‘ hire and fire’ policy, it’s about providing a sound social safety net to workers.”

Experts say that the country has some of the most comprehensive labour laws at the same time a large parts of working population do not have access to social security net. A leading Economist said the big challenge for ‘ Make in India’ campaign would face constant comparison with China's 'Made in China' campaign. The China launched the campaign at the same day as India seeking to retain its manufacturing prowess. “ India should constantly keep up its strength so as to outpace China's supremacy in the manufacturing sector,” he noted.

Demographic dividend: Notwithstanding the challenges faced in making India a manufacturing hub, the country is poised to reap rich dividend for being one of the youngest nations in the world. India is the only country in the world which offers the unique combination of democracy, demography, and demand from a rising middle class. Besides, the campaign would ensure closer centre and states relations for promoting India as a global manufacturing hub. “ If investment comes in the States, it comes in India also. States and Centre should work collectively, shoulder to shoulder as a team. They should find solution together and things move forward.”

Policies under 'Make in India' initiative:

There are 4 major policies under the 'Make in India' program:

1. New Initiatives: This initiative is to improve the ease of doing business in India, which includes increasing the speed with which protocols are met with, and increasing transparency.

Here's what the government has already rolled out

- Environment clearances can be sought online.
- All income tax returns can be filed online.
- Validity of industrial licence is extended to three years.
- Paper registers are replaced by electronic registers by businessmen.
- Approval of the head of the department is necessary to undertake an inspection.

2. Foreign Direct Investment (FDI):

The government has allowed 100% FDI in all the sectors except Space (74%), Defence (49%) and News Media (26%).

FDI restrictions in tea plantation has been removed, while the FDI limit in defence sector has been raised from the earlier 26% to 49% currently.

3. Intellectual Property Facts:

The government has decided to improve and protect the intellectual property rights of innovators and creators by upgrading infrastructure, and using state-of-the-art technology. The main aim of intellectual property rights (IPR) is to establish a vibrant intellectual property regime in the country, according to the website.

These are the various types of IPR:

- **Patent:** A patent is granted to a new product in the industry.
- **Design:** It refers to the shape, configuration, pattern, colour of the article.
- **Trade mark:** A design, label, heading, sign, word, letter, number, emblem, picture, which is a representation of the goods or service.
- **Geographical Indications:** According to the website, it is the indication that identifies the region or the country where the goods are manufactured.
- **Copyright:** A right given to creators of literary, dramatic, musical and artistic works.
- **Plant variety Protection:** Protection granted for plant varieties, the rights of farmers and plant breeders and to encourage the development of new varieties of plants.
- **Semiconductor Integrated Circuits Layout-Design:** The aim of the Semiconductor Integrated Circuits Layout-Design Act 2000 is to provide protection of Intellectual Property Right (IPR) in the area of Semiconductor.

4. National manufacturing:

Here the vision is,

- To increase manufacturing sector growth to 12-14% per annum over the medium term.
- To increase the share of manufacturing in the country's Gross Domestic Product from 16% to 25% by 2022.
- To create 100 million additional jobs by 2022 in manufacturing sector.
- To create appropriate skill sets among rural migrants and the urban poor for inclusive growth.
- To increase the domestic value addition and technological depth in manufacturing.
- To enhance the global competitiveness of the Indian manufacturing sector.
- To ensure sustainability of growth, particularly with regard to environment.

Response to the 'Make in India' initiative:

The government has said that it has, so far, received Rs 1.10 lakh crore worth of proposals from various companies that are interested in manufacturing electronics in India.

Companies like Xiaomi, Huawei have already set up manufacturing units in India, while iPhone, iPad manufacturer Foxconn is expected to open a manufacturing unit soon.

Recently, Lenovo also announced that it has started manufacturing Motorola smartphones in a plant near Chennai.

In a report released by the World Bank, about a state-wise bifurcation based on ease of doing business, Gujarat was ranked as the top state, followed by Andhra Pradesh and Jharkhand.

Expectations on make India: Make in India' for Big Boost to Industry & Employment

Job placement firms expect the government's renewed push to manufacturing its Make in India program to start generating new employment opportunities in the next few months. The government hopes to create 100 million new jobs by 2022.

The firms estimate that 7.2 lakh temporary jobs are likely to be created in the next one year. It would add 8-13 percent to the current jobs pool as investment into manufacturing, engineering and related sectors rise. They say the Make in India initiative has led to an increase in hiring in these segments as well as e-commerce and Internet-related sectors. Estimates also suggest that refocusing on India's traditional occupations would potentially create 10 million jobs a year. For instance, the Indian, Leather Development Program trained 51,216 youths in the past 100 days and it plans to train 1,44,000 youths annually. Four new branches of Footwear Design & Development Institute at Hyderabad, Patana, Banur(Punjab) and Ankleshwar(Gujrat)- are being set up to improve training infrastructure. The industry is undergoing acute skill shortage and most of the people trained are being absorbed by the industry.

India is home to some of the best talents in the world, yet a major part of this talent pool remains untapped due to a fragment marketplace. As investment pick up, companies will be on the lookout for the right talent. R. Suresh, managing director of RGF Executive Search India, says even top leaders would need to acquire new skills. Design, technology skills, innovation, experience in operations, sales and distribution are going to be critical skills for top managers as well as, he says " The Indian job market has witnessed a substantial upswing in the demand for the new work profiles, especially in sectors such as solar energy generation and construction (green building, smart homes) " says Rachna Mukherjee, chief HR officer, Schneider Electric India.

Conclusion

India's small and medium sized industries can play a big role in making the country take the next big leap in manufacturing. India should be more focused towards novelty and innovation for this sector. The government has to chart out plans to give special privileges to these sectors. According to World Bank, India ranks 142 out of 189 countries in terms of ease of doing business. India has the capacity to push the GDP to 25% in next few years. The government of India has taken number of steps to further encourage investment and further improve business climate. "Make in India" mission is one such long term initiative which realize the dream of transforming India into manufacturing Hub.

References

- [1] Aliya Abbas. Narendra Modi's 'Make in India' vision can empower youth. Niti Central: Bold and Right, September 25, 2014
- [2] Arindam Bhattacharya, Arun Bruce & Anirban Mukherjee (2014). In India: Turning Vision into Reality. CII 13th Manufacturing Summit 2014
- [3] B. Grewal, P. Malhotra & A. Ahmed (2011). Inclusive Growth in India: Past Performance and Future Prospects, The India Economy Review
- [4] Debashis Mitra & Poonam Garg (2015). Can Make In India Campaign Will Be Able To Promote Small Scales Industries Of India. Global Journal For Research Analysis, 4(1)

The Impact of e-Commerce on Retail Businesses

Ms. Supriya S. Shete

Research scholar

Ramkrishna Paramhansa Mahavidyalaya, Osmanabad.

supriyashete50@gmail.com

Abstract

Internet plays a dominant role in our daily life. In pre-E-commerce era buying & selling was done in physical market. But in current scenario life is so convenient due to E-commerce. Online shopping is a part of e-commerce which is done mostly by the users due to E-commerce websites in India which allows us to buy and sell the products according to our choice at affordable price. E-commerce website has a lot of impacts on different markets and retailers. In this paper we will discuss about the different markets and retailers and impacts of e-commerce on them.

Keywords: E-commerce, online shopping, digital market

1.Introduction:

E-commerce is a boom in the modern business. E-commerce means electronic commerce. E-commerce involves buying and selling of goods and services, or the transmitting of funds or data, over an electronic network, predominantly the Internet. E-commerce is a paradigm shift influencing both marketers and the customers. Rather e-commerce is more than just another way to boost the existing business practices. It is leading a complete change in traditional way of doing business. This significant change in business model is witnessing a tremendous growth around the globe and India is not an exception. A massive internet penetration has added to growth of E-commerce and more particularly start-ups have been

increasingly using this option as a differentiating business model. Ecommerce, has reached almost every nook and corner of the world. Electronic commerce draws on technologies such as mobile commerce, electronic funds transfer, supply chain management, Internet marketing, online transaction processing, electronic data interchange, inventory management systems, and automated data collection systems.

This has been mainly attributed to the advent in information technology and electronics. Smart phones with easy access to internet and affordable data plans have ensured that internet is accessible to everyone, irrespective of class. The increase in literacy rate has also played a part in increasing consumer awareness about online stores.

Major discounts, quick delivery, vast variety of products, easy return policies, EMI options (interest-free in many cases), cash on delivery options, and easy accessibility are few of the aspects which have helped in the rapid growth of online stores. Clever marketing through social media, targeting the younger tech-savvy crowd has paid off well. Even the not-so-tech-savvy older generations is also gradually catching up with this trend!

Trust was and will remain a major concern for the online shoppers. However, many eCommerce players such as Amazon have been able to gain the trust through quick redress of consumer complaints and easy return policy. Another aspect which has helped the eCommerce industry grow in leaps and bounds is the variety of products offered and the ease of shopping anywhere.

2.Objectives of study:

The research has been conducted with the following objectives:

- To study the effect on profitability of retail stores due to the advent of e-stores
- To analyze the effect upon pricing patterns of retail stores in recent times
- To analyze the change in business pattern to achieve customer satisfaction & customer retention.
- To analyze the future scenario of e-stores.

3. Research methodology:

The data for the purpose of the study has been collected through secondary sources such as reference books, magazines, newspaper & internet websites.

4. Benefits of E-commerce over traditional commerce

With technological advancements, the shopping trends among the customers have radically transformed over the past few years. Also, the soaring popularity of online shopping has completely integrated into our lives and imagining a day without it seems to be a daunting task. As per [Statista](#), there has been a tremendous rise in the sales of e-commerce websites every year. With a whopping amount of \$2.8 billion in the last year, retail e-commerce sales are expected to reach \$4.88 billion by 2021.

With a huge impact of digital transformation over the commerce sector, people are more likely to purchase a product online rather than going to a physical store. Want to start your e-commerce business but waiting for the right time? There's no ideal time to start an online store.

Let's dive deeper into the advantages of using e-commerce websites over traditional commerce.

4.1 No geographical limitation:

When it comes to traditional commerce, you can only do business where you have set up your physical store. This is not the case with E-commerce websites. For them, the whole world is their playground if planned strategically. People from one corner of the world can easily order a specific product from another corner of the world with a few clicks.

4.2 Easy way to gain customer by search engine visibility

Traditional commerce shops depend mostly on branding and relations to drive more customers to their shop but on the other hand, e-commerce drive most of its traffic from search engines. Over 30% of e-commerce traffic comes from organic searches on search engines. This is just the traffic from organic searches and then we have advertisements, social media traffic which is the tipping point for many e-commerce businesses. By using an

innovative solution like Yo!Kart for your e-commerce store, you can easily gather insights into the traffic coming from different social media platforms.

4.3 Lower cost/investment

One of the best reasons to open an e-commerce website is because it requires a low investment as compared to a physical store. To cut down the prices for your e-commerce website, you can make use of the best marketing strategy involving: organic search, pay per click or social media traffic. Also, the manpower and property required to get the business up and running is much less as compared to a physical store.

4.4 Locate product quickly

We have all been through the hassle of locating a specific product in a huge store, running up and down the aisles and asking the person in charge to assist you. This is not the case with e-commerce platforms, as the customer just has to click through intuitive navigation or just type the specific product in the search box to immediately find their requirement.

4.5 Save travel time and cost

The main reason for people shifting from traditional commerce to e-commerce is because it saves travel time and cost. For a physical shop, the customer has to visit the outlet to purchase the item whereas for an e-commerce website he can just do it with few clicks sitting on the couch. With the advent of m-commerce, it has, even more, saved the time of the customer by allowing them to purchase the products on the go.

4.6 Enables deal, bargain, coupons and group buying

Many of you would think that even traditional commerce offers deals, bargains, etc. But e-commerce website makes it more convenient and easy for customers to avail them. Imagine a situation where you have coupons for groceries in one store and discount voucher for clothing in a completely different store. Imagine the amount of hassle you would have to face to buy both these products. While in the case of online shopping, you can purchase anything with just a few clicks and avail both the coupon and discount voucher on the same

platform.

By using our e-commerce solution Yo!Kart, you can effortlessly generate a detailed report of the discount coupons availed by the customers.

4.7 Abundance of information

When you go to a shopping store, the only information you see is that written on the product and the price of the product. In an e-commerce store, additional information is easily available to the customer in just a click. Mostly this information is entered into the system by individual vendors which require no extra effort or cost of the e-commerce owner.

4.8 Remains open all the time

Another major factor why the customer has shifted from traditional commerce to e-commerce websites is that they can shop at odd timings too. E-commerce store timings are 24*7*365. An e-commerce website has no obligation which is why they can remain open all the time. The sellers benefit from it as they gain more and more orders and for the customer, around the clock store is much more convenient.

4.9 Create e-commerce store for niche product

There are often niche products which are difficult to find in the physical world. Some things do not have a market in the physical world or even if they have, it's very scarce. In the online sphere, all you have to do is type the specific product in a search engine and you will find a list of websites that sell the product. For instance: Spare parts of the equipment are very hard to find in the physical world but comparatively easier in the online world.

4.10 Creates targeted communication

To create a targeted communication, the only thing you require is the email address and personal information/ habits of the potential customer. To gather this information, creating a registration page and enabling cookies on your website is important. Once you get a hold of the habits of the customers, you can send across relevant messages. This information also

helps in recommending products on the e-commerce website. Some e-commerce websites also send emails with products you may like to buy.

5. Impact of E-commerce on Retailers:

Due to the above various benefits of E-commerce to the customer. It makes a negative impact on retail stores in following manner.

5.1 Turnover

Due to e-commerce the turnover of offline retailers has reduced which is a warning signal for the enterprise.

5.2 Profit Margin

On the arrival of online shops in the market offline retailers are suffering from pricing. To survive in market, they have to sell product in low prices which covers only their operational costs and they do not get any profit margin.

5.3 Discount

Offline retailers sell their products at discounted rates because online stores offer heavy discount to the customers and to stay in the market and to attract the customers they have to sell the products at discounts.

5.4 Variety of Stocks

Variety of goods is offered by online stores to which offline retailers cannot compete because at the end of year the left over stock can give a huge loss to the retailer.

5.5 Customer Services

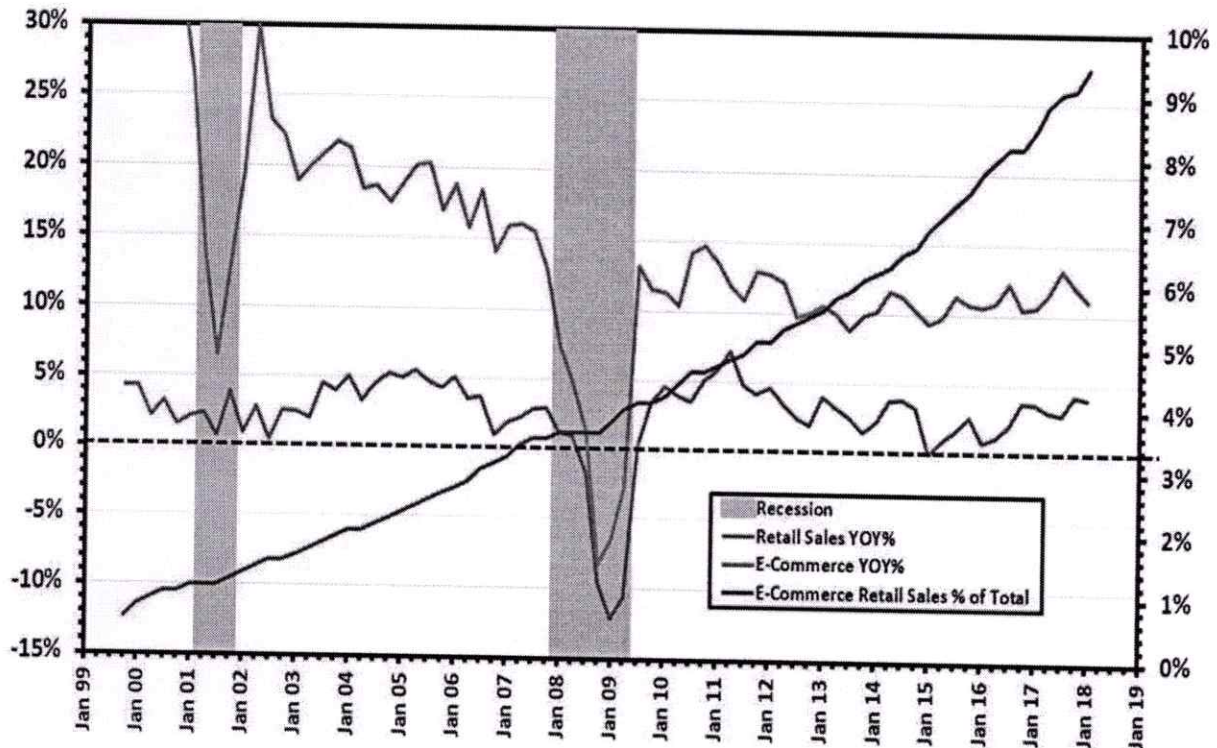
Offline retailers are providing different services at which online stores fails. Repair and goods of services, home delivery and after sales services also like online shops.

5.6 Window Shopping

Low prices offered by online stores leads to window shopping by customers at physical stores and they buy product online. Due to which they have prospective customer's more than actual customers.

5.7 Advertisement

Offline retailers focus only on the advertisements so that they can attract customers and increase their sales. They do not leave a single chance to advertise .



Retail and E-Commerce Year-Over-Year Sales Growth Rate (Left) and E-Commerce Retail Sales as Percent of Total Retail Sales (Right); Recessions are Shown in Grey (<https://fred.stlouisfed.org/>)

6. Conclusion:

This paper concludes that

- Majority of the individuals feel that eCommerce has affected the retail industry in an adverse manner, it may not be true completely.
- Online shopping lets customers review thousands of items in one place and pay for from the comfort of their homes. This has affected offline retail companies to stay in the competition with other retailers and online stores.
- The expectations of the buyers have increased with the boom in eCommerce industry and they expect much more than just buying products which are not fulfilled by retail stores.
- Along with the impacts e-commerce also offers some limitation in terms of markets and retailers that is website cost, to create and maintain a website a lot of money is required.
- On the other hand, the buyers' mentality of having to touch and see the product physically has ensured continued business for many businesses including clothes, jewels, vegetables, electronic gadgets, etc. Majority of the buyers still feel the need to verify the products physically before buying them.

7. References:

- A study on "Impact of E-commerce on India's commerce" –
International journal of development research, vol 6,issue,03 pp7253-7256,March 2016
- A study on "The impact of online shopping upon retail trade business" –
IOSR journal of business & management(IOSR-JBM)
ISSN:2778-487x,p-ISSN:2319-7668
- Advances in computational sciences & technology
ISSN 0973-6107 volume 10,Number 5(2017) pp 1495-1500.

Studies in Indian Place Names
(UGC Care Journal)

ISSN: 2394-3114
Vol-40-Issue-38-February-2020

- www.wikipedia.com

National
Seminar

The New Miraj Education Society's
Kanya Mahavidyalaya, Miraj (Maharashtra)

Special Issue
1st February, 2020



The New Miraj Education Society's
Kanya Mahavidyalaya, Miraj

One Day National Multidisciplinary National Seminar
On
**Emerging Trends and Issues in Social
Sciences**

Saturday, 1st February, 2020

Organized by

Department of Economics, Geography, History, Political Science,
Psychology, Sociology and Physical Education & Sports

Editor

Prof. Babasaheb Sargar

Co-editor

Prof. Ramesh Kattimani

Volume II

VIDYAWARTA Peer Reviewed International Refereed Research Journal
ISSN 2319 9318
Impact Factor: 7.041(IJIF)

1 | Page

National Seminar	The New Miraj Education Society's Kanya Mahavidyalaya, Miraj (Maharashtra)	Special Issue 1st February, 2020
-------------------------	---	--

65	श्री. मुलाळे विजयकुमार चंद्राप्या	माध्यमिक शाळेतील शिक्षकांची लैंगिक शिक्षण संकल्पनाविषयक मते	241
66	अक्षता सुरेश मिठारी प्रा. डॉ. भरत नाईक प्रा. डॉ. सुरेश संज पाळ	PUBG जेम जेळजा-या महाविद्यालयीन मुलांच्यामधील आक्रमकतेचा अभ्यास	244
67	श्रीमती योगिता जाधव श्रीमती वैशाली खालकर	महाविद्यालयातील स्मार्ट फोन वापरणाऱ्या विद्यार्थी-विद्यार्थिनींच्या मानसिक आरोग्याचा अभ्यास	246
68	प्रा.प्रमिला अधिकराव सुर्वे	“वरिष्ठ व कनिष्ठ महाविद्यालयात शिक्षणा—या महिला शिक्षकांच्या कार्यसमाधानाचा तुलनात्मक अभ्यास”	249
69	प्रा. पी. डी. पाटील	युवकांच्या सक्षमीकरणामध्ये सामाजिक प्रसार माध्यमांची (social media) भूमिका	254
70	डॉ. संजय हिंदूराव शिंदे	“भारतीय समाजाच्या परिवर्तनात समाजशास्त्राचे योगदान”	259
71	प्रा.डॉ.बी.एल. म्हस्के	बलात्काराचे कारणे व दुष्परीणाम	263
72	प्रा.डॉ. नवनाथ एस. शिंदे	बलात्काराची कारणे आणि उपाय	265
73	डॉ. राजेंद्र फकिरा बगाटे	विधि संघर्षित बालक : कारणे आणि सुधारणा	269
74	श्रीमती. धुमाळ सीमा जशिनाथराव	बलात्कार : कारणे आणि उपाय	274
75	डॉ. दिलीप सिताराम मस्जे	बलात्कार कारणे आणि उपाय	276
76	प्रा. राजकुमार विष्णू जोंधळे	भारतातील ब्रिटिशकालीन स्त्री सुधारणेच्या चळवळी	279
77	डॉ.सुधीर आ. येवले	'सततच्या निवडणुकीचा निवडणुक कर्मचाऱ्यांवर होणाऱ्या परिणामांचा समाजशास्त्रीय अभ्यास : शिखर का. तालुक्याच्या संदर्भात'	282
78	श्री. शिंदे डी.एम.	बाल गुन्हेगारी : समाजाची मानसिकता	288
79	प्रा. संतोष विश्वनाथ यादव	बालगुन्हेगार आणि सामाजिक मानसिकता	292
80	प्रा.सुजाना पाटील	बालगुन्हेगारी एक समस्या	296
81	प्रा. प्रगती भाऊराव हरले (कुकडे)	बलात्कार : कारणे आणि उपाय	301
82	प्रा. उमीले माधव उत्तमराव	बलात्कार : कारणे आणि उपाय	306
83	प्रा.माधवी सुरेंद्र पवार	बलात्काराची चिकित्सा आणि कारणे	310
84	डॉ. सविता बी. बहिरट	कारणमिमांसा: स्त्रियांवर होणाऱ्या हिंसाचाराची	314
85	प्रा. डॉ. चावरे एम. व्ही.	भारतातील बालगुन्हेगारी व उपाय योजना	319
86	प्रा. डॉ. गोरे बी. एम	भारतातील दारिद्र्याची कारणे	323
87	डॉ. बालाजी किशनराव पाटील	भारतातील दारिद्र्याची कारणे, उपाय	326
88	प्रा.डॉ.सौ.शामला माने प्रो.डॉ.शैलजा माने	प्रसार माध्यमांचे फायदे तोटे	329

National Seminar	The New Miraj Education Society's Kanya Mahavidyalaya, Miraj (Maharashtra)	Special Issue 1st February, 2020
-------------------------	---	--

65	श्री. मुलाळ विजयकुमार चंद्रापपा	माध्यमिक शाळेतील शिक्षकांची लैंगिक शिक्षण संकल्पनाविषयक मते	241
66	अक्षता सुरेश मिठारी प्रा. डॉ. भरत नाईक प्रा. डॉ. सुरेश संज पाळ	PUBG जेम जेळजा-या महाविद्यालयीन मुलांच्यामधील आक्रमकतेचा अभ्यास	244
67	श्रीमती योगिता जाधव श्रीमती वैशाली खालकर	महाविद्यालयातील स्मार्ट फोन वापरणाऱ्या विद्यार्थी-विद्यार्थिनींच्या मानसिक आरोग्याचा अभ्यास	246
68	प्रा.प्रमिला अधिकराव सुर्वे	“वरिष्ठ व कनिष्ठ महाविद्यालयात शिक्षणा—या महिला शिक्षकांच्या कार्यसमाधानाचा तुलनात्मक अभ्यास”	249
69	प्रा. पी. डी. पाटील	युवकांच्या सक्षमीकरणामध्ये सामाजिक प्रसार माध्यमांची (social media) भूमिका	254
70	डॉ. संजय हिंदूराव शिंदे	“भारतीय समाजाच्या परिवर्तनात समाजशास्त्राचे योगदान”	259
71	प्रा.डॉ.बी.एल. म्हस्के	बलात्काराचे कारणे व दुष्परीणाम	263
72	प्रा.डॉ. नवनाथ एस. शिंदे	बलात्काराची कारणे आणि उपाय	265
73	डॉ. राजेंद्र फकिरा बगाटे	विधि संघर्षित बालक : कारणे आणि सुधारणा	269
74	श्रीमती. धुमाळ सीमा जॉर्जनाथराव	बलात्कार : कारणे आणि उपाय	274
75	डॉ. दिलीप सिताराम मस्के	बलात्कार कारणे आणि उपाय	276
76	प्रा. राजकुमार विष्णू जोंधळे	भारतातील ब्रिटिशकालीन स्त्री सुधारणेच्या चळवळी	279
77	डॉ.सुधीर आ. येवले	'सततच्या निवडणुकीचा निवडणुक कर्मचाऱ्यांवर होणाऱ्या परिणामांचा समाजशास्त्रीय अभ्यास : शिस्वर का. तालुक्याच्या संदर्भात'	282
78	श्री. शिंदे डी.एम.	बाल गुन्हेगारी : समाजाची मानसिकता	288
79	प्रा. संतोष विश्वनाथ यादव	बालगुन्हेगार आणि सामाजिक मानसिकता	292
80	प्रा.सुजाता पाटील	बालगुन्हेगारी एक समस्या	296
81	प्रा. प्रमती भाऊराव हरले (कुंकडे)	बलात्कार : कारणे आणि उपाय	301
82	प्रा. उगीळे माधव उत्तमराव	बलात्कार : कारणे आणि उपाय	306
83	प्रा.माधवी सुरेंद्र पवार	बलात्काराची चिकित्सा आणि कारणे	310
84	डॉ. सविता बी. बहिरट	कारणमिमांसा: स्त्रियांवर होणाऱ्या हिंसाचाराची	314
85	प्रा. डॉ. चावरे एम. व्ही.	भारतातील बालगुन्हेगारी व उपाय योजना	319
86	प्रा. डॉ. गोरे बी. एम	भारतातील दारिद्र्याची कारणे	323
87	डॉ. बालाजी किशनराव पाटील	भारतातील दारिद्र्याची कारणे, उपाय	326
88	प्रा.डॉ.सौ.शामला माने प्रो.डॉ.शैलजा माने	प्रसार माध्यमांचे फायदे तोटे	329

Juvenile Delinquency and Social Mentality

बाल गुन्हेगारी : समाजाची मानसिकता

Mr. D.M. Shinde.

Associate Professor and Head, Department of Sociology,
Ramkrishna Paramhansa Mahavidyalaya, Osmanabad.
Mob. No: 9422377740, Email: dmshinde93@gmail.com

प्रस्तावना :

प्राचीन कालखंडापासून भारतीय समाजात अनेक प्रकारच्या सामाजिक समस्यांचे अस्तित्व असलेले पहावयास मिळते उदा. गुन्हेगारी बेकारी, दारिद्र्य, गरिबी, भ्रष्टाचार, वेश्याव्यवसाय, घटस्फोट, आत्महत्या ई या पारंपारिक समस्यांमध्ये आणखीन एका समस्यांची भर पडलेली आहे. वाढते औद्योगिकरण व नागरीकरणामुळे आणखीन तीव्र होत चाललेली समस्या म्हणजे बाल गुन्हेगारी (Juvenile Delinquency) हि होय. बाल गुन्हेगारी ही आधुनिक समाजाला भेडसावणारी एक समस्या आहे. पूर्वी बाल गुन्हेगारीची समस्या ही पाश्चात्य समाजाचा डोकेदुखी आहे असे आपण समजत होतो. पण डॉ. जी. सी. दत्त यांनी सावधानतेचा ईशारा दिला आहे. ते म्हणतात की, उत्तरोत्तर औद्योगिकरणात व त्याचबरोबर नागरीकरणात होणाऱ्या वाढीमुळे भारताच्या शहरी आणि ग्रामीण भागात देखील बाल गुन्हेगारी समस्यांची मुळे रूजू लागली आहेत व लवकरच पाश्चात्य देशांइतकीच ही समस्या तीव्र होईल.

तसेच थॅंशर या शास्त्रज्ञाने लहान मुलांच्या तेंराशे टोळ्यांचा अभ्यास केला होता. त्याचे 'जिम व्हॅदह' नावाचे पुस्तक प्रसिद्ध आहे. तो म्हणतो की, टोळ्या शहराच्या मध्यवर्ती भागात गर्दीच्या ठिकाणी आढळतात. शाळेतील उडानटप्पू मुले ही अशा टोळ्यांमध्ये सामील होतात. 'कालची उडानटप्पू मुले हीच आजची बालगुन्हेगार' असतात. असा त्यांचा निष्कर्ष आहे. एकोणिसाव्या शतकात मोठ्या माणसांनी केलेल्या गुन्हांना जी शिक्षा दिली जात असे तीच शिक्षा बाल गुन्हेगारांनाही केली जात असे. सहा पेनीचे नाने चोरणाऱ्या मुलाला फटकें दिले जात. माराची शिक्षा, तुरुंगवासाची शिक्षा या कोवळ्या वयातील मुलांना देणे गैर आहे. अशी कल्पनाही विचाराधिन नव्हती आणि म्हणूनच बाल गुन्हेगारी हा स्वतंत्र अभ्यासाचा विषय आहे असेही मानले जात नव्हते.

शहरीकरण आणि औद्योगिकरण यामुळे बाल गुन्हेगारी समस्या जटील होत चालली आहे. त्याबाबत स्वतंत्र कायदे करण्यात आले. १८६६ आणि १९०० या दोन वर्षी अमेरिकेतील शिकागो शहरात 'बाल न्यायालय' असे स्वतंत्र न्यायालय असे स्वतंत्र न्यायालय अस्तित्वात आले आणि लहान मुले वयाच्या ७ व्या वर्षापर्यंत गुन्हा करू शकणार नाहीत आणि वयाच्या १६ व्या वर्षापर्यंत जरी त्यांच्या हातून गुन्हे घडले तरी त्यांना मोठ्यासारख्या शिक्षा न देता सुधारगृहात पाठविले पाहिजे. ताकीद देऊन सोडून देणे, पालकांना दंड करणे, शाळेत पाठविणे, धंद्यामधील कौशल्य शिकविणे आणि त्यांच्यातील गुन्हेगारी कमी होईल या दृष्टीने त्यांच्या मध्ये संस्कार करणे व त्यांना चांगले नागरीक बनविणे यावर भर द्यावा असा विचार मान्य होऊ लागला. ज्युवेनाईल हा शब्द बाल गुन्हेगारांसाठी वापरावा असे सर्व मान्य झाले आणि गुन्हे तर झालेलेच असतात म्हणून गुन्हेगार तर म्हणायलाच पाहिजे परंतु गुन्हेगारी करण्याइतके ते जबाबदार असू शकत नाहीत. म्हणून बाल गुन्हेगारांचा प्रकार स्वतंत्रपणे विचारात घ्यावा. दिवसेंदिवस जीवन गतीमान होत आहे. पालकांच्या अपेक्षा वाढत आहेत. त्यामुळे मुलांवर ताण पडतो आणि ती पालकांना भिऊ लागतात व शाळेतही कंटाळतात अशी मुले पळून जाणे, खोटे बोलणे आणि न ऐकणे अशा गोष्टी करू लागतात. मुलांचे विपथगमन सुरू होते. विपथ गमनाकडे वाटचाली करू लागलेली मुले बाल गुन्हेगार होण्याची शक्यता आहे.

संशोधनाचे उद्देश :

१. भारतातील बाल गुन्हेगारांचा अभ्यास करणे.
२. भारतातील बाल गुन्हेगारीच्या समस्यांचा अभ्यास करणे.

३. भारतातील बाल गुन्हेगारीवर उपाय सुचविणे.

गृहित कृत्य :

१. भारतात बालगुन्हेगारी आहे.
२. भारतातील बालगुन्हेगारीच्या काही समस्या आहेत.
३. भारतात बाल गुन्हेगारीचे प्रमाण वाढत आहे.

बाल गुन्हेगारीचा अर्थ :

साधारणतः गैर वर्तन करणारी मुले म्हणजे बाल गुन्हेगार असे म्हटले जाते. म्हणजे समाजाने जी नियमनात्मक व्यवस्था निर्माण केली आहे. त्या सामाजिक नियमनांचा म्हणजे लोकरूढी, लोकनीती, कायदे, प्रथा, परंपरा यांच्या विरोधातील वर्तन ते गैरवर्तन बालकाने केले असता त्यास बाल गुन्हेगारी म्हटले जाते. पण यावरून बाल गुन्हेगारीची नेमकी संकल्पना स्पष्ट होत नाही. बालगुन्हेगारी समजले जाणारे कृत्य वा वर्तन आणि बाल गुन्हेगार या बाबत विविध तज्ञात व देशोदेशीच्या कायद्यात फरक आढळतो. एखाद्या समाजात वा देशात जे वर्तन बाल गुन्हेगारी ठरले ते दुसऱ्या देशात वा समाजात माणले जाईलच असे नाही. कारण देशपरतचे आढळणारी सांस्कृतिक भिन्नता होय. तसेच देशोदेशीचे वेगळे कायदे होय. काही समाजातील चांगल्या वाईटाच्या कल्पना आतशय संवेदनशिल असतात. त्यामळे वडीलधाऱ्यांना आदर न दाखविणे ही बाब देखील तेथे बाल गुन्हेगारी मानली जाते.

- १) कैरोत रस्त्यावरची सिगारेटची थोटके गोळा करणे हा बाल गुन्हेगारीचा प्रकार मानला जातो.
 - २) निरुद्देश भटकणे याचा समावेश कांही समाजात बाल गुन्हेगारीत होतो. साध्या तांत्रिक बाबींचे पालन न करणे ही गुन्हा माणतात.
 - ३) हॉगकॉगमध्ये फेरीवाल्या मुलांकडे शासनाचा परवाना नसणे हा बाल गुन्हा मानला जातो.
- बाल गुन्हेगारीची नेमकी संकल्पना समजून घेण्यासाठी पुढील व्याख्यांचा अभ्यास करणे आवश्यक आहे.

- १) न्युमेअर च्या मते, "बालगुन्हेगार म्हणजे वयात न आलेली व्यक्ती जी समाजाविरोधी वर्तन करणारी असून तीचे गैरवर्तन प्रचलीत कायद्याचा भंग करणारे असते."
- २) फ्रेड लॅंडर यांच्या मते, "बाल गुन्हेगारी म्हणजे बालकांचे असे गैरवर्तन की जे कायदेशिर कारवाईस पात्र आहे."
- ३) विल्यम शेल्डन यांच्या मते, "बाल गुन्हेगारी म्हणजे विशिष्ट वयाच्या आतील मुलांचा समाजाच्या रास्त अपक्षाचा भंग करणारे वर्तन होय."

वरील अन्य विचारवंतांनी आपआपल्या दृष्टीकोणातून बाल गुन्हेगार व बाल गुन्हेगारी बाबत व्याख्या देण्याचा प्रयत्न केला आहे. १९६० साली गुन्हेगारी प्रतिबंध आणि गुन्हेगारी नियंत्रणविषयकच्या द्वितीय संयुक्त राष्ट्रसंघ काँग्रेसच्या आधावपणात बाल गुन्हेगारी ही संकल्पना कायद्याविरोधी वर्तन करणाऱ्या मुलापुरती मर्यादीत केली पाहिजे. असे मत मांडून, बालगुन्हेगारीची सर्वमान्य व्याख्या देण्याचा प्रयत्न केला आहे. त्यांच्या मते, "बाल गुन्हेगारी म्हणजे (बालकांनी) केलेले असे कृत्य जे प्रौढांनी केले असता त्यास गुन्हा समजले गेले असते." अमेरिकेतील परिविक्षा समितीने बालकांच्या खालील वर्तनाचा बाल गुन्हेगारीत समावेश केला आहे.

- अ) राज्याने नमुद केलेल्या कायद्याविरोधी वर्तन करणे.
- ब) पालकांच्या आज्ञा न पाळणे व पालकांचे नियंत्रण न जुमानणे.
- क) घरातून, शाळेतून वारंवार पळून जाणे.
- ड) वाईट सवयी अंगवळणी पडून आपल्या व इतरांच्या आरोग्याला व समाजाच्या नीततीमुल्यांना हाणी पोहचवणे.

वरील प्रमाणे बाल गुन्हेगारीचा अर्थ स्पष्ट केला जात असला तरी भारताच्या संदर्भात विचार करता. १९८६ च्या बालन्याय कायदानुसार (Juvenile Justice 1986) मुलांसाठी १६ वर्ष व मुलीसाठी १८ वर्ष ही वयोमर्यादा निश्चित केली आहे. मुलांच्या जीवनाची रूपरेषा ठरवणारी हीच महत्त्वाची वर्षे आहेत. यावर भर देवून या वयोमर्यादांतील गुन्हा करणाऱ्या गुन्हेगारांना, गुन्हेगार न म्हणता बाल गुन्हेगार म्हटले आहे. त्यांना शिक्षेची नव्हे तर सुधारण्याची आवश्यकता आहे. यावर भर देऊन त्यांची हाताळणी

वेगळ्या प्रकारे करण्यासाठी विविध सूचना केल्या आहेत. या वयोमर्यादेतील मुलांत देखील पुन्हा भेद केले आहेत.

- अ) बालक ०१ ते ११ वर्षे
ब) किशोरपूर्व ११ ते १५ वर्षे
क) किशोर १५ ते १७ वर्षे

०७ वर्षाखालील मुलांने केलेल्या कोणत्याही गैरवर्तनाची कायदेशीर दखल घेतली जात नाही. या गटातील मुलांचे वर्तन पूर्णतया अजाणतेपणी घडलेले असते. शिवाय अशा वर्तनाचे प्रमाणही अत्यल्प असते. पण किशोरपूर्व व किशोरावस्थेतील बाल गुन्हेगारांची दखल घेतली जाते. त्यांचेकडून होणाऱ्या गुन्द्याचे प्रमाणही जास्त असते. भारतातील बाल गुन्हेगाराची सद्य स्थिती :

नॅशनल क्राईमस ब्युरो नुसार नोंदनीकृत बालगुन्हेगारीच्या केसेस २०१० मध्ये २२७४० तर २०१४ मध्ये ३३५२६ एवढ्या होत्या. २०१७ मध्ये ८०६७०० झालेल्या आहेत. २०१० ते २०१४ कालावधीत पुढील तक्त्यानुसार संख्या दर्शविण्यात आली आहे.

नोंदणीकृत बाल गुन्हेगारी खटले विरुद्ध गुन्हेगारीचे खटले २०१० ते २०१४

वर्ष	एकुण बालगुन्हेगारीचे खटले	नोंदणीकृत गुन्हेगारीचे खटले
२०१०	२२७४०	२२२४८३१
२०११	२५१२५	२३२५५७५
२०१२	२७६३६	२३८७१८८
२०१३	३१७२५	२६४७७२२
२०१४	३३५२६	२८५१५६३

१६.१८ वयोगटातील मर्डर आणि बलात्कार करणारे बाल गुन्हेगार तक्ता

गुन्हा	१६ ते १८ वयोगट	एकुण	टक्केवारी
मर्डर	८४४	६६३२०	१.२०
बलात्कार	१४८८	४८१६३	३.०८

बाल गुन्हेगारांचा शैक्षणिक स्थिती दाखविणारा तक्ता पुढील प्रमाणे आहे.

अ.क्र.	शैक्षणिक स्थिती	बाल गुन्हेगार
१	निरक्षर	६७३५
२	प्राथमिक	१४१८८
३	प्राथमिकनंतर बारावीच्या आतील	१६६४८
४	बारावीच्या पुढील	४८६६

बाल गुन्हेगारांच्या शैक्षणिक स्थितीचा विचार करता निरक्षर व १२ वी पुढील शिक्षण असणाऱ्या बाल गुन्हेगारांचे प्रमाण कमी दिसून येते. प्राथमिक नंतर व १२ वीच्या आत शिक्षण असणाऱ्या बाल गुन्हेगारांची संख्या जास्त दिसून येत आहे.

सारांश :

एकंदरीत समाजात बाल गुन्हेगारीचा विचार करता बालगुन्हेगारांचे प्रमाण दिवसेंदिवस वाढत चाललेले दिसून येते. आज समाजात शांतता व सलोख्याची गरज आहे. पण बाल गुन्हेगारच पुन्हा समाजात शांतता व सलोख्याची गरज आहे. पण बाल गुन्हेगारच पुन्हा समाजात मोठे झाल्यानंतर गन्हे प्रवृत्तीकडे वळण्याची शक्यता दिसून येते. वरील तक्त्याचा विचार करता २०१० मध्ये २२७४० एवढेच नोंदणीकृत बालगुन्हेगार दिसून येतात. पण आज मितीला हा आकडा वाढत असलेला दिसून येतो. २०१७ मध्ये बालगुन्हेगारांची संख्या ८०६७०० एवढी आहे. बालगुन्हेगारीचा प्रश्न हा गंभीर वा चिंतेचा विषय बनला आहे. वाढते नागरीकरण, शहरीकरण, स्थलांतर, कौटुंबिक कलह इत्यादीमुळे बालगुन्हेगारीकडे

National Seminar	The New Miraj Education Society's Kanya Mahavidyalaya, Miraj (Maharashtra)	Special Issue 1 st February, 2020
------------------	---	---

कल वाढताना दिसून येत आहे. वेळीच याची दखल समाजाने व शासनाने घेण्याची गरज आहे. तसेच बालगुन्हेगारी निर्मुलनासाठी प्रतिबंधात्मक उपाय आवश्यक आहेत. समायोजन, मनोरंजन, दारिद्र्य निर्मुलन, बेकारी निवारण, सल्ला मंडळे, शारीरिक व मानसीक विकास संस्था मानसोपचार तज्ञ व कर्तव्यदक्ष कुटुंब या सर्वांची गरज आहे.

संदर्भ सुचि :

१. भारतीय सामाजिक समस्या . प्रा. ए. वाय. कोंडेकर
२. गुन्हेगारीचे समाजशास्त्र . डॉ. सुधा काळदाते/डॉ. शुभांगी गोटे.
३. भारतातील सामाजिक समस्या . डॉ. सुधा काळदाते
४. भारतातील सामाजिक समस्या . प्रा. गंदेवार
५. विवेचनात्मक अपराधशास्त्र . आहुजा राम आणि आहुजा मुकेश

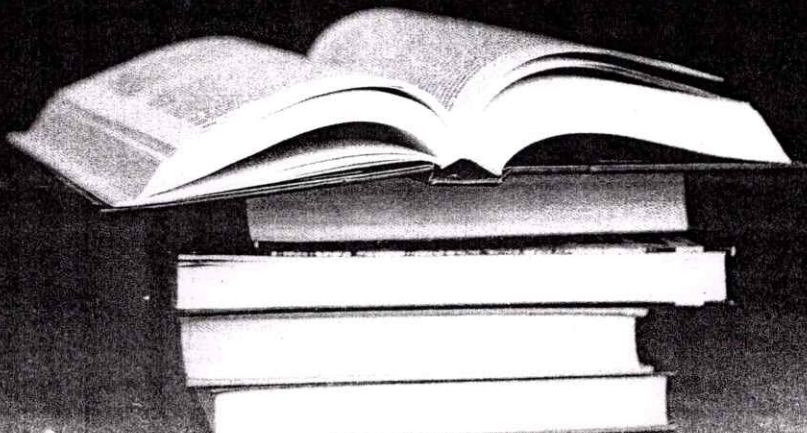
Peer Reviewed International Refereed Research Journal



शंकरराव पाटील महाविद्यालय, भूम व
डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद
यांच्या संयुक्त विद्यमाने

“राजर्षी शाहू, महात्मा फुले, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर
यांचे योगदान ” या विषयावर
एक दिवसीय राष्ट्रीय आंतरविद्याशाखीय परिषद

प्राचार्य
डॉ.श्रीकृष्ण चंदनशिव



INDEX

- 01) स्त्री उद्धारक महात्मा फुले : एक ऐतिहासिक अभ्यास
भिकाणे शोभा राजेंद्र ||17
- 02) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक विचार
श्री. डी. एम. शिंदे, उस्मानाबाद ||20
- 03) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे कृषीविषयक विचार
सहा.प्रा. दिपक हरी लहासे, बुलडाणा ||22
- 04) छत्रपती शाहू महाराज व डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आरक्षण विषयक विचार
प्रा. आर. एस. धप्पाधुळे, उस्मानाबाद ||26
- 05) शाहू महाराजांचे स्त्रीविषयक कायदे
प्रेरणा दिलीप दीक्षित, औरंगाबाद ||28
- 06) सामाजिक क्रांतीचे जनक राजर्षी शाहू महाराज
मा. प्रा. डॉ. दत्तात्रय बारबोले, अकलूज ||31
- 07) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे कृषि विषयक विचार
डॉ. भास्कर पाटील, अकोला ||35
- 08) छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज यांचे शैक्षणिक कार्य
प्रा. पद्मनाभराव सी. एम., उस्मानाबाद ||33
- 09) महात्मा फुले यांचे शिक्षण विषयक विचार
प्रा.डॉ. विलास भगवानराव भिल्लारे, बीड ||41
- 10) महात्मा फुले आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे मराठी साहित्यातील योगदान
प्रोफेसर डॉ. मधुकर दगडुदेव क्षीरसागर, बीड ||44
- 11) राजर्षी शाहू महाराजांचे सामाजिक विचार
डॉ. विठ्ठल भिमराव मातकर, बीड ||47

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक विचार

श्री. डी. एम. शिंदे

सहयोगी प्राध्यापक, समाजशास्त्र प्रमुख,
रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय, उस्मानाबाद.

प्रस्तावना :- भारताच्या इतिहासात १९ वे शतक हे महत्वपूर्ण सुधारणांचे व हालचालीचे शतक म्हणून ओळखले जाते. इ.स. १८१८ मध्ये पेशवाईचा अंत झाला व इंग्रजी सत्तेचा अंमल सुरू झाला इंग्रजांनी शिक्षण प्रसारावर भर दिला त्यामुळे देशातील नविन पिढी पाश्चात्य संस्कृतीच्या संपर्कात आली परिणामी समाजाध्ये आधुनिक विचारांचे वारे वाहू लागले तरुण वर्ग आपला समाज व्यवस्थेकडे चिकित्साक दृष्टीने पाहू लागला. त्यामुळे धार्मिक सांस्कृतिक व सामाजिक जिव्हात प्रचंड खळबळ माजली. समाजातील चूकीच्या अंधश्रद्धा व भ्रामक समजूतीया मूळे संपूर्ण समाजाचे नैतिक अंधःपतन घडून आलेले आहे. याची त्यांना प्रदर्शने जाणीव झाली. यातून काही तरुण सामाजिक सुधारणा घडवून आणण्यासाठी पूढे आले यामध्ये बाळशास्त्री जांभेकर राजर्षी शाहू महाराज, महात्मा ज्योतीबा फूले, गोपाळ हरी देशमुख व डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ई. चा समावेश होता. या सर्व समाज सुधारकांनी समाज परिवर्तन घडवून आणण्यासाठी शिक्षण हे किती मोलाचे आहे हे सर्व समाजाला समाजावून सांगितले.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जन्म व शिक्षण

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा जन्म १४ एप्रिल १८९१ रोजी मध्यप्रदेशातील इंदूर या जिल्ह्यातील महू या लष्करी छावणी असलेल्या गावात झाला त्यांचे नाव भिवा असे ठेवण्यात आले त्यांचे कूटबीय शेजारी व आप्तेष्ट त्यांना भिमा, भिम व भिमराव या नावाने हाक मारत असत.त्यांचे प्राथमिक शिक्षण सातारा येथील कॅम्प स्कूल मध्ये झाले व माध्यमिक शिक्षण मुंबई येथे एल्फिन्स्टन हायस्कूल मध्ये झाले.

तरुण भिमरावांनी १९०७ मध्ये मुंबई विद्यापीठाची मॅट्रिकची परीक्षा यशस्वीरीत्या पास झाले त्या काळात अस्पृश्य मुलाने मॅट्रिकची

परीक्षा उत्तीर्ण होणे अतिशय दुर्मिळ होते. त्यामुळे त्यांचे अभिर्नंदन करण्यासाठी एक जाहीर सभा भरविण्यात आली होती. छत्रपती शाहू महाराजांच्या हस्ते त्यांचा सत्कार देखील झालेला होता. पूढे त्यांनी मुंबईच्या एल्फिन्स्टन महाविद्यालयात प्रवेश घेतला व १९१२ मध्ये मुंबई विद्यापीठाची B.A. ची पदवी संपादन केली. बाबासाहेबांनी पदवी संपादन केल्याची बातमी बडोदा संस्थानचे राजे सयाजीराव गायकवाड यांच्या कानी गेली. राजे सयाजीराव भिमरावांच्या इंग्रजी भाषेवरील प्रभुत्वामुळे प्रसन्न होते. त्यामुळे त्यांनी भिमरावांच्या उच्च शिक्षणाची सोय अमेरिकेतील विद्यापीठात केली. त्यांना शिश्यवृत्ती देऊन त्यांच्या परदेशातील शिक्षणाची जबाबदारी सयाजीरावांनी स्वीकारली. भिमरावांनी कोलंबिया विद्यापीठात १९१३ ते १९१६ या तीन वर्षात अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, ईतीहास, राज्यशास्त्र व तत्वज्ञान हे विषय निवडून आपला अभ्यास पूर्ण केला. आणि M.A. व P.Hd. अती उच्च पदवी संपादन केली. १९१६ मध्ये भिमरावांनी पुढील शिक्षणासाठी लंडन हे शहर गाठले. अर्थशास्त्रातील पदवीसाठी त्यांनी लंडन स्कूल ऑफ ईकॉनॉमिक्स मध्ये प्रवेश घेतला. तेथे त्यांनी M.Sc. व D.Sc. ही पदवी संपादन केली. याच कालावधीत लंडन येथील वास्तव्यात ग्रेज मधून बार अॅट लॉ ही कायद्यातील पदवी मिळवली. पूढे हॅरीस्टर होण्यात ही यशस्वी झाले.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक कार्य

जाति संस्था व अस्पृश्यता ही भारतीय समाजजिवनातील कीड असून असपृश्यांना अतिशय दयनीय व मानहानीकारक जीवन जगावे लागत होते. महात्मा जोतीबा फूले, छत्रपती शाहू महाराज, सयाजीराव गायकवाड, विठ्ठल रामजी शिंदे यांनी असपृश्यता निवारण्याचे काम सुरू केले होते. तथापी वरीष्ठ जातींच्या मनोभूमिकेत काहीही बदल झाला नाही. बाबासाहेब शिक्षण घेताना व नोकरी करताना या मानहानीची जाणीव झाली होती. त्यामुळे आपल्या सार्वजनिक जिवनाची सुरवात करताना त्यांनी असपृश्यांना त्यांचे नाथ्य हाक मिळवून देण्याच्या कार्याला प्रधान्य दिले. आपल्या बांधवाना अन्यायाचा प्रतिकार करण्यास व आपल्या हक्कासाठी संघर्ष करण्यास शिकवले. असपृश्य हे ही याच देशाचे नागरिक असून त्यांना या देशात समानतेचे सर्व हक्क आहेत याची जाणीव त्यांनी आपल्या सर्व बांधवाना करून दिली. न्याय हक्कासाठी कोणाच्या सहानभूतिची गरज नाही. अन्याया विरुद्ध संघर्ष करून आपले हक्क अपणच मिळविले पाहिजे ही जाणीव त्यांनी समाज्यात निर्माण केली.

१. अस्पृश्यांना संघटीत व संघर्षासाठी जागृत करण्याचे कार्य

अस्पृश्यांच्या बाबतीत उच्च वर्णीय समाजाच्या विचार व अचार प्रणालीत कांही बदल होण्याची शक्यता बाबासाहेबांना वाटत

नव्हती. त्यामुळे सामाजिक समतेच्या नाय्य हक्कासाठी अस्पृश्यांना संघटीत करणे व अहिंसक मार्गाने जागृत करणे आणि त्यांचा अत्मविश्वास वाढवणे बाबासाहेबांना महत्वाचे वाटत होते. त्यामुळेच त्यांनी सत्याग्रह व मंदिर प्रवेशाची चळवळ हाती घेतली.

२. महाडच्या चवदार तळ्यावरील सत्याग्रह

महाडचा सत्याग्रह म्हणजे क्रांतीचा प्रारंभ होता. या सत्याग्रहाद्वारे मुक्ती लढ्याचे निशान रोवले गेले. आपल्या बाधवामध्ये अत्मविश्वास निर्माण करण्यासाठी त्यांनी हा सत्याग्रह केला. ४ ऑगस्ट १९२३ रोजी विधीमंडळात झालेल्या कायदेवजा ठरावानुसार महाडच्या मुल्सी पालटीने सार्वजनिक विद्यालय, पानवटे आणि धर्मशाळा ईत्यादी ठिकांनी अस्पृश्यांना मुक्त संचार देणारा ठराव पास केला. तथापी अस्पृश्यांनी उच्च वर्णांच्या भितीने या तळ्यावर जावून पाणी भरण्याचे धाडस केले नव्हते. त्यामुळेच हे साहस करून अस्पृश्यामध्ये अत्मविश्वास निर्माण करण्याचे त्यांनी ठरविले. बाबासाहेबांनी आपल्या बहुसंख्य अनुयायांसह चवदार तळ्याचे पाणी प्राशन केले. अन्यायी समाज व्यवस्थे विरुद्ध केलेले हे बंड होते. आपण माणूस असून माणसाप्रमाणे जगण्याचा हक्क आहे. हे देशाला सागणारी ही एक प्रतिकात्मक कृती होती. अस्पृश्यांच्या मनात अत्मविश्वास निर्माण करणारी प्रेरणा होती. संवर्णांनी यावेळी केलेल्या टिकेला बहिष्कृत भारत या पक्षिकातून त्यांनी उत्तरे दिली. भीक मागून किंवा रडून न्याय मिळत नाही, त्यासाठी आपल्यातील तेजाचेच साहाय्य घेतले पाहिजे या जाणिवेचा या सत्याग्रहामुळे जन्म झाला.

तथापी पुढील काळात महाड नगर पालिकेने हा ठराव रद्द केला व तळ्याचे शुध्दीकरण केले. त्यामुळे बाबासाहेबांनी २५ व २६ डिसेंबर १९२७ रोजी महाड येथे सत्याग्रह परिषद घेण्याचे ठरवले या परिषदेचा उद्देश स्पष्ट करताना त्यांनी विषद केले की, इतरा प्रमाणे आमही ही माणसे आहोत हे सिध्द करण्यासाठी तळ्यावर जायचे आहे. म्हणजेच ही सभा समतेची मुहूर्त मेढ रोवण्यासाठी बोलावलेली आहे. महाडच्या तळ्यावरील सत्याग्रहाने व तेथे झालेल्या परिषदेने अस्पृश्यांचा अत्मविश्वास वाढविला.

३. मनुस्मृतीचे दहन

महाड येथे सत्याग्रह परिषदेतच हिंदू समाजाचा धर्म ग्रंथ असलेल्या मनुस्मृतीचे दहन करण्याचा निर्णय घेतला गेला. या ग्रंथातील वेगवेगळ्या वचनांनी जातीव्यवस्था आणि त्याचे निर्बंध याचे समर्थन करून हिंदू समाज पध्दती व जाती बंधने यांना वळकटी प्राप्त करून दिली होती. शुद्रांची गुलामगिरी कायम करणारी वचने या ग्रंथात होती त्यामुळेच सामाजिक विषमता व उच्च निच्य भेद भाव यांचे समर्थन करणाऱ्या या ग्रंथा विरुद्ध प्रतिकात्मक कृती करण्याचा निर्णय घेतला

गेला आणि २५ डिसेंबर १९२७ रोजी मनुस्मृतीचे दहन करण्यात आले. प्रस्थापीत जाती व्यवस्था व उच्च निचतेचे भेदभाव या विरुद्ध केलेली ही बंडात्मक कृती असून अस्पृश्यांचा आत्मविश्वास वाढविणारी घटना होती.

४. मंदिर प्रवेशाची चळवळ

मंदिर प्रवेशाची चळवळ ही अस्पृशांच्या सामाजिक गुलामगिरीची बंधने तोडण्यासाठी केलेली चळवळ होती. या मागे आपण ही माणूस आहोत हा हक्क प्रस्थापीत करण्याची प्रेरणा होती. या मंदिर प्रवेशाने आमचे प्रश्न सुटनार नाहीत पण अम्हास मानाने किंवा हक्काने राहावय्यास मिळनार आहे की नाही हे पहावयाचे आहे. असा यामागील बाबासाहेबांचा विचा होता. अस्पृशांच्या प्रवेशाने मंदिर भ्रष्ट होत नाही किंवा मुर्ती भ्रष्ट होत नाही हे सिध्द करण्याचा त्यांचा हेतू होता. अस्पृश्यता निवारण्यासाठी सार्वजनिक व्यवस्था सर्वांना खुल्या असल्या पाहिजेत ही या मागील भावना होती. ऑक्टोबर १९२९ मध्ये पर्वतीवरील मंदिरात प्रवेश करण्यासाठी पहिला सत्याग्रह करण्यात आला. १९३५ पर्यंत राज्यातील निरंतराळ्या मंदिरातून हे सत्याग्रह करण्यात आले. या चळवळीतून अस्पृश्यांना आत्मिक बळ मिळाले.

५. शैक्षणिक कार्य

अस्पृशांची परंपरागत सामाजिक व धार्मिक गुलामगिरीतून सुटका करण्यासाठी त्यांना जागृत करणे बाबासाहेबांना अनशक्य वाटत होते. त्यामुळेच अस्पृश्य समाजात शिक्षणावर भर देणे त्यांना आवश्यक वाटत होते. संधीचा योग्य विनययोग केल्यास व्यक्ती उच्च विद्याविभूषित होते हे तत्त्व त्यांनी आपल्या समाजासमोर मांडले अस्पृश्य समाजाचे योग्य शिक्षण झाल्यास तो आपल्या हक्का विषयी जागृक राहिल व हक्क प्राप्त करण्यासाठी जागृक राहिल असा विश्वास होता. समाजाच्या शैक्षणिक प्रगतीसाठी त्यांनी २० जूलै १९२४ रोजी बहिष्कृत हितकारणी सभा या संस्थेची स्थापना केली. या संस्थेच्या वतीने वाचनालय व प्रोढ व्यक्ति साठी रात्र शाळा सुरू केल्या व अस्पृश्यांचे हक्क जोपासणाऱ्या शिक्षकांची नेमणूक केली. अस्पृशांच्या न्याय हक्कासाठी त्यांना विशेष सवलती मिळणे आवश्यक आहे याची बाबासाहेबांना जाणीव होती. यामुळेच गर्वनरच्या कार्यकारी मंडळाचा सदस्य म्हणून काम करताना किंवा पुढील काळात घटना समिती मध्ये सदस्य म्हणून काम करताना त्यांच्या प्रगतीसाठी आवश्यक त्या सर्व सवलती मिळतील या विषयी त्यांनी विशेष दक्षता घेतली १९४६ मध्ये त्यांनी पिपल्य एज्युकेशन सोसायटीची स्थापना केली. या संस्थेच्या वतीने मुंबई येथे सिध्दार्त महाविद्यालय व औरंगाबाद येथे मिलींद महाविद्यालय स्थापन केले विविध ठिकाणी वस्तीगृहाची

स्थापना करून दलित विद्यार्थ्यांच्या शैक्षणिक समस्या सोडविण्याची सोय केली.

६. वृत्त पत्रे व ग्रंथ

वर्तमानपत्रे समाजाच्या विकासाला चालना देणारे उपयुक्त साधन आहे याची बाबासाहेबाना जाणीव होती. वर्तमान पत्राच्या माध्यमातून अस्पृश्यांवर होणारे अन्याय व अत्याचार समाज्यासमोर मांडणे व वरिष्ठ समाजात परिवर्तनाचा विचार रूजविणे हे वर्तमान पत्र सुरू करण्या मागे उद्दिष्ट होते. अस्पृश्यांच्या विविध चळवळी मागील भूमिका स्पष्ट करणे व चळवळिला विरोध करणाऱ्यास सडेतोड उत्तर देणे या साठी त्यांना वर्तमान पत्राची गरज वाटत होती. छत्रपती शाहू महाराजांनी दिलेल्या अर्थिक साहाय्यातून बाबासाहेबानी मुक नायक या नावाचे वर्तमान पत्र सुरू केले. १९२७ मध्ये बहिष्कृत भारत हे पाक्षिक सुरू केले. १९२८ मध्ये समाता संघा तर्फे समाता हे वर्तमानपत्र सुरू केले. याशिवाय बाबासाहेबांनी जनता व प्रबुध्द भारत ही वृत्त पत्रे सुरू केली. त्यांच्या पत्रकारितेची जाणीव सर्वांना झाली. मराठी भाषेवर प्रभुत्व असतानाही त्यांनी सर्व ग्रंथ लेखन इंग्रजीतूनच केले कारण ब्रिटिश राज्य कत्यांना अस्पृश्यांची परस्थिती समजावी ही त्या पाठीमागील भवना होती.

७. गोलमेज परिषद

१९३० मध्ये लंडन येथे झालेल्या गोलमेज परिषदेत बाबासाहेब अस्पृश्यांचे प्रतिनिधी म्हणून उपस्थित होते. त्यांनी या परिषदेत अस्पृश्यांवर होणारे अन्याय अत्याचार प्रभाविपणे मांडले. अस्पृश्यांच्या हित संबंधाचे रक्षण करण्यासाठी त्यांनी स्वतंत्र मतदार संघाची मागणी केली. सप्टेंबर १९३१ च्या दूसऱ्या गोलमेज परिषदेला महात्मा गांधीजीच्या उपस्थिती मुळे महत्व मिहाले. परंतु गांधीना स्वतंत्र मतदार संघाची मागणी मान्य नव्हती त्यामुळे त्यावर पाणी सोडावे लागले.

संदर्भ ग्रंथ

१. महाराष्ट्रातील समाज सुधारणेचा ईतिहास :- डॉ. बी. बी. साहू
२. आधुनिक महाराष्ट्राचा ईतिहास :- डॉ. एस. एस. गाठळ
३. मुलभुत सामाजिक विचार :- प्रा. ज्योति डोईफोडे
४. डॉ. बाबासोब आंबेडकर :- धनंजय किर
५. सामाजिक परिवर्तन आणि सामाजिक चळवळी :- प्रा. अविनाश डोळस



03

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे कृषीविषयक विचार

सहा.प्रा. दिपक हरी लहासे

इतिहास विभाग प्रमुख,

राजे छत्रपती कला महाविद्यालय,

धामणगाव बहे ता. मोताळा जि. बुलडाणा

नामवंत शिक्षणतज्ञ समाज क्रांतीकारक, कायदेतज्ञ, महान पत्रकार, बुद्धीजीवी व्यक्तिमत्व, धर्म, इतिहास, राज्यशास्त्राचे व्यासंगी, महान समाजसुधारक, प्रकाट पंडीत, भारतीय घटनेचे शिल्पकार, दीन दलीतांचे कैवारी, विश्वरत्न इत्यादी बहुरंगी आणि चुरस्र व्यक्तिमत्वाचे अनेकविध पैलू कमी जास्त प्रमाणात सर्वांना सर्वश्रुत असले तरी त्यांच्या व्यक्तिमत्वाचा एक विशेष पैलू आहे, तो म्हणजे एक अर्थतज्ञ म्हणून त्यांची कामगिरी होय. मूलतः अर्थतज्ञ असलेल्या बाबासाहेबांचे कृषीविषयक विचार देशाला आणि शेतकऱ्यांना आर्थिकदृष्ट्या सक्षम करणारे आहेत. भूमिहीन मजूर, शेतकरी, लहान जमिनी, खोतीपध्दती, महारचतन, सामुदायिक शेती, शेतासारा, जमीनदारीचे उच्चाटन या अशा अनेक विषयांवर निरनिराळ्या वेळी बाबासाहेबांनी विचार प्रकट केलेले दिसून येतात. उद्योगधंद्यांचे राष्ट्रीयकरण, धान्य-प्रश्न, समाजवाद, कामगारांचे प्रश्न यावरूनही विचार मांडलेले आहेत. भारत पूर्वी आणि आजही कृषीप्रधान देश आहे. भारताची बहुसंख्य जनता शेतीवर अवलंबून आहे त्यामुळेच बाबासाहेबांनी सांगितले की भारतीय अर्थव्यवस्थेचा कणा असलेल्या शेतीच्या विकासाकडे लक्ष द्यायला पाहिजे. त्यामुळेच भारतातील शेती कशाप्रकारे आहे, त्या शेतीमधून कोणत्या प्रकारचे पीक घेतले जावे याविषयी शास्त्रीय आधारावर चिकित्सा होणे महत्वाचे ठरते अशा विचारांचे डॉ. आंबेडकर होते.^१

शेती क्षेत्राविषयी बाबासाहेबांचे विचार :-

१. शेती हा आजचा मुख्य व्यवसाय आहे व तो दिर्घकाळ चालू राहणार आहे.
२. शेतीचे उत्पन्न वाढविण्यासाठी शेती फायदेशीर होणे आवश्यक आहे.



Publisher & Owner
Archana Rajendra Ghodke
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed-431 126
(Maharashtra) Mob.09850203295
E-mail: vidyawarta@gmail.com
www.vidyawarta.com



ISSN 2319 9318



Peer Reviewed Refereed
and UGC Listed Journal

An International Multidisciplinary Quarterly Research Journal

ISSN - 2277 - 5730
Volume - IX, Issue - I,
January - March - 2020

AJANTA

Impact Factor 2019 - 6.399 (www.sjifactor.com)

Is Hereby Awarding This Certificate To

डॉ. विद्या जे. देशमुख

In Recognition of the Publication of the Paper Titled

पर्यावरण : एक जनजागृती

ISO 9001:2008 QMS
ISBN / ISSN

Ajanta Prakashan

Jaisingpura, Near University Gate,
Aurangabad, (M.S.) 431 004
Mob. No. 9579260877, 9822620877
Tel. No.: (0240) 2400877,
ajanta5050@gmail.com, www.ajantaprakashan.com

Editor : **Vinay S. Hatole**

३०. पर्यावरण : एक जनजागृती

डॉ. विद्या जे. देशमुख

प्राध्यापक तथा विभागप्रमुख भौतिकशास्त्र, रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय, उस्मानाबाद.

प्रास्ताविक

पर्यावरणाचा होणारा -हास हा सध्या चिंतेचा व्यापक व ऊहापोहाचा विषय बनला आहे. भूमीची सुफलन समता व स्त्रीची सर्जनशीलता यातील संबंध पूर्वीच्या लोकांना कसे जाणवले होते व त्यानुसार सणांची योजना करण्यापासून कृषी व त्यांच्याशी निगडित देवता या स्त्री रूपातच ठेवण्यात आल्या. सीता, उर्वरा, अनघा या स्त्री रूपातील देवता कायम राहिल्या.

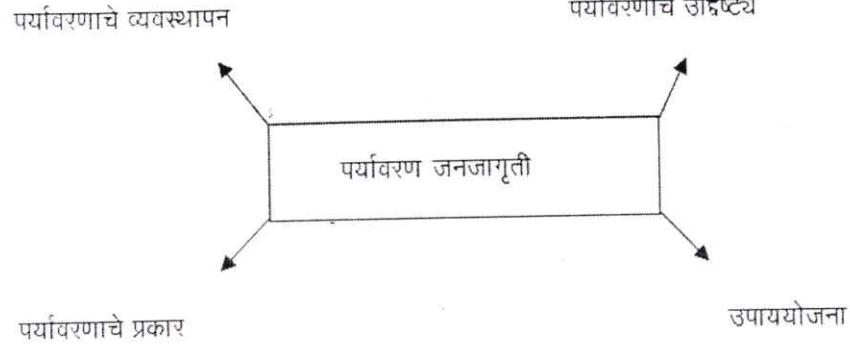
प्रदुषणाच्या कर्करोगाने मानवाला प्रचंड प्रमाणात ग्रासलय. रोज त्याची नवनवी रूप उघडकीस येत आहेत. उभारला जाणारा प्रत्येक कारखाना, प्रत्येक उद्योग हा या प्रदुषणाच्या अजगरी विळख्याची मिठी घट्ट करतोय. या अजगराची रूप किती नानाविध आहेत. हवा, पाणी, ध्वनी इ. या सर्व प्रदुषणाच्या रूपाने हा अजगर आपला विळखा आवळतोय पण आपल्याला रोजची हाता-तोंडाचा लढाई चालू ठेवताना या अजगराची जाणीव रहात नाही. यासाठी आपल्याला कोणती काळजी घ्यायला हवी हे पाहिले पाहिजे किंवा त्यावर संशोधन करणे गरजेचे आहे. यासाठी स्त्रीचा सहभाग असला पाहिजे व त्याचा अभ्यास होणे गरजेचे आहे.

पर्यावरण रक्षणात मूल्य रुजविण्याचे उद्दिष्ट असण्यासाठी एक म्हणजे पर्यावरणविषयक मुद्द्याचा अभ्यासक्रमातच समावेश असावा आणि दुसरे म्हणजे प्रकल्पाद्वारे मुलांमध्ये सभोवतालच्या निसर्गाबद्दल त्यांच्या संरक्षण-संवर्धनाबद्दल जाणीव निर्माण व्हावी. पर्यावरणसंबंधीच्या स्थानिक प्रश्नाबाबत जाणीवनिर्माण होणे गरजेचे आहे. जे मानवनिर्मित आहे व ज्याचे विघटन होऊन नैसर्गिक घटकांशी एकरूप न होणारे घटक म्हणजे प्रदूषण होय. पर्यावरणाच्या स्थितीचा जीवनाच्या गुणवत्तेवर आणि आपल्या अर्थव्यवस्थेवर खोल परिणाम होतो.

पर्यावरण प्रदूषण

आत्ताच्या जगात जंगलांचा नाश तसेच झाडे तोडणे तसेच भौतिक सुखाच्या नैसर्गिक स्रोतांची शोषण करीत आहेत पण पर्यावरण म्हणजे आपले जीवन, आपला श्वास आहे. म्हणून पर्यावरणाचा समतोल राखून ठेवणे हे प्रत्येकाच कर्तव्य आहे. जगभरामध्ये सर्वजण प्रदुषणाला तोंड देत आहेत. मनुष्याने लाभाच्या लोभाने आपले दीर्घकालीन आयुष्य धोक्यात टाकले आहे. हवेचे प्रदुषण, पाण्याचे प्रदुषण, आवाजाचे प्रदुषण, माती प्रदूषण किती झाले आहे हे कोणाच्या लक्षात येत नाही. औद्योगिककरणासाठी जंगलांचा नाश झाला आहे म्हणजेच पर्यावरण प्रदुषण वाढतच चालले आहे. या वाढत्या प्रदूषणामुळे हवेतील बदल, वाढते तापमान, हवामानातील बदलामुळे होणारे आजार, भूकंप, दुष्काळ, पूर जमिनीच्या उत्पादन क्षमतेमध्ये घट, ओझोनचा थर कमी होणे यासारख्या समस्यांना मनुष्याला तोंड द्यावे लागत आहे. जगभरातील मनुष्य, पक्षी, प्राणी, सुक्ष्मजीव, झाडे, हवामान, नैसर्गिक वनस्पती हे सर्व पर्यावरणावर निर्भर आहे.

पर्यावरण फक्त हवामान संतुलित ठेवत नाही तर मानवाच्या मूलभूत गरजा अन्न, हवा, पाणी, आणि इतर गरजांसाठी पर्यावरणावर अवलंबून आहे. जगामध्ये बरीच प्रगती झाली असली तरी माणूसच वाढत्या प्रदूषणाला जबाबदार आहे.



पर्यावरणाचे व्यवस्थापन

मानवाच्या हिंसाचारामुळे व कृतीमुळे पर्यावरणाची घटलेली गुणवत्ता वाढविणे व पर्यावरणाची स्थिती सुधारणे अत्यंत गरजेचे आहे. कारण पर्यावरणाच्या अवनतीमुळे सर्व सजीवांच्या अस्तित्वाला धोका निर्माण झाला आहे. पर्यावरण व्यवस्थापन ही निसर्ग आणि मानव यांच्यात समन्वय साधणारी प्रक्रिया आहे. पर्यावरणाच्या आपत्तीवर नियंत्रण ठेवण्याची प्रक्रिया ही पर्यावरण व्यवस्थापनाने केली जाते. पर्यावरणाचे व्यवस्थान विशिष्ट राष्ट्र किंवा प्रदेश यांच्याशी मर्यादित नसून ती संपूर्ण जगाची गरज आहे.

पर्यावरणाची उद्दिष्टे

1. नाश होत चाललेल्या सजीवांना संरक्षण देणे.
2. पर्यावरण आपत्तीवर विशिष्ट नियमावली व तत्वे ठरविणे तसेच पर्यावरणाच्या गुणवत्तेचे रक्षण करणे.
3. पर्यावरणातील वेगवेगळ्या घटकांचे संशोधन होणे गरजेचे आहे.
4. पर्यावरण नियोजनाचे रूपरेषा होणे गरजेचे आहे.
5. पर्यावरण प्रदूषणाचे कोणते तोटे समाजात जाणीव व जागृती निर्माण करणे.
6. पर्यावरणाचा जास्तीत जास्त अभ्यासक्रमामध्ये सामाविष्ट करण्याची व्यवस्था करणे.
7. पर्यावरणाच्या प्रमुख घटकांचे उर्जा, खनिज, जल संसाधनांचे व्यवस्थापन तसेच वन, वन्यजीव, मृदा व्यवस्थापन या सर्वांचे व्यवस्थापन होणे गरजेचे आहे.
8. पर्यावरण व्यवस्थापनात प्रदूषण नियंत्रणासाठी वायू प्रदूषण तसेच टाकाऊ पदार्थांचे व्यवस्थापन होणे गरजेचे आहे. औद्योगिकीकरणाची स्पर्धा चालू आहे. औद्योगिकीकरणामुळे धोकादायक टाकाऊ पदार्थ निर्माण होऊन पर्यावरण प्रदुषित होत चालले आहे आणि पर्यावरणास होणारा धोका वाढत आहे. मानवी वसाहती वने, जलसाठे व हवा हे घटक प्रदुषणास अधिक संवेदनक्षम आहेत आणि प्रदूषणामुळे त्यांचा -हास होऊ शकतो संवेदनक्षम क्षेत्रांचे संरक्षण करण्यासाठी पर्यावरणविषयक नियोजनाची गरज आहे. समाजातील प्रत्येक व्यक्तीच्या विचारांचे परिवर्तन करण्याचे सामर्थ्य शिक्षण प्रक्रियेत असल्याने पर्यावरण शिक्षणामुळे समाजातील सर्व स्तरात पर्यावरण साक्षरता आणणे गरजेचे आहे.

9. पर्यावरणाच्या समस्या सोडविण्यासाठी समाज गट व व्यक्तीस सक्रिय भाग घेण्यास सर्वाना संधी उपलब्ध करून देणे.
10. पर्यावरणाच्या समस्या ओळखणे व त्या सोडवणे. या बाबतचे कौशल्य संपादित करण्यासाठी मदत करणे
11. पर्यावरणाशी संबंधीत असलेली मूल्ये व प्रत्येकाने आत्मसात करावी यासाठी सहाय्य करणे.
12. पर्यावरण व त्याच्याशी संबंधीत असलेल्या समस्यांचे जाणीव निर्माण करण्यास मदत करणे.

प्रदूषणाचे प्रकार

प्रदूषणाची कारणे दोन प्रकारात विभागली जाऊ शकतात एक मानवी प्रेरित प्रदूषण व दुसरे नैसर्गिक प्रदूषण. मानवी प्रेरित प्रदूषण होण्याची कारणे—वाहनातून निघणारे धूर, उर्जाप्रकल्प, औद्योगिकीकरण, बांधकाम. नैसर्गिक प्रदूषण होण्याची कारणे—जी पर्यावरणाचे मोठे नुकसान करतात ज्वालामुखी, जंगलातील अग्नि, धूळ, वायू हे मोठ्या प्रमाणात विषारी वायू सोडतात व पर्यावरणाचे नुकसान होते.

प्रदूषणाचे प्रकार

1. जलप्रदूषण,
2. ध्वनीप्रदूषण,
3. वायुप्रदूषण
4. किरणोत्सर्गीप्रदूषण,
5. मृदाप्रदूषण

उपाययोजना :- लोकांमध्ये याविषयी जागृती निर्माण केली पाहिजे. यासाठी खालील गोष्टी कराव्यात.

1. ध्वनी प्रदूषण बंद करणे
2. हवेचे प्रदूषण कमी करणे
3. रासायनिक प्रदूषणाची विहेवाट लावणे
4. जल प्रदूषण
5. जमिनीचा वापर आणि त्यामुळे होणारे भूजलाचे प्रदूषण टाळणे.

समारोप

प्रदूषण हा एक विशाल विषय आहे. प्रदूषण कारणीभूत असलेल्या प्रत्येक घटकाकडे लक्ष देण्याची व आवश्यक प्रतिबंधात्मक उपाययोजना करण्याची गरज आहे. पर्यावरणावर होणाऱ्या प्रदूषणाचे हानिकारक परिणाम रोखण्यासाठी प्रभावी धोरण आखण्याची गरज आहे. प्रदूषणाचे दुष्परिणाम मर्यादित करण्याची गरज प्रत्येक क्षणोक्षणाला पर्यावरण नष्ट होत आहे.

पर्यावरणाला होणारे नुकसान टाळण्याची जबाबदारी प्रत्येकाची आहे. कचराकमी करून नवीन आणि प्रभावी कचरा संशोधन करून विल्हेवाट लावणे आणि व्यवस्थापन तंत्र सादर करून हे साध्य करता येते.

प्रदूषण नियंत्रणासाठी दीर्घकालीन उपाय योजना हवी. छोट्या छोट्या उपायांनी सुध्दा बऱ्यापैकी म्हणजे 25% प्रदूषण टाळू शकतो.

पर्यावरणात घडून येणारे बदल मानवाच्या हस्तक्षेपामुळे वाढत आहेत. त्यामुळे अनेक पर्यावरणीय समस्या निर्माण झाल्या आहेत. या समस्यांवर वेळीच उपाययोजना करणे आवश्यक आहे. प्रत्येक वेळी कायदा उपयोगी पडेल असे नाही.

संदर्भसूची

1. भांडारकर, के.एम. (जानेवारी 2006) पर्यावरण शिक्षण. पूणे :नित्य नूतन प्रकाशन, पृ. 20
2. पर्यावरणीय प्रश्न- एक जागतिक समस्या Review of January 2017
3. बी.सी. नरूला, प्रमुख राष्ट्रांची विदेशी नीति, नई दिल्ली :अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस
4. जयकुमार मगरकुमार विश्वकोश/ पर्यावरण 2019

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX

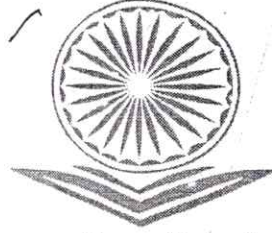
Issue - I

January - March - 2020

MARATHI PART - I / HINDI PART - I

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING

2019 - 6.399

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)



CONTENTS OF HINDI PART - I



अ.क्र.	शोधालेख एवं शोधकर्ता	पृष्ठ क्र.
१	अंधविश्वासोंका प्रामाणिक दस्तावेज : कलिकथा वाया बाइपास डॉ. सानप शाम बबनराव	१-४
२	आदर्श, स्वामीभक्ति और आत्मबलिदान का नारी दर्शन (डॉ. रामकुमार वर्मा के राजपूत युगीत एकांकियों के विशेष संदर्भ में) डॉ. धीरज वृत्ते	५-८
३	डॉ. शंकर शेषजी के नाटकों में सामाजिक रीति-रिवाज और रुढिया प्रा. डॉ. अनुप सहदेव दळवी	९-१५
४	'गोपा गौमत' में आधुनिक बोध प्रा. बापुसाहेब बाबासाहेब थोरात	१६-२३
५	भूदान में कृषक चेतना डॉ. राजश्री दगडू भामरे	२४-२७
६	प्रवासी साहित्य की अवधारणा और स्त्री कथाकार डॉ. केशव क्षिरसागर	२८-३१
७	भारतीय फिल्मों की महिला संगीतकार डॉ. सरिता संजीव इंगळे	३२-३७
८	समकालीन कविता में प्रतीक विधान डॉ. सुब्राव नामदेव जाधव	३८-४२
९	कहानियों में अभिव्यक्त नारी जीवन डॉ. विक्कड अभिमन्यु सदाशिव	४३-४५

६. प्रवासी साहित्य की अवधारणा और स्त्री कथाकार

डॉ. केशव क्षिरसागर

हिंदी विभाग, रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय, उस्मानाबाद.

प्रस्तावना

प्रवासी साहित्य का संबंध प्रवासी लोगों द्वारा लिखे साहित्य से है। प्रश्न यह उठता है ये कौन हैं और इनके साहित्य की विशेषता अथवा सुंदरता क्या है, इसी से जुड़ा है इस साहित्य का स्वरूप और सौंदर्यशास्त्र। आजकल साहित्य में कई विमर्श प्रचलित हैं। स्त्री विमर्श की भाँति इधर प्रवासी विमर्श ने भी जगह बनाई है। प्रवासी विमर्श की विशेषता यह है कि इसके अंतर्गत रचनात्मक साहित्य अधिक लिखा गया है। इसके आलोचनात्मक पक्ष पर उतना बल नहीं दिया गया है। प्रवासी साहित्य का आलोचनात्मक पक्ष अभी भी उतनी सक्षमता से उभरकर सामने नहीं आ पाया है। अभी - अभी भावात्मक अभिव्यक्ति की शुरुआत हुई है, अभी भावना बुद्धि पर पूरी तरह से हावी हुई है। भावना बुद्धि की अपेक्षा अधिक बलवान और सक्षम होती है इसका यह पुख्ता प्रमाण है।

भूमिका

कमलेश्वर ने प्रवासी साहित्य पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि रचना अपने मानदंड खुद तय करती है इसलिए उसके मानदंड बनाएँ नहीं जाएँगे। उन रचनाओं के मानदंड पहले से तय होंगे। प्रवासी लोगों की 3 श्रेणियाँ बनाई जा सकती हैं! एक श्रेणी में वे लोग हैं, जो गिरमिटिया मजदूरों के रूप में फिजी, मॉरीशस, त्रिनिडाड, गुआना, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में भेजे गए थे। दूसरी श्रेणी में 80 के दशक में खाड़ी देशों में गए अशिक्षित-अर्द्धशिक्षित, कुशल अथवा अर्द्धकुशल मजदूर आते हैं। तीसरी श्रेणी में 80-90 के दशक में गए सुशिक्षित मध्यवर्गीय लोग हैं जिन्होंने बेहतर भौतिक जीवन के लिए प्रवास किया।

इन तीन तरह की श्रेणियों में से, साहित्य के वर्तमान समय में, अंतिम श्रेणी का ही प्रभुत्व जैसा दिखाई देता है। गिरमिटिया मजदूरों की बाद की पीढ़ियों में से अधिकांश ने रोजगार तथा अन्य कारणों से हिन्दी या भोजपुरी के अलावा दूसरी अंतरराष्ट्रीय भाषाओं को अपना लिया। मॉरीशस के अभिमन्यु अनंत ही एक ऐसे लेखक हैं जिनको उल्लेखनीय माना जाता है। उनके उपन्यास 'लाल पसीना' ने काफी प्रशंसा पाई है। फिजी, त्रिनिडाड, अफ्रीका अथवा गुआना से कोई ऐसा लेखक चर्चित नहीं हुआ जिसको प्रवासी लेखन में ख्याति प्राप्त हुई हो।

इन दो वर्गों के लेखन को ही प्रवासी साहित्य की संज्ञा दी गई है। वस्तुतः पराये देशों में पराये होने की अनुभूति और उस अपरिचित परिवेश में समायोजन के प्रयास, नॉस्टेल्लिजिया, सफलताएँ और असफलताओं को ही प्रवासी साहित्य का आधार माना जा सकता है। राजेन्द्र यादव ने प्रवासी साहित्य को इसीलिए 'संस्कृतियों के संगम की खूबसूरत कथाएँ' कहा है। हालाँकि यह केवल संगम नहीं है बल्कि कई अर्थों में तो मुठभेड़ है।

साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि प्रवासी साहित्य, नॉस्टेल्लिजिया के रचनात्मक रूपों के समुच्चय है। नॉस्टेल्लिजिया को प्रथम दृष्टया नकारात्मक मूल्य माना जाता है, परंतु यह उचित नहीं होगा। नॉस्टेल्लिजिया का अर्थ है - घर की याद या फिर अतीत के परिवेश में विचरना।

प्रवासी साहित्य में नॉस्टेलजिया या परायेपन की अनुभूति, रचनात्मक यात्रा का केवल पहला चरण है। दूसरे चरण में, इस मनःस्थिति से संघर्ष शुरू होता है और तीसरे चरण में अपनी नई पहचान को स्थापित करने की जद्दोजहद दिखाई पड़ती है।

इन तीनों ही चरणों में, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों का चित्रण होता है। खान-पान, पहनावा, बोली-भाषा, पर्व-त्योहार का भी उल्लेख आता है। प्रवासी साहित्य में कविता, कहानी, उपन्यास, गजल आदि विधाओं में मुख्यतः लिखा गया है। परंतु कहानी इस विमर्श की प्रधान विधा बन गई है। जो अभिव्यक्ति की दृष्टि से सभी विधाओं को पीछे छोड़ देती है और हृदय में घर बना लेती है।

सुषम बेदी, सुधा ओम ढींगरा, जकिया जुबैरी, नीना पॉल, दिव्या माथुर, उषा वर्मा, जय वर्मा और उषा राजे सक्सेना ने प्रवासी लेखिकाओं के रूप में अपनी महत्वपूर्ण जगह बनाई है। सुषम बेदी का 'हवन' और 'मैंने नाता तोड़ा' उपन्यास काफी चर्चा में रहा है। इसमें अमेरिका के परिवेश में एक विधवा स्त्री के जीवन को दिखाया गया है, जो अत्यंत मार्मिक बन गया है किस तरह से उसे सारे समाज का सामना करना पड़ता है और किस तरह से उसे अपने ही परिवार में सम्मान का स्थान नहीं मिल पाता इसको अत्यंत प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। इसके अलावा उनके कहानी संग्रह 'चिड़िया और चील' ने भी पर्याप्त ख्याति पाई है।

जकिया जुबैरी के कहानी संग्रह 'सांकल' में स्त्री मन की कशमकश को चित्रित किया गया है। जकियाजी की कहानियों में नॉस्टेलजिया और वहाँ परिवार के बीच की स्थितियों का मार्मिक चित्रण मिलता है। माँ और बेटी के अलावा, माँ और पुत्र के बीच स्वाभिमान को बहुत ही संवेदनशील ढंग से उकेरा गया है। सांकल के अलावा 'मारिया' और 'लौट आओ तुम' ऐसी ही कहानियाँ हैं। नीना पॉल ने दो उपन्यास 'तलाश' और 'कुछ गाँव - गाँव कुछ शहर - शहर' लिखे हैं। इसके अलावा उनके दो कहानी संग्रह भी हैं। कुछ गाँव - गाँव कुछ शहर-शहर उपन्यास में इंग्लैंड के लेस्टर शहर के बनने की कहानी के साथ-साथ गुजरातियों के वहाँ जमने और संघर्ष करने को अत्यंत सजगता से गूँथा गया है। उपन्यास में निशा के माध्यम से एक गुजराती परिवार के तीन पीढ़ियों का संघर्ष दिखाया गया है। निशा, उसकी माँ सरोज बेन और निशा की नानी सरला बेन। गुजरात से युगांडा और युगांडा से लेस्टर पहुँचे हैं। इन भारतीयों की कठोर मेहनत करने की क्षमता और कुशल व्यापार बुद्धि ने एक नए देश में भी धीरे - धीरे उन्हें इज्जत दिला दी। इस उपन्यास की विशेषता यह है कि इसमें उपन्यासकार ने संतुलित और निष्पक्ष दृष्टिकोण अपनाया है। भारतीयों के साथ हुए भेदभाव तो दिखाए ही गए हैं, परंतु अंग्रेज के कानून के पाबंद होने को भी ईमानदारी से दिखाया है। साथ ही, लेस्टर के इतिहास और भूगोल के सुंदर चित्र खींचे गए हैं। उपन्यास को पढ़कर लेस्टर का पूरा नक्शा स्पष्ट हो जाता है।

दिव्या माथुर की शुरुआती कहानियों में कहानी का शिल्प कम और संवेदना अधिक है अर्थात् कहानी में चरित्र-चित्रण, संवाद, वातावरण की अपेक्षा, वे कथ्य पर फोकस करती हैं। जो उन्हें कहना है, वही उनके लिए मुख्य रहता है। 'तमन्ना' कहानी में एक ऐसी भारतीय बहू की कथा है, जो लगातार तनाव में है, झाँसी में उसका एक सड़कछाप प्रेमी था, जो शादी के बाद भी उसे धमकी भरे खत लिखता है, सास उसे समझाती है। 'पंगा' और अन्य कहानियाँ तथा '2050' जैसी कहानियाँ तक पहुँचते - पहुँचते उनके कहानियों में शिल्प का प्रबल आग्रह दिखाई देने लगता है। शिल्प का ऐसा ही प्रयोग उन्होंने अपने पहले उपन्यास में किया है। 'शाम भर बातें' नाम के इस उपन्यास में शुरु से आखिर तक केवल संवाद ही संवाद हैं अर्थात् बातें ही बातें हैं। इन बातों के बीच ही इंसान की इंसानियत और हैवानियत, व्यवस्था के विद्रूप तथा परिस्थितियों के पेंच सामने आते हैं। उपन्यास एक पार्टी में खुलता है और उसका अंत भी पार्टी के साथ ही होता है। यह पार्टी मकरंद मलिक और मीता मलिक के घर में हो

रही है। हैरानी की बात यह है कि लंदन शहर में चलने वाली इस पार्टी में लगभग सभी मेहमान भारतीय हैं। इसकी समाजशास्त्रीय पड़ताल की जरूरत है कि आखिर क्या वजह है कि वहाँ भारतीय समुदाय और दूसरे समुदायों के बीच समाजीकरण की प्रक्रिया एकदम मंद है। युवा पीढ़ी में जरूर यह बदलाव दिखता है, परंतु भारतीय पीढ़ी पूरी तरह से बंद जीवन जीती है। उनके रहन - सहन और सोचने के तरीके भी भारतीय मध्यवर्गीय चरित्रों की तरह हैं। उच्चायोग से आए अधिकारी अपने को बहुत उच्च स्थान पर मानते हुए अन्य भारतीयों के साथ तुच्छ व्यवहार करते हैं। शाम भर बातें उपन्यास में लंदन में बसने वाले अधिकांश भारतीयों की मनोवृत्ति और सामाजिक व्यवहारों का सूक्ष्म चित्रण किया गया है।

सुधा ओम ढींगरा ने 'कौन - सी जमीन अपनी' कहानी संग्रह से अपनी जगह बनाई। सुधाजी का लेखन एक सांस्कृतिक सेतु की तरह है। अमेरिका में मस्त और व्यस्त भारतीय पीढ़ी के बीच त्रस्त पीढ़ी के भी चित्र उनकी कहानियों में दिखाई देते हैं। उनकी कहानियों में भारत की स्मृति के क्षण भी हैं तो अमेरिका में अपनी पहचान जमाने के चित्र भी हैं। 'टारनेडो' कहानी भारत की याद और उसकी खुशबू की कहानी है, वहीं क्षितिज से परे कहानी में एक प्रताड़ित स्त्री के विद्रोह को दर्शाया गया है। कौन सी जमीन अपनी कहानी की शुरुआत ही अपने वतन की याद से होती है। 'आंये मैंने अपना बुढ़ापा यहाँ नहीं काटना, यह जवानों का देश है, मैं तो पंजाब के खेतों में, अपनी आखिरी सांसें लेना चाहता हूँ।' 2 जब वह अपने बच्चों को कहता है, तो बेटा झगड़ पड़ता, '-अपने लिए आप कुछ नहीं रहेज रहे और गाँव में जमीनों पर जमीन खरीदते जा रहे हैं।' 3 यह कहानी एक तरफ नॉस्टेल्लिजिया की भावुकता को प्रकट करती है तो दूसरी ओर यथार्थ की वीभत्स जमीन को भी उजागर करती है। मन्जीत सिंह अपनी पत्नी मनविंदर के साथ अमेरिका में रहता है। दो होनहार बच्चे हैं, जो डॉक्टरी और वकालत पढ़कर वहीं विवाह कर लेते हैं। बेटा और माँ दोनों ही मनजीतसिंह को समझाते रहते हैं कि पंजाब में अपने भाई को जमीन खरीदने के लिए बार-बार पैसा न भेजा करे, परंतु वह मानता ही नहीं। बच्चों की शादी के बाद जब वह और उसकी पत्नी मनविंदर नवांशहर, पंजाब अपने पैतृक गाँव पहुँचते हैं तो उनके साथ मेहमानों की तरह व्यवहार किया जाता है, मनजीत को यह अटपटा लगता है, छोटा भाई ही नहीं, माँ और बाप भी बदल जाते हैं। मनजीत जब अपने पैसों से खरीदी हुई जमीनों के हक की बात करता है तो भाई बुरी तरह क्रोध में आ जाता है। रात में मनजीत को भाई की सफुसाहटभरी आवाज से पता चलता है कि उसकी योजना दोनों की हत्या कर ठिकाने लगाने की बन चुकी है। इसमें वह पुलिस की भी शामिल होने की बात कहता है। उसका मन छलनी हो जाता है। इसी द्वंद्व में, वह एक रात पानी पीने उठा, तो नीचे के कमरे में कुछ हलचल महसूस की, पता नहीं क्यों शक - सा हो गया। दबे पाँव वह नीचे आया, तो दाराजी के कमरे से फुसफुसाहट और घुटी-घुटी आवाजें आ रही थीं। दोनों भाई दाराजी को कह रहे थे- 'मनजीत को समझाकर वापस भेज दो, नहीं तो हम किसी से बात कर चुके हैं, पुलिस से भी साठगाँठ हो चुकी है। केस इस तरह बनाएँगे कि पुरानी रंजिश के चलते, वापस लौटकर आए एनआरआई का कत्ल।' 4 मनजीत और मनविंदर रात को ही चुपचाप घर छोड़कर निकल जाते हैं। मनजीत चलते वक्त मनविंदर से पूँछता है- 'जान नहीं पा रहा हूँ कि कौन सी जमीन अपनी है।'

सुधा ओम ढींगरा की कहानियों की यही विशेषता है कि उसमें आदर्श का संसार भी है, परंतु वह मूल रूप से यथार्थ की जमीन पर खड़ा है। आदर्श जल्द ही यथार्थ से खंडित हो जाता है। उनके यहाँ कुछ कहानियाँ ऐसी भी हैं, जो विदेश के ही चरित्रों और स्थितियों पर केंद्रित हैं। ये कहानियाँ वास्तव में एक भारतीय की नजर से विदेशी भूमियों को देखने की है। उनकी एक कहानी 'सूरज क्यों निकलता है' को पढ़ते हुए पाठक को सहसा ही प्रेमचंद के घीसू और माधव याद आने लगें, तो कोई आश्चर्य नहीं। घीसू और माधव के बरअक्स जेम्स और पीटर ज्यादा

निर्लज्ज और अराजक हैं। घीसू और माधव कम से कम काम इसलिए नहीं करना चाहते कि वहाँ काम का कोई उचित मूल्य नहीं बचा है। परंतु सुधा ओम ढींगरा के ये दोनों पात्र काम करना ही नहीं चाहते और अय्याशी पूरी करना चाहते हैं। उनकी माँ टैरो भी ऐसी ही थी और लगभग सभी भाई - बहन भी। वे होमलेस होने का बहाना कर भीख माँगते हैं, सूप किचन में मुफ्त में खाना खाते हैं, शैल्टर होम में सो जाते हैं। ये सब सुविधाएँ अमेरिका की सरकार गरीबी रेखा के नीचे रहने वालों के लिए प्रदान करती है।

एक भारतीय की नजर से इस यथार्थ को देखते हुए कहानीकार ने बहुत सी सूक्ष्म घटनाओं और गतिविधियों का व्योरा दिया है। इसमें वेश्यावृत्ति, शराबखोरी की लत, ड्रग्स, पैडलर्स आदि सब शामिल हैं।

जय वर्मा ने इधर कहानी के क्षेत्र में कदम बढ़ाया है, परंतु उनकी कहानियों ने एक संवेदनशील कथाकार की उम्मीद जगाई है। 'सात कदम' उनकी ऐसी ही कहानी है, जो अपनी संरचनात्मक बुनावट और संवेदनात्मक कारीगरी के लिए याद रखने योग्य है। जिसमें परिवार के सदस्यों के बीच विश्वास कितना आवश्यक है, सच्चे अर्थों में विश्वास ही परिवार की सबसे मजबूत नींव है फिर परिवार चाहे भारत का हो या अमरीका का यह बताने की पूरी कोशिश की है। जिसमें उन्हें बहुत ज्यादा सफलता भी मिल गई है कहानी पाठकों को बाँधकर रखने और विचार करने के लिए बाध्य करती है।

उषाराजे सक्सेना की कहानी 'वो रात' बेहद चर्चित कहानी रही है। एक माँ और उसके छोटे बच्चों के साथ कल्याणकारी राज्य की भूमिका पर केंद्रित इस कहानी की मर्मस्पर्शी संवेदना झकझोर देती है। माँ अपने बच्चे को संसार की पहचान सच्चे अर्थों में करा देती है। अपने आस - पास के वतावरण और लोगों की सही पहचान किस तरह से करनी चाहिए इसका माँ अपने बेटे को पाठ पढ़ाती है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि एक परिघटना के रूप में यह साफ दिखाई देता है कि पूरे प्रवासी साहित्य की बागडोर स्त्री रचनाकारों के हाथ में है। एक नई दुनिया का पता और उसकी आंतरिक गतिविधियों की सूचना इन कथाकारों की कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से पाठकों को मिलती है। इन कहानियों ने पाठकों को बाँधे रखा है उसकी विचारधारा को नई उपजाऊ जमीन मुहैया कराने का महत्वपूर्ण कार्य इन सभी कथाकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से अत्यंत कुशलता से किया है जो अपने आप में अत्यंत अनूठा बन गया है। इन कथाकारों की रचनाशीलता ने हिन्दी साहित्य का परिदृश्य और भी विस्तृत किया है। जो आज के संदर्भ बेशक अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

संदर्भ

- १) 'कौन सी जमीन अपनी' - डॉ. सुधा ओम ढींगरा, पृ. क्र. १०९
- २) 'शाम भर बार्ते' - दिव्या माथुर, पृ. क्र. ५५
- ३) 'चिड़िया और चील' - सुषम बेदी, पृ. क्र. ७८
- ४) 'हवन' - सुषम बेदी, पृ. क्र. ५८



Kisan Shikshan Prasarak Mandal,
Borgoan (Kale) Tq. & Dist. Latur's

NAAC Accredited 'B' Grade



Vasant Rao Kale Mahavidyalaya,
Dhoki. Tq & Dist - Osmanabad.



&
Akhil Maharashtra Itihas Parishad, Pune

Jointly Organize

One Day International Conference on

**"The History of Pandemic like Covid-19 & Its Impact on
Socio-Economic & Political Sectors in the World"**

Tuesday, 20th October 2020

ISSN No. : 2278-9308

Impact Factor : 7.675

Editor

Dr. N. P. Manale
(Convenor)

Chief Editor

Dr. Satish Kadam
(President, AMIP)

Executive Editor

Dr. Haridas Fere
(Principal)

Organized by

Department of History

Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Borgoan (Kale) Tq. & Dist. Latur's

VASANTRAO KALE MAHAVIDYALAYA, DHOKI

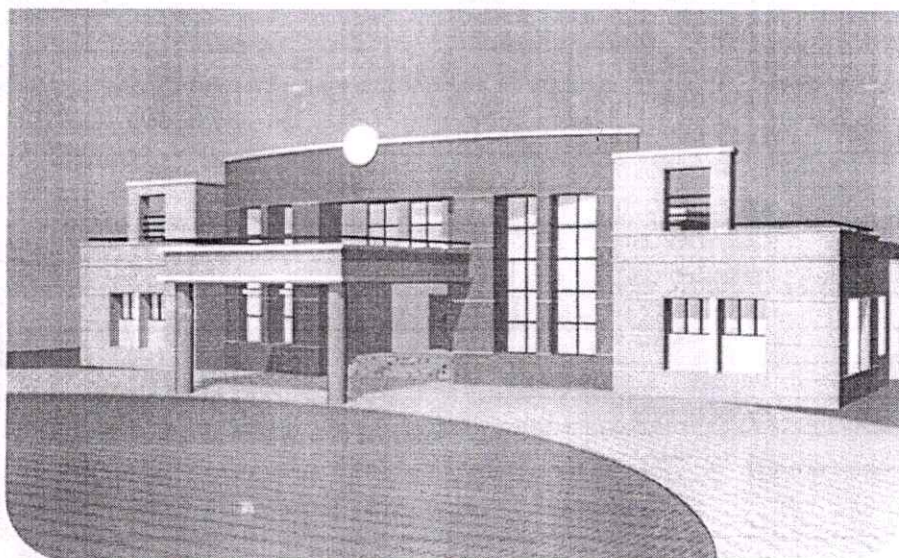
Tq & Dist.- Osmanabad - 413508



Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Borgaon (Kale) Tq. & Dist. Ltaur's

Vasantrao Kale Mahavidyalaya, Dhoki,

Tq. & Dist. Osmanabad. (M.S.) - 413508



Special Issue published by

B.Aadhar

Multi Disciplinary
Research Journal

Peer Review and Indexed Journal
Impact Factor - **7.675**

Web Site www.aadharsocial.com

Co-Executive Editor
Mr. Virag Gawande

One Day International Conference on
**'The History of Pandemic like Covid-19 & its Impact
on
Socio-Economic & Political Sectors in the World'**

20 October 2020.



Organized by

K.S.P.M.'S

Vasantrao Kale Mahavidyalaya, Dhoki,

Tq. & Dist. Osmanabad

(Department of History)

&

Akhil Maharashtra Itihas Parishad, Pune

Editor

Dr. N.P. Manale

(Convener)

Chief Editor

Dr. Satish Kadam

(President, AMIP)

Executive Editor

Dr. Haridas Fere

(Principal)



83	कोरोनाचा ग्रामीण जीवनावरील परिणाम एक अभ्यास	प्रा. संतोष सोमनाथ कपाळे	320
84	कोविड-१९व ग्रामीण भागातील किशोरवयीन मुलींचे शिक्षण	श्रीमती सुनिता माधवराव बिराजदार	322
85	कोरोना विषाणु आणि त्याचे मानवी जिवनावरील परिणाम	डॉ. सुधाकर जाधव	327
86	जागतिक महामारीच्या आगोदरचे सामाजिक बदल	प्रा कुकडे बी. जे.	330
87	कोरोना आज आणि उद्या	डॉ. लक्ष्मण गित्ते	333
88	साथीचा इतिहास : कोविड-१९	श्री. डी. एम. शिंदे	336
89	भारतातील ग्रामीण आणि शहरी जीवनावर साथरोग (कोविड - 19) चा परिणाम	शेख जब्बार खलील.	339

साथीचा इतिहास : कोविड -१९

श्री. डी. एम. शिंदे

समाजशास्त्र विभाग, आर.पी. कॉलेज, उस्मानाबाद

प्रस्तावना:—

मानवी समुदायाचा इतिहास अभ्यासल्यानंतर असे लक्षात येते की, मानवी समूहाच्या विकासात अनेक प्रकारच्या अडचणी व अडथळे येऊन गेलेले आहेत. अनेक अडचणी किंवा समस्या निर्माण झाल्या तरी त्यावर मात करून आपली वाटचाल यशस्वीरित्या चालू ठेवण्यामध्ये मानव प्राणी यशस्वी झालेला आहे. आपल्या बुद्धीमत्तेच्या जोरावर जगभरातील मानवाने विविध प्रकारचे शोध लावले. या शोधांच्या साहाय्याने आपल्या विकासातील अडथळे पार करून तो आपली वाटचाल यशस्वीपणे पार पाडीत आला आहे.

Pandemic या शब्दाचा मराठीमध्ये अर्थ पाहिला असता जागतिक स्वरूपाची महामारी असा होतो. ज्या महामारीमुळे जागतिक पातळीवरील मानवी जीवन प्रभावित होते. सर्वसामान्य व्यक्तींच्या मृत्यूचे प्रमाण प्रचंड प्रमाणात वाढते. संस्कृती किंवा सांस्कृतिक मूल्ये न्हास पावतात. जागतिक अर्थव्यवस्था विस्कळीत होऊन प्रत्येक देशाच्या आर्थिक विकासामध्ये अडथळे निर्माण होतात. सत्तेवर असणाऱ्या सरकारला निर्माण झालेल्या महामारीवर मात करण्यामध्ये अनेक अडचणी निर्माण होतात. जागतिक समुदाय प्रचंड अडचणीत सापडलेला असतो. निर्माण झालेल्या महामारीवर मात करण्यासाठी सर्व यंत्रणा कामाला लागते. संशोधक आपल्या संशोधन कार्यात गुंतलेले असतात. डॉक्टर, नर्सस, स्वच्छता कर्मचारी, आरोग्य यंत्रणा, पोलीस आणि प्रशासकीय यंत्रणेवर प्रचंड ताण निर्माण झालेला असतो. सर्व यंत्रणा निर्माण झालेल्या महामारीवर मात करण्यासाठी कामाला लागलेली असते.

जगाचा इतिहास पाहिला असता आजअखेर अनेक महामाऱ्या येऊन गेलेल्या आहेत. त्यावर मात करण्यामध्ये मानव यशस्वी झालेला आहे. जागतिक समुदायाला प्रभावित करणाऱ्या व दैनंदिन जीवन विस्कळीत करणाऱ्या महामाऱ्या म्हणून चार प्रकारच्या महामाऱ्यांचा उल्लेख केला जातो. यामध्ये पहिल्या प्रकारची महामारी ही प्लेगची महामारी म्हणून ओळखली जाते. इ.स. १७२० ते १७२३ या तीन वर्षांच्या कालखंडात प्रचंड प्रमाणात मानवी समुदाय अडचणीत सापडलेला होता. या आजाराने सर्व जग प्रभावीत झालेले होते. लाखो लोक यामुळे मृत्यूमुखी पडले होते तर कोटयावधी लोकांचे जिवन विस्कळीत झालेले होते. दुसऱ्या प्रकारची महामारी म्हणून कॉलरा या आजाराचा उल्लेख केला जातो. या आजाराची सुरुवात प.बंगाल मधील कोलकत्ता या शहरापासून झालेली होती. पुढे हा आजार संपूर्ण आशिया खंडात पसरला याचा कालखंड इ.स. १८१७ ते १८२४ असा होता. आशिया खंडाव्यतिरिक्त आफ्रीका खंडात देखील याचा शिरकाव झालेला होता. जगभरातील लाखो लोक या आजाराने मृत्यूमुखी पडलेले होते तर कोटयावधी लोकांचे जिवन विस्कळीत झालेले होते. तिसऱ्या प्रकारची महामारी म्हणून फ्ल्यू किंवा स्वाईन फ्ल्यू आजाराचा उल्लेख केला जातो. याचा कालखंड इ.स. १९१८ ते १९२० असा होता. या आजार देखील जागतिक महामारी म्हणून ओळखला जातो. कारण सर्व जग या आजाराने प्रभावीत झाले होते. ५० कोटी लोक या आजाराने ग्रासले होते तर कोटयावधी व्यक्तींचा मृत्यू या आजाराने झालेला होता. मृत्यूचे तांडव सर्वत्र माजलेले होते. सर्व जागतिक समुदाय या कालावधीत हैराण झालेला होता.

अशाच स्वरूपाची याच श्रेणीतील जागतिक स्वरूपाची चौथ्या प्रकारची महामारी म्हणून कोवीड (Covid-19) या आजाराचा उल्लेख W.H.O. ने जागतिक महामारीच्या स्वरूपात केलेला आहे. कारण सर्व जग या (Covid-19) ने प्रभावीत झाले असून जागतिक अर्थव्यवस्था धोक्यात आली आहे. या आजाराचा प्रभाव वरचेवर वाढत चालला असून जगभरातील सर्व देश व मानवी समुदाय अडचणीत आलेला आहे. अमेरिका, फ्रान्स, इटली, जर्मनी, चीन यासारख्या विकसित देशाबरोबरच भारतासारखे अनेक विकसनशील देश व अविकसित व मागासलेले देश या महामारीच्या संकटामुळे अडचणीत आलेले आहेत. कोटयावधी लोक या आजाराचा आज सामना करीत आहेत. तर जगभरातील लाखो लोक मृत्यूमुखी पडलेले आहेत. जागतिक पातळीवरील अनेक देश या आजारावर मात करण्यासाठी प्रयत्न करित आहेत. परंतु आजपर्यंत कोणतेच प्रभावी औषध किंवा लस शोधण्यामध्ये कोणालाही यश प्राप्त झालेले नाही. आपापल्या देशातील जनतेचे प्राण वाचविण्यासाठी जगभरातील सर्व देश आपापल्या पध्दतीने प्रयत्न करीत आहेत. परंतु १००% यश कोणालाच प्राप्त झालेले नाही. त्यामुळे Covid-19 ने जगाची चिंता वाढवली आहे.

Covid-19 या महामारीचा जन्म ०१ डिसेंबर २०१९ रोजी 'चीन' या देशातील 'हूवान' या शहरात झाला. कोरोना किंवा (Covid-19) या आजाराने बाधित पहिला रूग्ण चीनमधील हूवान शहरात सापडला. एका पासून दुसऱ्यास, दुसऱ्यापासून तिसऱ्यास या प्रमाणे मानवी संपर्काने हा आजार चीनमध्ये वाढत गेला व बघता— बघता



सर्व चीन देश Covid-19 ने ग्रासला गेला. त्यानंतर चिनी लोकांच्या संपर्काने हा आजार आज जगभरात पसरलेला आढळतो. चीन नंतर इटली, ब्राझील, स्पेन, जर्मनी, ब्रिटन, अमेरिका यासारख्या बलाढ्य राष्ट्रात हा आजार वाढत गेलेला आढळतो.

आपल्या भारत देशाचा विचार केला असता भारतामध्ये Covid-19 या आजाराचा प्रवेश थोड्या उशिरा म्हणजे ३० जानेवारी २०२० ला झाला. भारतामध्ये Covid-19 चा पहिला रूग्ण केरळ या राज्यात आढळला तर दुसरा रूग्ण कर्नाटक राज्यात दिसून आला. जगाला प्रभावीत करणारा आजार चंचू प्रवेशाने का असेना भारतामध्ये दाखल झाला. लगेच देश पातळीवरील आरोग्य यंत्रणा कामाला लागली. सर्व ती खबरदारी घेऊन आंतरराष्ट्रीय विमान सेवा बंद करून याला रोखण्यासाठी केंद्र सरकार व राज्य सरकारे कामाला लागली. आपण आपल्या महाराष्ट्र राज्याचा विचार केला असता Covid-19 चा पहिला रूग्ण महाराष्ट्रात सांस्कृतिक राजधानी म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या पुणे शहरात ०९ मार्च २०२० ला आढळून आला. बघता-बघता हा आजार महाराष्ट्राची राजधानी व देशाची आर्थिक राजधानी असणाऱ्या मुंबई शहरात दाखल झाला. आज या आजाराने संपूर्ण महाराष्ट्राला आपल्या प्रभावाखाली घेतले आहे. देशातील सर्वाधिक Covid-19चे रूग्ण असलेले राज्य म्हणून महाराष्ट्र ओळखला जात आहे.

लोकसंख्येच्या बाबतीत आघाडीवर असणाऱ्या आपल्या भारत देशामध्ये या आजाराला प्रतिबंध करण्यासाठी केंद्र सरकार व राज्य सरकारे शर्थांचे प्रयत्न करित आहेत. देशातील गर्दीची ठिकाणे, धार्मिक मंदिरे, शाळा, महाविद्यालये, सिनेमागृहे, शासकीय कार्यालये, बससेवा, रेल्वेसेवा, मेट्रोसेवा, लोकल सेवा बंद करणेत आलेल्या आहेत. पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी Lock Down ची देशपातळीवर सुरुवात केली असून सर्व देश लॉकडाऊनमुळे थांबला आहे. आर्थिक विकासामध्ये अडथळे निर्माण झालेले असून सर्व उद्योगधंदे व यंत्रणा ठप्प झाली आहे.

Lock Down भाग-०१ ची सुरुवात देश पातळीवर २५ मार्च पासून झाली. २५ मार्च २०२० पासून ते २४ एप्रिल २०२० पर्यंत देशभरात कर्फ्यूसमान परिस्थिती निर्माण झाली. Covid-19 या आजाराची साखळी तोडण्यासाठी सर्व देशाने याला उत्स्फूर्त प्रतिसाद दिला परंतु रूग्णसंख्या वाढतच गेली. त्यामुळे पुन्हा १५ एप्रिल २०२० ते ०३ मे २०२० पर्यंत दुसरा लॉकडाऊन देशाने पाठला. रूग्णसंख्या आटोक्यात आणण्यासाठी शर्थांचे प्रयत्न करण्यात आले. जनजागृतीच्या माध्यमातून लोकामध्ये या आजाराची गंभीरता व घ्यावयाची काळजी या बाबतीत मोठ्या प्रमाणावर उपाययोजना राबविणेत आल्या. तरी परंतु रूग्णसंख्या वाढत गेल्याने पुन्हा लॉकडाऊन भाग ०३ पुकारणेत आला. याचा कालावधी ०४ मे २०२० ते १७ मे २०२० असा होता. लॉकडाऊनच्या कालावधीत देशभरातील जनतेचे प्रचंड हाल झाले. मजुरांचे स्थलांतर सुरू झाले. माणसांचे लोंढे पायी चालत आपापले गाव गाठण्यासाठी बाहेर पडले. सर्व यंत्रणेवर प्रचंड प्रमाणात ताण निर्माण झाला. मार्चपासून ते मेपर्यंत लॉकडाऊन असल्याने सर्व सामान्य जनतेला अनंत अडचणींचा सामना करावा लागला. जनतेच्या रोषाला सामोरे जावू लागू नये किंवा जनतेच्या रोषाचा अंत पाहू नये म्हणून केंद्रीय पातळीवरून अनलॉकची प्रक्रिया सुरू करणेत आली. हळू-हळू सर्व परिस्थिती पूर्व पदावर आणण्यासाठी केंद्र सरकार व राज्य सरकारे कामाला लागली. परंतु सर्व प्रयत्न आज निष्फळ ठरत असलेले दिसून येतात. कारण सर्व ती उपाययोजना करून व खबरदारी घेऊन देखील Covid-19 चा प्रादुर्भाव व प्रसार मोठ्या प्रमाणात वाढत चालला आहे.

जगभरामध्ये आज Covid-19 या आजाराचा सामना करणाऱ्या लोकांची संख्या कोटयावधी झालेली आहे. जगातील सर्व देश Covid-19 चा सामना करित आहेत. परंतु या आजाराचा विळखा वाढत चाललेला आहे. अनेक देशातील लाखो लोकांचा मृत्यू या आजाराने झालेला आहे. सर्व वयोगटातील स्त्री-पुरूषांवर या आजाराचा प्रभाव सर्वत्र वाढत चालला आहे. भारताचा विचार केला असता आज आपल्या देशात ५० लाखापेक्षा जास्त व्यक्ती या आजाराने ग्रासलेल्या आहेत. दररोज ९० ते ९५ हजार नविन रूग्णांची भर पडत असल्याने प्रभावीतांची संख्या वाढत चाललेली आहे. आजअखेर देशात ८२०६६ व्यक्तींचा मृत्यू ओढवलेला आहे. समाधानाची बाब म्हणजे या आजारातून बरे होणाऱ्या व्यक्तींचे प्रमाण वाढत चाललेले आहे. परंतु प्रभाव मात्र कायम आहे.

देशपातळीवर सर्वाधिक रूग्ण असणारे राज्य म्हणून महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश व तामीळनाडू या राज्यांचा उल्लेख केला जातो. एकूण रूग्णांपैकी ६०% रूग्ण या राज्यातील आहेत.

देशपातळीवरील Covid-19 ने प्रभावीत असणाऱ्या राज्यामध्ये महाराष्ट्र राज्य प्रथम स्थानावर आहे. महाराष्ट्रामध्ये रूग्णांचा आकडा १०,००,००० च्या वर जाऊन पोहोचला आहे. महाराष्ट्रातील सर्व जिल्हा, तालुका व गावपातळीवर रूग्णांची संख्या प्रचंड प्रमाणात वाढत चाललेली आहे. आजअखेर महाराष्ट्रात ३०४०९ इतके मृत्यू झालेले आहेत.



थोडक्यात Covid-19 या महामारीने सर्व जगाची व देशाची झोप उडवली आहे. जोपर्यंत लस उपलब्ध होत नाही तोपर्यंत स्वतःची व आपल्या कुटुंबियांची काळणी घेणे व या आजारापासून बचाव करणे एवढी एकच गोष्ट आपल्या हातात आहे.

संदर्भ :-

१. Google
२. Youtube
३. आरोग्य सेतू ॲप
४. वर्तमानपत्रे



FORMULATION AND EVALUTION POLYHERBAL FACIAL CREAM

Swati Siddheshwar Londhe*
Mangesh Gautam Bhosale**
Amol. Arun Joshi***
Geeta Sapkale****

ABSTRACT

The aim of present study was to formulation and development of whitening polyherbal face cream comprising extracts of *Curcuma longa*, *Phyllanthus emblica*, *vitis vinifera*, *cucumis sativus*, *Rubia cordifolia*, *Aloe berbadensis*, *santalum album*, *crocus sativus*, *Azadichirata indica* and Almond oil for, Different types of formulations oil in water (O/W) base namely F1 to F4 were formulated by incorporating different concentrations of stearic acid and cetyl alcohol. The evaluation of all prepared base (F1 to F4) were done on different parameters like pH, viscosity, spreadibility, and stability were examined. The base F2 was found appropriate for the preparation of cream. The extracts were incorporated in base F2 for the preparation of polyherbal face cream. The polyherbal face cream showed good spreadibility, good consistency, homogeneity, appearance, pH, and ease of removal and no evidence of phase separation. From the result it can be concluded that the polyherbal face cream providing prevention of skin lashing effect and it is safe to use.

Keywords: *Curcuma longa*, *Phyllanthus emblica*, *vitis vinifera*, *cucumis sativus*, *Rubia cordifolia*, *Aloe berbadensis*, *santalum album*, *crocus sativus*, *Azadichirata indica* and Almond oil and herbal face cream

INTRODUCTION

Cosmetic products most commonly used for improve and enhance skin or used on for face and body skin. These cosmetics are generally combination of chemicals containing compounds obtained from raw materials (such as coconut oil), or may be synthetic or artificial.[1] Cosmetics products are created for application on skin for the purpose of washing, prettify or convert emergence and increasing the charm. Cosmetics are expand to decrease age lines , acne and for controlling oil secretion. Aberrant kinds

of skin conditions formulations like, sunscreen gel, anti-acne, anti-wrinkle and anti-aging are originated by using varieties of materials, either real or artificial. The enlargement process for cosmetic have varieties of properties like antioxidant, anti-inflammatory, antiseptic, emollient, anti seborrathic, anti kerolytic activity and antibacterial etc. Short time ago, lots of Asian ladies enterprising for a glowing skin colour has enhanced desperately. This happened because discovery of lots of potent skin lightening agents, which are obtained from plant sources. The skin colour is mainly determined by

*Assistant Professor, K.T Patil College of Pharmacy, Osmanabad, Maharashtra

**Assistant Professor Ramakrishna Paramhansa College, Osmanabad, Maharashtra

***Principal, K.T Patil College of Pharmacy Osmanabad, Maharashtra

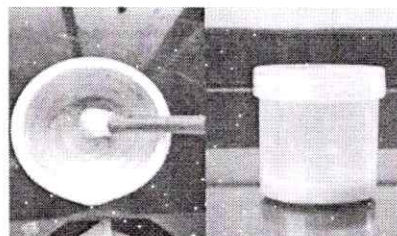
****Assistant Professor of K.T Patil college of Pharmacy Osmanabad

the content of an epidermal pigment called melanin. It can be released by melanocyte cells in the elemental surface of epidermis. Melanin can be increased because of sunlight, melasma free radicals, UVA and UVB rays. The lavish melanin production is not advisable because it can give a black or unequal skin colour. Changes in colour is also desired for cosmetic reasons. The primary procedure of melanin production (melanogenesis) can be controlled by one enzyme name is tyrosinase, which catalyzes tyrosine enzyme hydroxylation, precursor of melanin, into dihydroxyphenylalanine and different intermediates. Thus, reticence of tyrosinase enzyme activity either its production can prevent melanogenesis, and reducing the uneven skin colour. Hence the plants produces strong anti-tyrosinase activity is used for skin lightening agent in cosmetic preparations¹⁻³. The herbal products claim to have no side effects, commonly seen with products containing synthetic agents. Pleasantness, of herbal formulations has culturally besides methodologically resulted in immerse of market place in India⁴. So we planned to choose such type of plants which are establish to inactivate anti-tyrosinase enzyme activity for preparation of polyherbal cream. The plants used in cosmetic formulation have heterogeneity of property like anti-tyrosinase, antioxidant, antiseptic, anti-inflammatory and anti-septic etc. As per this concern we select following plants *Curcuma longa*, *Phyllanthus emblica*, *Vitis vinifera*, *Cucumis sativus*, *Rubia cordifolia*, *Aloe barbadensis*, *Santalum album*, *Crocus sativus*, *Azadirachta indica* and last are Almond oil for the formulation of herbal cosmetic. *Curcuma longa* rhizomes are evaluate as a nominal anti-inflammatory agent, with superior radical rummage and supermolecule peroxidation inhibition effectuality compared with antioxidant. The Tetrahydrocurcuminoids curcumin and present in *Curcuma longa* effectively delay down the tyrosinase enzyme

activity. The parent compound Curcumin is powerful inhibitor of protein kinase C, EGF-receptor tyrosine kinase and I κ B kinase. Moreover *C. longa* is reported an effective skin lightening agent with multifunctional topical benefits, without irritant and sensitization side effects⁵. The vitamin C and antioxidants in gooseberry (Amla), help to lighten brighten your skin. Amla is also helps to tone and strengthen skin and gives firm and soft skin. ⁶ grapes are a powerhouse of antioxidants – they contain a broad range of phytonutrients right from carotenoids to polyphenols. It is establish that resveratrol prevents wrinkles, rejuvenation and renewal of youth. And different skin complications. According to a study conducted by the team at the University of California, Los Angeles (UCLA), resveratrol, when combined with a common acne medication benzoyl peroxide, fights the acne causing bacteria.⁷ cucumbers have the capacity to decrease puffiness and swelling of skin. It is especially helpful if you've low sleep and you have dark circles below your eyes, puffy eyes. Cucumber juice or Chilled cucumber slices can help to reduce puffiness while simultaneously it also reduces waking up, tired-looking skin. Dead skin cells and Oily skin contains clog pores and lots of acne breakouts. Cucumbers most commonly used as mild astringent. It helps for reduce size of pores and purify the skin and. It also reduces breakouts. Compatible with 2011 study Trusted Source, the antioxidants present in cucumbers which powerfully helpful as an anti-wrinkle activity. Moreover, cucumbers accommodate both folic acid and vitamin C. Vitamin C possess the capability to vitalize new cell growth, span folic acid may help in fight against environmental pollution which may gives result like tired skin looking also premature ageing. When combined these components which may help to skin look firmer, soft smooth and healthier. Anti-inflammatory and therefore the cooling result of cucumbers could facilitate to cut

back pain, redness, and irritation caused thanks to sunburns, insect bites, and rashes. Cucumber contains ninety six.5 % water. solely water alone isn't decent to wash your skin, the cucumber juice will simply mixed with honey that could be a moisturizing agent or burn plant to produce association to your skin and conjointly offers soothing result to your skin. It conjointly supports in skin health, Helps to cut back the uneven skin tone, pigments and improves skin complexion, conjointly it offers deep detoxification and blood purification while not minimum adverse result conjointly it helps in neutralizing free The arishth ar according to possess extremely medicine property, thus it's needed to cut back the microbic growth once skin become humectants.10 burn plant gel will assist you modify that. It helps for skin to storing its wet and provides radiance to skin. It conjointly reduces the recognizable wrinkles and age lines on face, it conjointly repairs skin cells, it prevents premature ageing of skin conjointly it improves the snap of skin11. use of the medication wood powder helps in fighting acne-causing microorganism, exfoliates the skin, soothes sunburn, removes suntan and together reduces signs of ageing like dry skin and wrinkles..12 Saffron edges skin as a result of it contains several vitamins and antioxidants that ar

useful to the skin. it's medicine and soothes skin. it's antifungal and might be wont to treat skin condition. If you utilize saffron for skin, certify you get the very best quality of saffron13.



Cream Formulation: Oil in water (O/W) emulsion based mostly cream (semisolid formulation) was developed. The wetter (stearic acid) and alternative oil soluble elements (Cetyl alcohol, almond oil) were dissolved within the oil section (Part A) and heated to 75° C. The preservatives and alternative water soluble comp elements (Methyl paraban, propyl radical paraban, Triethanolamine, antifreeze, plant product extract of *Curcuma domestica*, *Phyllantus emblica*, *Vitis vinifera*, *cucumis sativus*, *munjeet*, *succulent berbadensis*, *Santalum album*, *crocus sativus*, *Azadichirata indica* were dissolved within the binary compound section (Part B) and heated to 75° C. once heating, the binary compound section was additional in parts oil section with continuous stirring till cooling of wetter happened. The formula for the cream is given in table One.

Table 1: Ingredients used in formulation of Polyherbal Cream

Sr.No.	Ingredient	Quantity given
1	Ethanol extract of <i>Aloe Vera</i>	1
2	Ethanol extract of <i>Phyllantus emblica</i>	0.8
3	Ethanol extract of <i>Curcuma longa</i>	0.85
4	Ethanol extract of <i>vitis vinifera</i>	0.75
5	Ethanol extract of <i>cucumis sativus</i>	1
6	Ethanol extract of <i>santalum album</i>	0.9
7	Ethanol extract of <i>Rubia cordifolia</i>	0.5
8	Ethanol extract of <i>crocus sativus</i>	0.8
9	Ethanol extract of <i>Azadichirata indica</i>	0.75
10	Arbutin	8
11	Niacin amide	10
12	Stearic acid	12
13	Cetyl alcohol	2
14	Almond oil	4

15	Glycerol	3
16	Methyl paraban	0.02
17	Triethanolamine	qs
18	Water	qs

EVALUTION TESTS-

pH of the Cream- The pH scale meter was graduated mistreatment customary solution. About 0.5 g of the cream was weighed and

Dissolved in fifty.0 millilitre of water and its pH scale were measured.

Table 2: pH scale of cream base

Formulation	pH
F1	6.7
F2	6.5
F3	6.8
F4	6.4

Viscosity- viscousness of the formulation determined by Brookfield measuring instrument at one hundred rev, mistreatment spindle no seven.

Dye test- The cherry-red dye is mixed with the cream. Place a drop of the cream on a microscopic slide covers it with a canopy slip, and examines it below a magnifier. If the disperse globules seem red the bottom colourless. The cream is o/w kind. The reverse condition happens in w/o kind cream i.e. the disperse globules seem colourless within the red ground.

Homogeneity- The formulations were tested for the homogeneity by visual look and by bit.

Appearance- the looks of the cream was judged by its color, pearlscence and roughness and hierarchic.

once feel- Emolliency, slipperiness and quantity of residue left once the applying of mounted quantity of cream was checked.

style of smear- once application of cream, the kind of film or smear fashioned on the skin were checked.

Removal- the convenience of removal of the cream applied was examined by laundry the applied dispense with water.

Acid value- Take ten metric weight unit of substance dissolved in accurately weighed, in fifty millilitre mixture of equal volume of alcohol and solvent ether, the flask was connected to condenser and slowly heated, till sample was dissolved fully, to the present one millilitre of acid-base indicator additional and titrated with zero.1N NaOH, till faintly pink color seems once shaking for thirty seconds.

$$\text{Acid value} = n * 5.61 / w$$

n = the quantity of millilitre of NaOH needed.

w = the burden of substance.

Saponification value:

Initiate regarding a pair of.0 metric weight unit of substance refluxed with twenty five.0 ml of 0.50 N alcoholic KOH for half-hour, to this 1.0 millilitre of acid-base indicator additional and titrated straight off, with 0.5 N HCL.

$$\text{Saponification worth} = (b-a) * 28.05 / w$$

volume in millilitre of titrant = a

volume in millilitre of titrand = b

weight of substance in metric weight unit = w

Irritancy test:

Spot a section (1sq.cm) on the mitt dorsal surface. The cream was applied to the affected space and time was noted. Irritancy, erythema, edema, was checked if any for normal intervals up to twenty four hrs and represented.

Accelerated stability testing:

In these ready formulations was regulated for two most stable formulations at temperature, studied for seven days. They were preparation

range four and five at forty oC ± one oC for twenty days. The preparations were unbroken each at space and elevated temperature and discovered on 0th, 5th, 10th, fifteenth and twentieth day for the subsequent parameters 12-18.

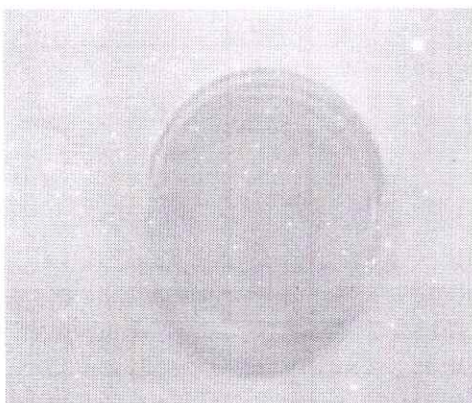


Fig: Photograph showing microbial count

Microbial Examination of Cream

1g of fabric was weighed and sterile transferred into the cone like flask containing 50ml of dil. phosphate buffer at pH scale seven.2 and measuring system out 1ml portion into three sterile plates. liquefied soybean casein digest agar (SCDA) medium was poured over it (at 45°C) and cooled. afterward plates were revolved to combine properly. Then the plates were incubated at 30± 40°C for seventy four hrs in associate degree inverted portion. Average range of colonies determined by multiplying the dilution issue.

RESULTS

pH of the Cream

The pH scale of the cream base was found to be in vary of 6-7 that is nice for skin pH scale. All the preparations of cream base were shown pH scale nearer to skin needed (Table 2)

Viscosity

The body of was cream was within the vary of 27020-27054 rate that indicates spreadibility of cream. In our study F2, F3 and F4 represented simply spreadable by little amounts

of shear, while F1, F3 and F4 were not simply spreadable on skin. however F2 shows smart spreadable property than alternative formulations.

Acid value and reaction value

The results of worth|definite quantity| and reaction value of all preparation of cream base were bestowed in table three, and showed satisfactorily values.

Irritancy test

The formulation F3 shows no redness, edema, Inflammation and irritation throughout irritancy studies. These preparations square measure safe to use for skin (Table 4).

Dye test

This dye proves that each one formulations were o/w sort emulsion cream. however preparation (F3) shows additional stable in o/w sort emulsion. therefore here we tend to choose F3 cream base for any study.

Table 3: Test applied for acid value and saponification value

Parameter	Formula			
	F1	F2	F3	F4
Acid value	6.2	5.1	6.5	5.8
Saponification value	27.2	26.4	25.9	24.4

Table 4: Type of adverse effect of formulations

Formulation	Irritant	Erythema	Edema
F1	NIL	NIL	NIL
F2	NIL	NIL	NIL
F3	NIL	NIL	NIL
F4	NIL	NIL	NIL

Homogeneity

All formulations turn out constant distribution of extracts in cream. This was confirmed by visually and by bit (Table 5).

Appearance

When formulation were unbroken for very long time, it found that no amendment in color of cream (Table 5).

When feel

Softness, slipperiness and quantity of residue left when the appliance of fastened quantity of cream was found (Table 5).

Style of smear

Behind application of cream, the sort of smear fashioned on the skin were non greasy (Table 5).

Removal

The cream applied on affected space was simply removed by laundry with water (Table 5).

Cream

From higher than study, the F3 base was elect for the formulation of seasoning cream, and also the composition of cream has illustrated on table half-dozen. The physical analysis and stability of Polyherbal cream has shown in table seven, and results were considerable and admittible.

DISCUSSION

Melanin is that the primary determinant of human skin color. Regular use of seasoning vanishing cream will scale back the assembly of animal pigment. The principle constituents gift in Arbutin, Curcuma longa, Phyllanthus emblica and munjeet have potent anti-tyrosinase and inhibitor activity, and play synergistic action on reduction of animal pigment production. Niacinamide possesses anti-aging and rejuvenating effects. It additionally fades age spots, lightens and whitens the skin owing to its ability to treat hyper pigmentation. The medicament property of Azadichirata indica produces protection from microorganism infection. The vitamin E gift in expressed almond oil and its inhibitor property shield the skin from premature ageing. For improvement of seasoning cream of change of color impact in skin ought to be hydrous and guarded from environmental injury. Here we tend to assure that the seasoning vanishing cream will turn out wonderful change of color impact on skin because of synergistic anti-tyrosinase, inhibitor, medication and medicament properties of the ingredients.

Table 5: Physical parameter of F2 cream base on room and accelerated temperature

Days	Temperature	Parameter						
		pH	X1	X2	X3	X4	X5	X6
0	RT	6.3	**	NCC	**	E	NG	ES
	40 °C + 1 °C	6.6	**	NCC	**	E	NG	ES
5	RT	6.9	**	NCC	**	E	NG	ES
	40 °C + 1 °C	6.5	**	NCC	**	E	NG	ES
10	RT	6.7	**	NCC	**	E	NG	ES
	40 °C + 1 °C	6.2	**	NCC	**	E	NG	ES
15	RT	6.9	**	NCC	**	E	NG	ES
	40 °C + 1 °C	6.1	**	NCC	**	E	NG	ES
20	RT	6.2	**	NCC	**	E	NG	ES
	40 °C + 1 °C	6.2	**	NCC	**	E	NG	ES

X1-Homogeneity, X2-Appearance, X3-Spreadability, X4-After feel, X5-Type of smear, X6-Removal, **: Good, *: Satisfactory, E: Emollient, NG: Non greasy, ES: Easy, NCC: Not amendment in colour+

Table 6: Composition of Polyherbal cream

Ingredients	Formulation (% w/w)
Ethanol extract of <i>Aloe vera</i>	0.75
Ethanol extract of <i>Phyllanthus emblica</i>	0.8
Ethanol extract of <i>Curcuma longa</i>	0.85
Ethanol extract of <i>vitis vinifera</i>	0.75
Ethanol extract of <i>cucumis sativus</i>	1
Ethanol extract of <i>santalum album</i>	0.9
Ethanol extract of <i>Rubia cordifolia</i>	0.5
Ethanol extract of <i>crocus sativus</i>	0.8
Ethanol extract of <i>Azadirachta indica</i>	0.75
Arbutin	8
Niacinamide	10
Stearic acid	10
Cetyl alcohol	3
Almond oil	4
Glycerol	3
Methyl paraban	0.02
Triethanolamine	qs
Water	100

Table 7: Evaluation of herbal cream

Formulation	pH	Acid value	Saponification value	Adverse effect	Physical Parameter	
					Room Temperature	Accelerated Temperature
Herbal cream	6.5	5.1	26.4	NIL	Acceptable	Acceptable

CONCLUSION

Our study indicated that the bottom F2 found to be additional stable, whereas remaining

base weren't stable and resulted in breakdown of the emulsion once hold on for very long time. in order that base F2 was acceptable for development of polyherbal cream, thus we tend

to ready Polyherbal cream by intermixture all the extract during this base. The pH of developed cream was nearer skin pH, and

Efficacious. Once the applying. The Polyherbal cream was safe in relation to skin irritation and allergic sensitization. The finding report cream produces homogenized, emollient, non-greasy and simply removed properties complexion, and creating it soft and sleek. The study suggests that seasoning emollient is additional stable, safe and illustrated that Polyherbal emollient is effective in change of color the skin.

ACKNOWLEDGEMENTS

The authors acknowledge to Director of K.T Patil College of Pharmacy, Osmanabad, India, for providing all the facilities and successfully completion of work.

REFERENCES

- Schneider, Günther et al (2005). "Skin Cosmetics" in Ullmann's Encyclopedia of Industrial Chemistry, Wiley-VCH, Weinheim. doi:10.1002/14356007.a24_219
- Wang KH, Lin RD, Hsu FL, Huang YH, Chang HC, Huangd CY, Lee MH. Cosmetic applications of selected traditional Chinese herbal medicines. *Journal of Ethno pharmacology*. 2006; 106: 353–359.
- Tengamnuay P, Pengrungruangwong K, Pheansri I, Likhitwitayawuid K. Artocarpus lakoocha heartwood extract as a novel cosmetic ingredient: evaluation of the in vitro anti-tyrosinase and in vivo skin whitening activities. *International Journal of Cosmetic Science*. 2006; 28: 269–276.
- Seiberg M, Paine C, Sharlow E, Gordon PA, Costanzo M, Eisinger M, Shapiro SS. Inhibition of melanosome transfer result in skin lightening agent. *The Journal of Investigative Dermatology*. 2000; 115(2): 162-167.
- Ashawat MS, Banchhor M, Saraf S, Saraf S. Herbal Cosmetics: "Trends in Skin Care Formulation". *Phcog Rev*. 2009; 3(5): 82-89.
- Chattopadhyay I, Biswas K, Bandyopadhyay U, Banerjee RK. Turmeric and curcumin: Biological actions and medicinal applications. *Current Science*. 2004; 87(1): 44-53.
- <https://www.bollywoodshaadis.com/articles/beautiful-and-amazing-reasons-to-add-amlato-your-grocery-list-right-now-3219>
- <https://food.ndtv.com/food-drinks/benefits-of-grapes-from-being-a-powerful-antioxidant-to-preventing-signs-of-ageing-1223636>
- <https://www.healthline.com/health/beauty-skin-care/cucumber-face-mask>
- <https://www.nykaa.com/morpheme-remedies-manjistha-rubia-cordifolia-for-skin-health-500mg-extract/p/25000>
- Biswas K, Chattopadhyay I, Banerjee RK, Bandyopadhyay U. Biological activities and medicinal properties of neem (*Azadirachta indica*). *Current Science*. 2002; 82(11): 1336-1345.
- <https://www.bebeautiful.in/all-things-skin/everyday/benefits-and-use-of-aloe-vera-gel-for-face>
- <https://www.bebeautiful.in/all-things-skin/everyday/why-sandalwood-good-your-skin>
- <https://www.rewardme.in/beauty/skin-and-body/5-amazing-beauty-benefits-of-saffron>



ISSN 2349-6385
Impact Factor 6.293

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY
RESEARCH JOURNAL

PEER REVIEW & INDEXED JOURNAL

Email id : aiirjpramod@gmail.com

www.aiirjournal.com

SPECIAL ISSUE No. 65

Executive Editor

Dr. S.M. Maner

Principal

Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Co-Editor

Prof.G.V.Baviskar

Head, Dept. of History

Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Co-Editor

Dr. B.V.Gund

Head, Dept. of Pol.Sci.

Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Co-Editor

Prof. B.J.Kukde

Head, Dept. of Sociology

Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M.

Chief Editor

Prof. Pramod Tandale

No	Author Name	Title of Article	Page No.
65	श्री बालाजी पांडुरंग शिनगारे	सामाजिक न्याय	189
66	प्रा. अशोक ज्ञानोबा दुनघव	भारतीय परराष्ट्र धोरणाच्या उदिष्टांचा चिकीत्सक अभ्यास	194
67	प्रा. संजय तुकाराम निचिते	भारतातील महिला सक्षमीकरणातील अडथळे आणि उपाययोजना : एक चिकित्सक शोध	196
68	प्रा. रजना प्रल्हादराव शहाणे	महिलांचा राजकीय सहभाग	199
69	आकाश शेषराव बांगर	पंचायतराज व्यवस्था आणि महिला आरक्षण धोरणाचा चिकित्सक अभ्यास	203
70	प्रा. आबासाहेब बत्रुवान गायकवाड	पर्यावरण विकास आणि निवडणुक जाहिरनामा	205
71	प्रा. डॉ. अंबादास बिराजदार	भारतातील धार्मिक अस्मितेचे राजकारण	208
72	प्रा. डॉ. बी. डब्ल्यू. गुंड	भारतीय राजकारणातील विचारधारांचा संघर्ष	210
73	प्रा. एम. के. ढगे डॉ. प्रा. महेशकुमार मोटे	महिलांचा राजकीय सहभाग	212
74	डॉ. वि. डी आचार्य	भारतीय संघराज्यव्यवस्था : एक अभ्यास	216
75	प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर आवाळे	भारतीय स्वातंत्र्य प्राप्तीनंतर राजकारणातील महिलांचे योगदान	219
76	Prof. Eknath Sitaram Nirmal	Issues in Indian Politics	221
77	संभाजी तांबे	महिलांचा राजकीय सहभाग	224
78	दिनकर सुदामराव रासवे	महिलांचा राजकारणातील सहभाग	227
79	डॉ. प्रशांत भाऊसाहेब सोळंके	भारताचे परराष्ट्र धोरण :- एक अध्ययन	229
80	प्रा. स्वाती प्रकाशराव बैनवाड	भारतीय स्त्रियांच्या राजकीय स्थितीचा अभ्यास	231
81	Dr. Namanand Gautam Sathe	Political Participation of Women in India	234
82	Dr. Ragini Rajendra Padhye	Role Of Women Empowerment In Development Of India	237
83	प्रा. मनोज उत्तमराव पाटील	आचार्य शिवाजीराव भोसले के अनुसार मुल्य और शिक्षा का संबंध	239

भारतीय स्त्रियांच्या राजकीय स्थितीचा अभ्यास

प्रा. स्वाती प्रकाशराव बैनवाड

(राज्यशास्त्र विभाग)

रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय, उस्मानाबाद.

1) सध्याची :-

भारतीय समाजव्यवस्थेत स्त्रियांची स्थिती काळानुरूप बदलत गेलेली आहे पूर्व वैदिक काळामध्ये स्त्रियांची स्थिती खूप खालखाल होती व त्यांना प्रतिष्ठा देखील प्राप्त होती परंतु कालांतराने त्यांच्या स्थितीत हळूहळू बदल होत गेला काळ बदलला तसे लोकरीतच अडकून पडली पुरुषांची दासी झाली. पूर्व वैदिक काळात शास्त्रार्थ पुरुषांना हरवणारी स्त्री कालांतराने केवळ घरातील भूतपुत्र बोडदीदार निवडण्याचे देखील स्वातंत्र्य होते पूर्व वैदिक कालखंडात स्त्रियांना संपूर्ण स्वातंत्र्य होते त्यात त्यांना स्वतःच्या लेखा त्यांना शिक्षणाचा व संध्या करण्याचा अधिकार होता पण नंतर उत्तर वैदिक कालखंडात मात्र बालविवाहाची पद्धत आली ज्यामुळे स्त्रियांची शिक्षणाची सोय बंद झाली व पतीला दैवत्व प्राप्त झाले ही स्थिती हळूहळू खालावतच गेली या पुढील काळात वैदिक आधार जाऊन त्याची जागा मनुस्मृतीने घेतली मनुस्मृतीनुसार " स्त्रिया कधीच स्वतंत्र राहण्याच्या योग्य नाहीत लहानपणी वडिलांच्या नियंत्रणात तरुणपणी पती तर म्हातारपणी पुत्रांच्या नियंत्रणात राहिली पाहिजे " व पुढे त्यांना संपत्तीच्या अधिकारातून देखील वंचित करण्यात आले.

मध्ययुगानंतरतर इस्लामिक राजवटीच्या स्थापनेनंतर हे नियम अधिकच कडक बनले पडदा पद्धत आली सती प्रथा आली. व बहुपत्नीत्व प्रतिष्ठेची बाब बनली तर स्त्रियांचे विवाह 5-8 वर्षातच लावले जाऊ लागले पुरुष प्रधान संस्कृती अजूनच बळकट झाली.

पूर्व वैदिक कालखंडातील तिचे प्रबळ स्थान मध्ययुगात दयनीय बनले तर आज आधुनिक कालखंडात तर ती स्वतःच्या अस्तित्वासाठी लढताना दिसून येते आहे सदर शोधनिबंधात भारतीय राजकारणातील स्त्रियांच्या स्थितीचा अभ्यास करण्याचा प्रयत्न करण्यात येणार आहे.

2) संशोधनाची उद्दिष्टे :-

- i) स्त्रियांची सध्याची राजकीय स्थिती अभ्यासणे.
- ii) राजकारणात काम करत असताना स्त्रियांच्या समोर उद्भवणाऱ्या समस्यांचा अभ्यास करणे.

3) संशोधन पद्धती :-

प्रस्तुत शोध निबंधातील माहिती दुय्यम साधन सामग्री द्वारे मिळवली आहे त्यामध्ये प्रामुख्याने संदर्भ, ग्रंथ, मासिक, ग्रंथ, विविध संकेत स्थळे यांचा अवलंब केला आहे.

4) भारतीय महिलांची राजकीय स्थिती :-

भारतीय राज्यघटनेने महिलांना पुरुषांच्या बरोबरीने स्थान दिली आहे असे असले तरी राजकारणात मात्र त्यांचे स्थान कमी प्रमाणात दिसून येते पुरुषप्रधान संस्कृतीचा तो दृश्य परिणाम आहे. स्वातंत्र्योत्तर कालखंडातील राजकारणातील त्यांचे स्थान हे स्वातंत्र्य चळवळीतील त्यांच्या सहभागीतेमुळे दिसून येते महात्मा गांधीजींच्या स्वातंत्र्य आंदोलनातील चळवळीतून महिलांचा सहभाग वाढला व त्या नव्या भूमिकेत दिसून आल्या.

19 व्या शतकात झालेली समाज सुधारणेची चळवळ व स्त्री शिक्षणाचा प्रसार यामुळे महिलांच्या स्थितीत सुधारणा होण्यास सुरुवात झाली परंतु ही स्थिती काही विशिष्ट गटा पुरतीच मर्यादित होती त्यात शहरी भागातील सुशिक्षित व उच्च जातीच्या स्त्रियांचा समावेश होता समाजातील उर्वरित ते यांचा हाच दृष्टिकोन होता की त्या केवळ कौटुंबिक जबाबदारी सांभाळू शकतात पुढे जाऊन मात्र काही स्त्रियांनी सुधारणा चळवळीत भाग घेतला सुरुवातीच्या कालखंडात एक लहानसा गट यात सहभागी झाला ज्यात सर्व प्रमाणात उच्च जातीच्या स्त्रियांचा सहभाग होता व त्यात हिंदू धर्मातील स्त्रिया मोठ्या प्रमाणात सहभागी होत्या या सर्व स्त्रियांना व सहभागात त्यांच्या कुटुंबाने कधी उघड तर कधी गुप्त पद्धतीने पाठिंबा दिला. 19 व्या शतकाच्या प्रारंभी स्त्रियांमध्ये शिक्षणाचा प्रसार दिसून आला जो स्त्रियांच्या संघटनांमधून दिसून आला ज्यात यापूर्वी कधीही नव्हता एवढ्या महिला त्यात सहभागी झालेल्या दिसून आल्या याच कालखंडात भारतीय महिला संघटना स्थापन झाली महिला चळवळीला ही संघटना समकक्ष ठरली.

इ.स. 1917 मध्ये पहिल्यांदा विद्यावाचस्पतिकार असावा ही मागणी पुढे आली 1917 मध्ये सरोजिनी नायडू यांच्या पारलंबित करे विद्यावाचस्पतिकाराची मागणी केली जी पुरुषांचा आधीच प्राप्त होती वा मागणीचा परिणाम म्हणजे पहिल्यांदा महिलांचाच दर्जा प्राप्त झाला.

इ.स. 1919 मध्ये मद्रासचे वेल्सलेड सुधारणा कायद्याने जवळजवळ दहा लाख महिलांना मतदानाचा अधिकार मिळाले. 1912 मध्ये त्यांचा पहिल्यांदा घनदास कार्ल्याची संघी मिळाली मधू लक्ष्मी रेड्डी ह्या पहिल्यांदा मद्रास कायदे मंडळाच्या सदस्य झाल्या व त्याचबरोबर त्यांची विवड उपसभापती म्हणूनही कल्पना आली त्यांनी देवदासी प्रथेविरुद्ध पहिल्यांदा कायदा मिळवला व कुपपेससूम शिक्षा व मुक्ती मिळवून दिली महिला चळवळीच्या मार्गदर्शक असणाऱ्या कमलादेवी चटोपाध्याय या देखील मध्ये विवडून आल्या राधाबाई सुब्बाराव रेणुकारोय, अनु स्वाामीनाथन या महिला केंद्रीय कायदे मंडळावर निवडून आल्या.

महत्त्वाचा गांधीजींनी स्त्रियांचा स्वातंत्र्य आंदोलनात सहभागी होण्यासाठी जी हाक दिली ती भारतीय महिलांसाठी एक युवाची सुरुवात होती त्यांचा विद्यावाचस्पतिकार सहाय्ये महत्त्व माहीत होते. गांधीजींनी स्त्रियांची ताकद सत्याग्रहात दाखवून त्या पुढे पुढे त्यांच्या तुलनेने शूद्र अर्थिक प्रमाणात होती त्यांच्यामध्ये अहिंसात्मक चळवळीमध्ये पुरुषांपेक्षा स्त्रियांचा अधिक प्रयत्न कारण ही सहसरीलता हा त्यांचा सर्वात मोठा गुण आहे त्या एखाद्या एखादी गोष्ट ठरवित्यानंतरती पूर्ण होईपर्यंत मागे हटत नाहीत.

1919 मध्ये रोलेट एक्ट विरुद्ध जी चळवळ उभारण्यात आली स्त्रिया मोठ्या प्रमाणात यात सहभागी झाल्या याचा प्रभाव काळात 1930 मध्ये गांधीजींनी सविनय कायदेभंग अर्थात दांडी यात्रा काढली त्यात अनेक महिला सहभागी झाल्या त्या विजयालक्ष्मी पंडित, कृष्णा सिंह लक्ष्मी मेनन, मुशीला नायर, जयश्री रावजी, हंसा मेहता मनिबेन पटेल आणि म्हात्रे प्रमिला हे समावेश होता. इतकेच नव्हे तर लोकांसाठी मुशीब सरोजिनी नायडू यांनी महिलांचे अनेक गट तयार केले व त्यांना मुंबईच्या भागात पाठवून भीड तयार करण्यास सांगितले पुढे फक्त सहकारी म्हणून सहभागी होणाऱ्या स्त्रिया आता नेतृत्व देखील करू शकतील स्वदेशी चळवळ व सहकार चळवळ व सविनय कायदेभंग चळवळ यातून त्यांचा सहभाग अधोरेखित झाला.

1931 मध्ये सरोजिनी नायडू यांच्या अध्यक्षतेखाली मुंबई येथे एक सभा भरली ज्यात महत्त्वाचा मुद्दा हा होता की कायदा सर्व व्यक्तींना शोध मताधिकाराचा अधिकार असावा व सर्वांना लिंगभेदावर राजकीय अधिकार असावेत 1931 कराची अधिवेशन पंडित नेहरूंच्या अध्यक्षतेखाली झाली ज्यात नेहरूंनी स्त्री-पुरुषांचा समान मूलभूत अधिकार असतील ज्यात राजकीय अधिकार समावेश ही असेल असे त्यांनी स्पष्ट केले. 1937 च्या निवडणुकीत महिलांचा मत अधिकाराचा विस्तार झाला 1937 च्या निवडणुकीत 42 महिला कायदे मंडळावर निवडून आल्या व पाच महिलांना वरिष्ठ सभागृहात नियुक्त करण्यात आले.

1942 चले जाव (हौडो भारत आंदोलन) आंदोलनातील वरिष्ठ नेते जेव्हा तुरुंगवासात होते व ही चळवळ नेतृत्वहीन झाले तेव्हा स्त्रियांनी हे आंदोलन पुढे नेले ज्यात सभा भरविणे सत्याग्रह घडवून आणणे असे उपक्रम करित होत्या अरुणा अमन अंत कल्पना जोशी, श्रीती वडे, रुपावती जैन, दुर्गाबाई सुशिलादेवी उषा मेहता यांचा 1942 च्या चळवळीत सहभाग होता 1941 मध्ये सुभाष चंद्र बोस यांनी महिलांसाठी एक सैन्य तुकडी बनविली ज्याचे नाव "झाशीची राणी रेजिमेंट" असे ठेवण्यात आले व त्यात प्रमुख लक्ष्मी मेहगल ह्या झाल्या.

त्यानंतर भारताला स्वातंत्र्याचे वेध लागले व जात महिलांचा सहभाग अजूनच जास्त वाढला संविधान संघेचे स्वरूप ऑक्टोबर 1947 मध्ये झाल्यानंतर सरोजिनी नायडू, दुर्गाबाई देशमुख, रेणुकारोय, आणि हंसा मेहता त्यात सहभागी झाल्या.

स्वातंत्र्यानंतरच्या कालखंडात स्त्रियांचा राजकारणातील सहभाग वाढला अनेक स्त्रिया राजकारणात सहभागी झाल्या जरी सहभाग अत्यल्प आहे. 1993 मधील 73 व्या व 74 व्या घटनादुरुस्तीने महिलांना स्थानिक स्वराज्य संस्थेत 33 टक्के आरक्षण मिळाले स्त्रियांचा मतदानातील सहभाग वाढला आहे आणि बऱ्याच महिलांना राजकीय पक्षात देखील त्या महत्त्वाच्या पदावर जाते परंतु ही सहभागिता वाढलेली दिसत नाही भारतीय महिलांच्या लोकसभेतील सहभाग 14 % पेक्षा वाढलेला नाही जैत लोकसभेत 22, 13 व्या लोकसभेत 42 महिला निवडून आल्या व ही टक्केवारी 9.2 % होती. तर 17 व्या लोकसभेत आतापर्यंतच्या इतिहासातील सर्वांत जास्त म्हणजे 78 महिला प्रतिनिधी निवडून आले आहेत याची टक्केवारी 14 टक्के आहे 17 सदस्य असणाऱ्या या लोकसभेत केवळ 78 महिला आहेत एकूण 29 घटक राज्य पैकी सात घटक राज्य अशी आहेत तेव्हा स्त्री महिला उमेदवार निवडून आलेली नाही 48 % महिलांची लोकसंख्या असताना ही टक्केवारी 14 % आहे जी अत्यल्प असल्या दिसून येते.

लोकसभेतील महिला आरक्षणाचे विधेयक 1996 पासून सादर केले जात आहे, 1998 मध्ये जेव्हा हे विधेयक मांडलेले तेव्हा लोकसभेत एवढा गोंधळ माजला व या आरक्षण विधेयकाची प्रत देखील फाडून फेकण्यात आली व आज 17 व्या लोकसभेत देखील हे विधेयक पास होण्याची वाट पाहणे एवढेच भारतीय महिला करित आहेत.

Diversity Of Leaf Surface Mycoflora On Mangifera Indica L.

Shama Mahadik

Department of Botany

Ramkrishna Paramhansa Mahavidyalaya, Osmanabad , Maharashtra, India

Abstract—The leaf surface is exposed continuously to air, which carries numerous microscopic living and non living objects. Fungal spores are one of them. Fungi are found everywhere such as in air, soil and water. The air borne fungi vary from place to place. Nutritionally fruits are important and grown in diverse conditions. The mango is an evergreen tree. Mango suffers from various diseases at all stages of life. Leaf surface provides a suitable environment for microbial growth. Fungal species isolated from leaf of mango were *Aspergillus*, *Alternaria* and *Fusarium*.

Keywords—Phyllosphere, Mangifera, Fungi

Introduction : The term phyllosphere was introduced by Last (1955) to denote the leaf surface environment. Leaf surface provides a suitable habitat for the growth, reproduction and multiplication of microorganisms because the surface medium of leaf comprises exudates, chemical compounds resulting from biological activity of various microbes (Deepika Chauhan et al. 2014). Lot of investigations have been carried out on phylloplane flora of leaf surfaces of plants grown for various purposes (Abdul Latif Abadi 1999, Bharat Rai et al 1980, Kiss 2003, Steven E. Lindow, 2003, Shikha Thakur, 2017). Many environmental factors affect the growth of fungal population and due to this there is variation in fungal occurrence.

The microbial population of phyllosphere is diverse showing presence of numerous species of fungi, bacteria and other various microorganisms. Many physical, chemical and biological factors are responsible for growth of microorganisms

The mango is delicious fruit, its skin and seeds are used in Ayurvedic medicine. Leaves are used in rituals, to decorate doors and gateways. In dried form used as amchur, used in pickles and various sweets.

Material and Methods :

Sample Collection : The fresh leaves were collected randomly from various localities. The leaf samples were collected in sterilized polythene bags. The collected leaves brought to laboratory.

Isolation of Phyllosphere Fungi :

Phyllosphere fungi were isolated from leaves of test plant through leaf washing technique (Sandeep Shukla 2016). The collected leaf samples were placed in 250 ml conical flasks containing 100ml

sterilized distilled water. The conical flask was hand shaken for homogenous suspension for about 30 minutes. This suspension was used for further study. One ml suspension was poured into petriplates containing sterilized PDA medium. Incubated for seven days in incubation chamber. After incubation fungi were observed and recorded using standard literature.

Result and Discussion :

Table 1. Observation of Fungal species from phyllosphere

Sr.no	Name of the plant	Name of the Fungi	Season		
			Rainy	Winter	Summer
1	Mangifera indica L	<i>Aspergillus species</i>	++++	+++	+
		<i>Alternaria species</i>	++	++	+
		<i>Fusarium species</i>	++	+++	+

Presence of fungus = +

During present investigation, it was reported that the species of *Aspergillus*, *Alternaria* and *Fusarium* were frequently seen. Although there may be presence of

another fungi but present study deals with prevalent fungi present and there were selected for further study.

References:

- 1 Abdul Latif Abadi Antagonistic effect of four fungal isolates to *Ganoderma boninense*, the causal agents of basal stem rot of oil palm. *Biotropia*. No 3. pp 41-49 (1990),
- 2 Bharat Rai and D.B. Singh, Antagonistic activity of some leaf surface microfungi against *Alternaria brassicae* and *Drechsler graminea*, *Transactions of the British Mycological Society*, Vol 75, Issue 3: 363-369, (1980)
- 3 Dalal L.P Study of leaf surface mycoflora of some selected plants Vol 3, Issue 4, pp 805-813. (2014)
- 4 Deepika Chauhan et al Studies on phylloplane microflora of Dhak, *JETIR* Vol 1, Issue 7, (2014),
- 5 Kiss LA review of fungal antagonistic of powdery mildews and their biocontrol agents. *Pest Manag. Sci.* 59, 475-483. (2003)



6 Sandeep Shukla and R.B.Sharma Diversity of surface Mycoflora on *Tinospora cordifolia* ,Indian Journal of plant sciences, Vol 5, pp42-53. ,(2016)

7 Shikha Thakur Study of phylloplane mycoflora of some selected medicinal plants ,IJABPT, Vol 8, Issue 2, DOI:10.21276/ijabpt ,(2017)

8 Steven E. Lindow and Maria T. Brandi (2003) ,Microbiology of the Phyllosphere, Applied and Environmental Microbiology ,69(4):1875-1883,(2003)



34

2020

8

ISSN 2349-638x
Impact Factor 6.293

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

PEER REVIEW & INDEXED JOURNAL

Email id : aiirjpramod@gmail.com

www.aiirjournal.com

SPECIAL ISSUE No. 65

Executive Editor

Dr. S.M. Maner

Principal

Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Co-Editor

Prof.G.V.Baviskar

Head, Dept. of History
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Co-Editor

Dr. B.V.Gund

Head, Dept. of Pol.Sci.
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Co-Editor

Prof. B.J.Kukde

Head, Dept. of Sociology
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Chief Editor

Prof. Pramod Tandale

Sr No	Author Name	Title of Article	Page No.
45	प्रा. धनाजी दौलतराव भोसले	भारतातील समकालीन समस्या आणि महात्मा फुले यांच्या विचारांची आवश्यकता	139
46	प्रा. शितल लहू बोडके	महिला सबलीकरण आणि सदयास्थिती	141
47	सौ. साक्षी खेडेकर	सोशल मिडियातील तरुणाई...	143
48	प्रा. अशोक रामचंद्र गोरे	सामाजिक न्याय	146
49	प्रा. डी. एम. शिंदे	भारतातील वाढती लोकसंख्या - एक सामाजिक समस्या	148
50	प्रा. सौ. संगिता पाटील	भारतातील वाढती लोकसंख्या-परिणाम	150
51	श्री. बापू तुकाराम बाराते	लोकसंख्या वाढीच्या समस्या	152
52	प्रा. माधव उत्तमराव उगिले	महिला सबलीकरण : आव्हाने आणि उपाय	154
53	प्रा. डॉ. नागोराव संभाजी भुरके	लोकसंख्या वाढ एक समस्या	157
54	Dr.Sainath Radheshain Bansode	Problems of Population in India	159
55	Mr. Jagadananda Ray Dr. S. J.Chandrashekhar	The Role of Yoga for the Development of Human Values	161
56	Dr. Chandrakant Kamble	Social Issues In The Globalization Age	163
57	प्रा. डी.डी. गायकवाड	सामाजिक न्याय - राजर्षी छ. शाहू महाराज : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास	166
58	Aparna Vishwanath Kalyankar	A Study on Issues and Challenges of Women Empowerment in India	168
59	प्रा. बी.जे. कुकडे	लिंगभेदाची समस्या	172
60	प्रा. प्रकाश साहेबराव काळवणे	भारतातील लोकसंख्येची समस्या	175
61	प्रा. शरद शंकर गायकवाड	महिलांचे सशक्तीकरण व महिला चळवळी एक समाजशास्त्रीय दृष्टीकोन	178
62	प्रा. जे. एन शितोळे	लोकसंख्यावाढीतील आहार आणि पोषण विषयक समस्या	180
63	प्रा. सौ. माधुरी गोविंद गिरी	लोकसंख्या वाढीची समस्या	183
64	प्रा. डॉ. श्रीकांत गायकवाड	स्त्री-पुरुष असमानता निर्मूलनाचा दृष्टिकोन	185

भारतातील वाढती लोकसंख्या - एक सामाजिक समस्या

प्रा.डी. एम. शिंदे

समाजशास्त्र विभाग प्रमुख

रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय, उस्मानाबाद

प्रस्तावना :-

वाढती लोकसंख्या ही आधुनिक भारतातील मोठी आणि गंभीर समस्या आहे. अनेक समस्यांचे मूळ वाढत्या लोकसंख्येमध्ये आहे. जगातील एकूण भू-भागापैकी २.४ टक्के भू-भाग भारताच्या वाटयाला आलेला आहे. त्या भू-भागावर आजमितीला जवळ जवळ १३५ कोटी लोकसंख्या वास्तव्याला आहे. 'जागातील ६ व्यक्ती पैकी एक व्यक्ती भारतीय आहे.' चीनच्या खालोखाल भारतीय लोकसंख्या दुस-या क्रमांकाची आहे. १९२१ नंतर भारतीय लोकसंख्या सतत वाढती आहे. १९२१ या वर्षाला महाविभाजक वर्ष म्हटले जाते. कारण १९२१ पूर्वी भारतीय लोकसंख्या जन्म आणि मृत्यू या दोन्ही मध्ये एक सारखी होती. मात्र त्यानंतर भारतीय लोकसंख्येत जन्म दराचे प्रमाण वाढू लागले आणि मृत्यू दराचे प्रमाण घटले. १९५१ ते १९८१ दरम्यान भारतीय लोकसंख्येत जन्म दराचे प्रमाण एवढे वाढले की, या कालावधीला लोकसंख्येचा विस्फोट म्हटले जाते.

शोधनिबंधाची उद्दिष्टे:-

१. लोकसंख्येची समस्या समजावून घेणे.
२. लोकसंख्या वाढीची कारणे समजावून घेणे.
३. लोकसंख्येचे परिणाम विचारात घेणे.

संशोधन पध्दती :-

प्रस्तुत शोधनिबंधासाठी द्वय्यम स्रोत्राचा उपयोग केला असून सदभ्रंथ, वर्तमानपत्र, मासिके, इंटरनेट इ.चा आधार घेतलेला आहे.

विषय विश्लेषण :-

भारताच्या स्वातंत्र्यप्राप्ती नंतर सतत लोकसंख्येत वाढच वाढ होत आहे. त्याला अनेक कारणे जबाबदार आहे. वाढत्या शिक्षणाचा प्रसार, आरोग्याच्या सुविधांच्यात झालेली वाढ. यामुळे मृत्यू दरात घट होवून जन्म आणि जनन क्षमता वाढली आहे. भारतीय लोकसंख्येचे तीन वर्गात विभाजन करता येईल. ते असे

१. ० ते १४ वयोगट.
२. १५ ते ५९ वयोगट.
३. ६० वरील वयोगट.

१५ ते ५९ या वयोगटाला उत्पादक गट मानले जाते. मात्र यातील ४० टक्के लोक संख्या ही अनुउत्पादक आहे. त्याच बरोबर ० ते १४ आणि ६० वरील वयोगटातील लोकसंख्या ही शुध्दा अनुउत्पादक गनली जाते. त्यामुळे भारताची लोकसंख्या एक समस्या बनली आहे. आज भारतीय लोकसंख्याची घनता सरासरीने ३८२ असून सर्वात जास्त लोकसंख्या घनतेचे राज्य बिहार आहे. सर्वात कमी लोकसंख्या घनता हिमाचल प्रदेश हे राज्य आहे. त्याचबरोबर स्त्री आणि पुरुष यांचे प्रमाण विषम आहे. जात, धर्म, प्रांत, यांच्यातील प्रमाण देखील विषमच आहे. तेव्हा भारतीय लोकसंख्या ही वैशिष्ट्ये पूर्ण आणि समस्यारहित आहे. अशा भारतीय लोकसंख्या वाढीची कारणे माझ्या मते पुढील प्रमाणे आहेत.

१. स्त्रीयांचा द्वय्यम दर्जा.
२. बालविवाह बंदीचा कायदा असून देखील बालविवाह घडतात.
३. शेती व्यवसायात पारंपारिक तंत्राचा वापर अजून ही सुरुच आहे.
४. भारतातील नैसर्गिक वातावरण शुध्दा लोकसंख्या वाढीला पुरक आहे.
५. भारतात स्थानांतरीत होणा-यांचे प्रमाण वाढतच आहे.
६. उच्च जीवन जगण्याच्या लोकांच्यातील अभिलाषा कमीच आहे.
७. शिक्षणाचा प्रसार झाला असला तरी काही जमाती, जाती यांच्या मध्ये शिक्षणाचे प्रमाण अल्प आहे.

त्याचबरोबर काही स्थानिक प्रथा परंपरा लोकसंख्या वाढीला पूरक ठरलेल्या आहेत. जसे 'मुलगा म्हणजे वंशाचा दिवा,' 'मुलं म्हणजे देवा घरची फुल' अशातून लोकसंख्या वाढत आहे.

वाढत्या लोकसंख्येचे दुष्परिणाम :-

१. दिवसेंदिवस अन्नधान्याच्या तुटवड्यात वाढ होत आहे.
२. छुपी आणि उघड बेकारी वाढत आहे.
३. उत्पादक शक्तीला एक प्रकारचे आव्हानच निर्माण झालेले आहे.
४. विकास कामात अडथळा.
५. मानवी पर्यावरण व नैसर्गिक पर्यावरण यांच्यात पराकोटीचा संघर्ष निर्माण झाला आहे.
६. अनेक मानवी मुल्यांचा -हास होऊन नैतिकता व अनैतिकता यांच्यात संघर्ष होत आहे.

भारतातील वाढती लोकसंख्या अनेक समस्या निर्माण करीत असून त्याचे अनिष्ट परिणाम देखील वाढत आहे. २००० नंतर राहात्या घरांची टंचाई दूर करण्यासाठी उत्पादक जमीनीचा वापर घरबांधणीसाठी होवू लागला यांचा परिणाम निसर्गातील अनेक घटक नाहीसे झाले. यामुळे पर्यावरणात प्रदूषण वाढले

लोकसंख्या वाढीवर नियंत्रण :-

वाढत्या लोकसंख्येवर नियंत्रण ठेवण्यासाठी स्वातंत्र्यपूर्व व स्वातंत्र्यानंतर अनेक उपाय, धोरणे अमलात आणली जेणेकरून लोकसंख्येत समतोल ठेवता येईल अशी उपायोजना निर्माण केली लोकसंख्या धोरणा विषयी सौ कुमुदिनी दांडेकर म्हणतात. "ज्यामुळे लोकसंख्येचा आकार आणि लोकसंख्येचा गुणात्मक दर्जा यावर अपेक्षित परिणाम घडून येऊ शकतो अशी शासनाची कृती म्हणजे लोकसंख्या धोरण होय"

भारतांने १९७६ व २००० च्या लोकसंख्या विषयक धोरणे राबवलेली आहेत. त्यांची उद्दिष्टे अशी.

१. लोकसंख्या वाढ नियंत्रित करणे
२. जननदर कमी करणे
३. मृत्युदर कमी करणे
४. क्षेत्रिय असंतुलन लोकसंख्या वाढ कमी करणे
५. देशातील लोकसंख्येला योग्य जीवनस्तर प्राप्त करणे देणे.
६. लोकोपशिक्षणाला प्रोत्साहन देणे.
७. लोकांनी संयम ठेवणे गरजेचे आहे.

त्याच बरोबर काही सेवाभावी संस्था, संघटना व्यक्ती इ.लोकसंख्येवर नियंत्रण ठेवण्यासाठी समाज प्रबोधन व उदबोधन करीत आहेत. असे असताना देखील लोकसंख्या वाढ होतच आहे.

निकर्ष:-

१. भारतीय लोकसंख्या दिवसेंदिवस वाढत आहे.
२. भारतीय लोकसंख्येत १५ ते ५९ या वयोगटातील लोकसंख्या जास्त असली तरी त्यातील ४० टक्के लोकसंख्या ही कौशल्य पूर्ण नाही म्हणून विकासाला अडसर ठरत आहे.
३. लोकसंख्यावाढीमुळे अनेक प्रश्न निर्माण होत आहे. जसे शेती क्षेत्राचे छोट्या छोट्या तुकड्यात रूपांतर , छुपी बेकारी, व्यसनाधिनता, आळशीपणा, पर्यावरणाचा -हास, मानसिक ताण तणावात वाढ
४. भारतीय लोकसंख्या अशी वाढत राहिल्यास पुढील काळात वेगळ्याच समस्या निर्माण होतील
५. भारतातील वाढती लोकसंख्या हे एक आव्हान आहे.

संदर्भग्रंथ:-

१. लोकसंख्या आणि भारतीय समाज- प्रा. अशोक गोरे.
२. लोकसंख्या आणि समाज- डॉ. तारा कानिटकर, डॉ. सुधा काळदाते
३. भारताच्या विघटनात्मक समस्या — डॉ.दा.धो. काचोळे
४. भारत का जनसंख्या भूगोल- विजयकुमार तिवारी.

**SPECIAL ISSUE PUBLISHED BY
AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY
RESEARCH JOURNAL**

Peer Review & Indexed Journal | Impact factor 6.293

Email id : aiirjpramod@gmail.com

www.aiirjournal.com

Mob.8999250451



Design and synthesis of new indanol-1,2,3-triazole derivatives as potent antitubercular and antimicrobial agents

Pramod S. Phatak^a, Rajubai D. Bakale^a, Ravibhushan S. Kulkarni^a, Sambhaji T. Dhumal^b, Prashant P. Dixit^c, Vagolu Siva Krishna^d, Dharmarajan Sriram^d, Vijay M. Khedkar^e, Kishan P. Haval^{a,*}

^a Department of Chemistry, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University SubCampus, Osmanabad 413 501, MS, India

^b Department of Chemistry, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad 431 004, MS, India

^c Department of Microbiology, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University SubCampus, Osmanabad 413 501, MS, India

^d Department of Pharmacy, Birla Institute of Technology and Science-Pilani, Hyderabad Campus, Jawahar Nagar, Shameerpet Mandal, R. R. District, Hyderabad 500078, India

^e Department of Pharmaceutical Chemistry, School of Pharmacy, Vishwakarma University, Pune 411 048, MS, India

ARTICLE INFO

Keywords:

1,2,3-Triazoles
Antitubercular activity
Antimicrobial activity
Click chemistry
Molecular docking study
ADME prediction

ABSTRACT

In a search of new antitubercular agents, herein we have reported a series of new thirty-two indanol-1,2,3-triazole derivatives. The synthesized compounds were screened for their *in vitro* antitubercular and antimicrobial activities. Among the screened compounds, most of the compounds have displayed good antitubercular activity against *Mycobacterium tuberculosis* H37Rv. The compound **5g** has been identified as potent antitubercular agent with MIC value 1.56 μ M. The most active compounds of the series were further studied for their cytotoxicity against HEK 293 cells using MTT assay and found to be nontoxic. In addition, ten compounds were shown good antimicrobial activities against both antibacterial and antifungal pathogens. A molecular docking study against *Mycobacterial enoyl-ACP-reductase* (InhA) was performed to gain an insight into the molecular mechanism of antitubercular action. The pharmacokinetic parameters of these compounds were studied and displayed acceptable drug-likeness score.

The world is facing many health problems.¹ As per Global Tuberculosis Report-2019, tuberculosis (TB) is among the top ten reasons of death worldwide.² It is a communicable disease and infected by the bacillus *Mycobacterium tuberculosis*. It gets spread when people who are sick with TB expel bacteria into the air; for example, by coughing. It normally affects the lungs (pulmonary TB) but can also affect other sites (extrapulmonary TB).³ The one-fourth of the world's population is infected with *M. tuberculosis*. The drug-resistant tuberculosis and co-infection with HIV are two leading health concerns about the tuberculosis. It is observed that the control of tubercular spread has become one of the main health concern in the world.⁴ As constrained treatment options for multi-drug resistant (MDR-TB) and extensively drug resistant (XDR-TB) are available, TB research community is facing the challenge of synthesizing new anti-TB drugs with novel modes of action.⁵ According to the WHO, resistance to the most effective first-line antibiotic rifampicin for tuberculosis, occurred in approximately six lacks cases in 2017. Among these cases, approximately 82% were resistant to multiple treatment options. Since the discovery of Rifampicin

(RIF) 40 years ago, only few promising anti-TB drugs have been invented.⁶ Hence, it is an urgent requirement to design and synthesis of new antitubercular and antimicrobial agents.⁷

Indanol derivatives are endowed with various biological activities such as antiviral, insecticidal, hypotension, anti-inflammatory, CNS depressant, antimicrobial, anti-HIV, antagonistic, antihypertensive, and antitubercular.^{8–13} Similarly, the 1,2,3-triazole derivatives are important target molecules for the researchers worldwide due their pharmaceutical applications.¹⁴ It includes anti-tubercular,¹⁵ antifungal,¹⁶ α -glycosidase inhibitors,¹⁷ antibacterial, anti-allergic and anti-HIV.¹⁸ Molecular hybridization is a classical approach for the design of new bioactive compounds.^{19,20} This molecular hybridized compounds could have more solubility and oral bioavailability in some extents. In literature, many 1,2,3-triazole derivatives coupled with another moieties are reported.^{21,22} Triazole based antitubercular agent **A** (I-A09) (Fig. 1) is under pre-clinical trials.²³ The compound **B** (Fig. 1) from the novel 3-trifluoromethyl pyrazolo-1,2,3-triazole hybrids emerged as the most promising antitubercular agent with lowest cytotoxicity.²⁴ 1-aryl-

* Corresponding author.

E-mail address: havalkp@gmail.com (K.P. Haval).

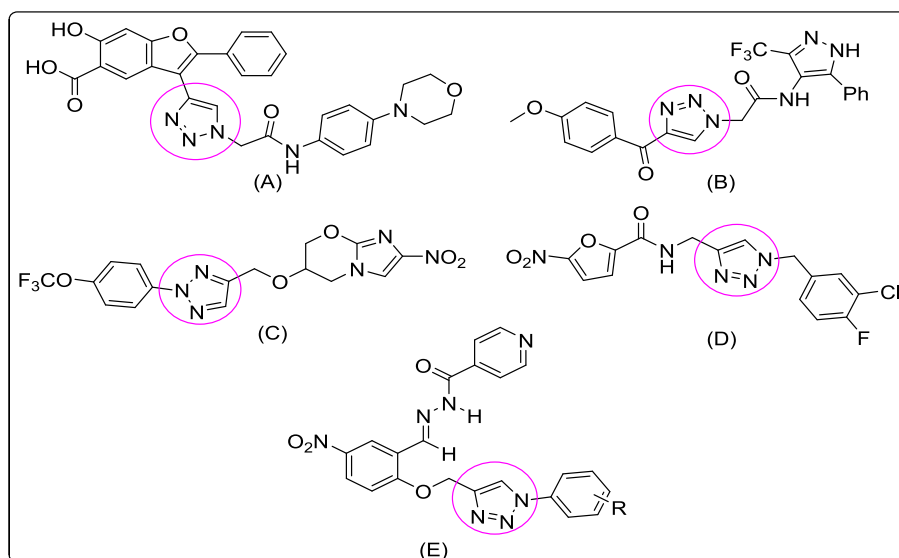


Fig. 1. Representative 1, 2, 3-triazole derivatives having antitubercular activity.

4-linked 1,2,3-triazole based compound **C** (Fig. 1) identified potent new candidate with improved aqueous solubility.²⁵ The compound **D** (Fig. 1) from the 5-nitrofuran triazole conjugates showed promising antitubercular activity.²⁶ Isoniazid embedded triazole compound **E** (Fig. 1) exhibited potent antitubercular activity with low cytotoxicity.²⁷

In continuation of our ongoing research on synthesis of new antitubercular and antimicrobial agents,^{28,29} herein we have synthesized new indanol-1,2,3-triazole derivatives (**5a-p** & **7a-p**) by employing click chemistry approach. The synthesized compounds were screened for their *in vitro* antimycobacterial activity against *Mycobacterium tuberculosis* H37Rv (MTB). In addition, *in vitro* antimicrobial activities were also evaluated.

The reaction sequence followed for the synthesis of indanol-1,2,3-triazole derivatives (**5a-p** & **7a-p**) is as shown in Schemes 1–3. In the first step, the key intermediate 5-(prop-2-ynoxy)-2,3-dihydro-1H-indene (**3**) was synthesized by propargylation of 5-indanol (**1**) in the presence of potassium carbonate in DMF at room temperature with 85% yield. The click reactions of 5-(prop-2-ynoxy)-2,3-dihydro-1H-indene (**3**) and freshly prepared substituted phenyl azides (**4a-p**) were performed in the presence of copper acetate and sodium ascorbate to give the corresponding 4-(2,3-dihydro-1H-inden-5-yloxy)methyl-1-phenyl-1H-1,2,3-triazole derivatives (**5a-p**) with 80–90% yields.

Similarly, the click reactions of 5-(prop-2-ynoxy)-2,3-dihydro-1H-indene (**3**) and freshly prepared substituted 2-azido-*N*-phenylacetamides (**6a-p**) were afforded the corresponding 2-(4-((2,3-dihydro-1H-inden-5-yloxy)methyl)-1H-1,2,3-triazol-1-yl)-*N*-phenylacetamide derivatives (**7a-p**) with 85–97% yields. The structures of newly synthesized indanol-1,2,3-triazole derivatives (**5a-p** & **7a-p**) were assigned by their IR, ¹H NMR, ¹³C NMR and HRMS spectral data analysis.

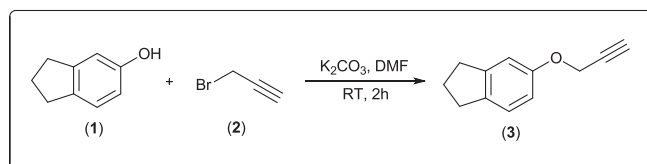
The indanol-1, 2, 3-triazole derivatives (**5a-p**) and (**7a-p**) were evaluated for their *in vitro* antitubercular activity against *Mycobacterium tuberculosis* H₃₇Rv strain.^{30,31} These compounds have displayed excellent antitubercular activity compared to first line antitubercular drugs, ciprofloxacin and ethambutol (Table 1). The compound **5g** with

2, 4-dimethyl substituted benzene ring has displayed excellent antitubercular activity with MIC value 1.56 μM, which is more potent than ethambutol and equivalent to another standard drug, ciprofloxacin. The three compounds **5h**, **5j** and **5m** having 2, 4, 6-trimethyl, 2-bromo and 2-fluoro substituted benzene ring, respectively were shown significant antitubercular activity with MIC value 6.25 μM. The compound **7b** with 2-methoxy phenyl acetamido moiety has shown good antitubercular activity against *Mycobacterium tuberculosis* H₃₇Rv strain with MIC value 6.25 μM. The four compounds **5b**, **5c**, **5e** and **5i** having 2-methoxy, 3-methoxy, 3-methyl and 2-methyl, 5-nitro substituted benzene ring, respectively were displayed noticeable antitubercular activity with MIC value 12.5 μM. The compounds **5a** and **5d** having benzene ring and 4-methoxy substituted benzene ring respectively showed good antitubercular activity with MIC value 25 μM (Table 1). It has been observed that the phenyl-1,2,3-triazole derivatives (**5a-p**) were displayed better antitubercular activity than the phenylacetamido-1,2,3-triazole derivatives (**7a-p**). These obtained results will be useful for further identification of more potent antitubercular agents.

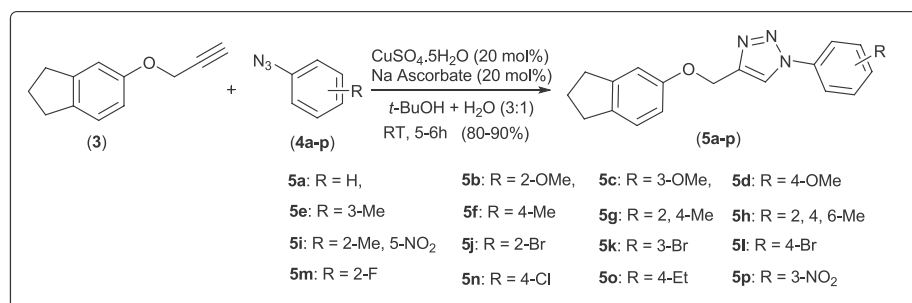
The indanol-1,2,3-triazole derivatives **5a**, **5b**, **5c**, **5d**, **5e**, **5g**, **5h**, **5i**, **5j**, **5m** and **5n** were found to be most active against *Mycobacterium tuberculosis* H₃₇Rv strain. The *in vitro* cytotoxicity of active indanol-1,2,3-triazole derivatives were assessed by 3-(4, 5-dimethylthiazol-2-yl)-2, 5-diphenyltetrazolium bromide (MTT) assay against growth inhibition of HEK 293 (Human Embryonic Kidney) cells at 25 μM concentration (Table 1).^{32,33} It has been observed that these active indanol-1, 2, 3-triazole derivatives does not exhibit strong cytotoxicity towards the HEK 293 (Human Embryonic Kidney).

All the newly synthesized indanol-1, 2, 3-triazole derivatives were evaluated for their *in vitro* antimicrobial activities by using agar well diffusion method.^{34,35} The antibacterial screening was executed against Gram-positive *S. aureus*, *B. cereus*, *B. subtilis* and Gram-negative *E. aerogenes*, *E. coli*, *S. typhi*, *P. aeruginosa*, *S. boydii*, *S. abony* pathogens. The antifungal screening was executed against *A. niger*, *C. albicans* and *S. cerevisiae* fungal pathogens. Among the screened indanol-1, 2, 3-triazole derivatives, **5d**, **5g**, **5i**, **5j**, **5k**, **5p**, **7a**, **7b**, **7k** and **7p** were shown excellent antimicrobial activities (Table 2). The minimum inhibitory concentration (MIC) values were determined for the most active indanol-1, 2, 3-triazole derivatives. (Table 3).

In order to investigate the probable mechanism by which the synthesized indanol-1, 2, 3-triazole derivatives can exhibit the antitubercular activity and to establish an SAR based on the results of *in vitro* assay, molecular docking study against the critical mycobacterial target *enoyl-ACP-reductase* (InhA) was performed. In the absence of



Scheme 1. Synthesis of 5-(prop-2-ynoxy)-2,3-dihydro-1H-indene (**3**).



Scheme 2. Synthesis of 4-((2,3-dihydro-1H-inden-5-yloxy)methyl)-1-phenyl-1H-1,2,3-triazole derivatives (**5a-p**).

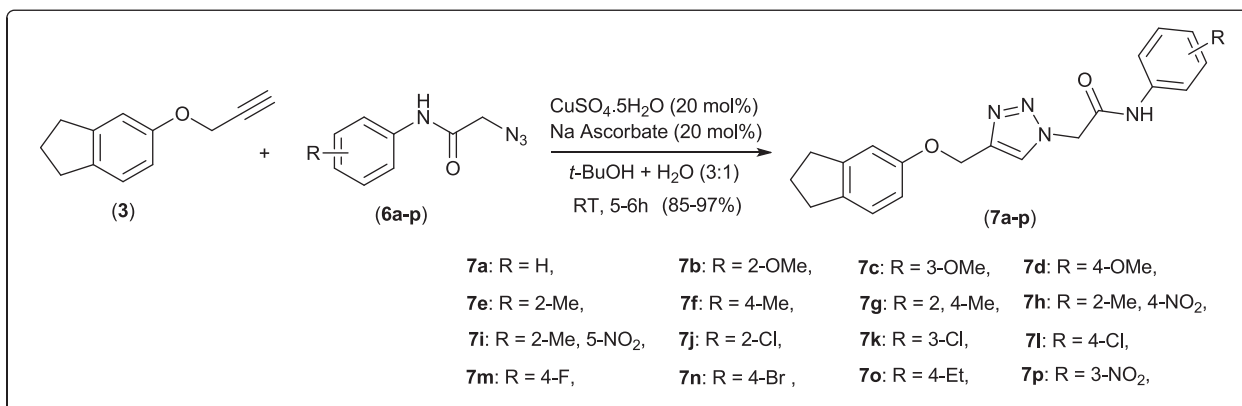
available resources to perform the enzyme-based assays, molecular docking has received significant importance to find the targets for different ligands and their associated thermodynamic interactions that direct the inhibition of the pathogen. Mycobacterial *enoyl-ACP-reductase* (InhA), an enzyme contributing to mycolic acids biosynthesis, has been recognized as a promising target of novel antitubercular drugs. Mycolic acids are very long chain (C₇₄-C₉₀) α -alkyl β -hydroxy fatty acids covalently linked to *arabino*-galactan that form the major components of the mycobacterial cell envelope providing them protection from antibiotics and are also found responsible for mycobacterial virulence.³⁶ The biosynthesis of mycolic acids is catalyzed by two enzyme systems namely, fatty acid synthase I (FAS I) that produces the shorter chain fatty acids and fatty acid synthase II (FAS II) which is involved in elongation of fatty acids chain. InhA catalyzes the *trans*-enoyl reduction which is the final step of FAS II pathway. Inhibition of *enoyl-ACP-reductase* (InhA) disrupts the integrity of mycobacterial cell wall via inhibiting mycolic acid biosynthesis and remains a most promising approach towards antitubercular drug design. In addition, triazole containing heterocycles have shown the potential to inhibit InhA which encouraged the selection of this target to gauge the binding affinity of the title compounds towards this crucial cell wall target.^{37,38}

A molecular docking study have shown that the compounds occupied an energetically favorable position in the active site cavity of InhA with varying level of affinities at the co-ordinates close to the co-crystallized ligand. They have created good to moderate docking scores ranging from -8.95 (glide binding energy of -51.716 kcal/mol) for the active compound to -7.072 (glide energy -40.444 kcal/mol) for a moderately active one with an average docking score of -7.677 (glide energy -43.953 kcal/mol). The binding arrangement and thermodynamic interaction of compounds **5b**, **5c**, **5e**, **5h**, **5i**, **5j**, **5m** and **7b** with InhA enzyme is given in [Supplementary material \(Table S1, Figs. S75-S82\)](#). These binding affinity scores were found to be in harmony with the experimentally observed antitubercular activity. To achieve more insight into binding pattern and types of thermodynamics

Table 1

MIC values and cytotoxicity activities of indanol-1, 2, 3-triazole derivatives.

Compound	MIC against Mtb H37Rv strain (μ M)	% Inhibition Cytotoxicity at 25 μ M
5a	25	23.39
5b	12.5	19.81
5c	12.5	25.78
5d	25	21.09
5e	12.5	23.44
5f	> 25	ND
5g	1.56	19.86
5h	6.25	16.56
5i	12.5	26.53
5j	6.25	16.51
5k	> 25	ND
5l	> 25	ND
5m	6.25	20.97
5n	> 25	ND
5o	> 25	ND
5p	> 25	ND
7a	> 25	ND
7b	6.25	23.35
7c	> 25	ND
7d	> 25	ND
7e	> 25	ND
7f	> 25	ND
7g	> 25	ND
7h	> 25	ND
7i	> 25	ND
7j	> 25	ND
7k	> 25	ND
7l	> 25	ND
7m	> 25	ND
7n	> 25	ND
7o	> 25	ND
7p	> 25	ND
Ciprofloxacin	1.56	ND
Ethambutol	3.125	ND
ND: Not determined		



Scheme 3. Synthesis of 2-(4-((2,3-dihydro-1H-inden-5-yloxy)methyl)-1H-1,2,3-triazol-1-yl)-N-phenylacetamide derivatives (**7a-p**).

Table 2
Antimicrobial activity of synthesized indanol-1, 2, 3-triazole derivatives.

Compounds	Antibacterial pathogens							Antifungal pathogens				
	<i>S. aureus</i>	<i>B. cerus</i>	<i>B. subtilis</i>	<i>E. aerogenes</i>	<i>E. coli</i>	<i>S. typhi</i>	<i>P. aeruginosa</i>	<i>S. boydii</i>	<i>S. abony</i>	<i>A. niger</i>	<i>C. albicans</i>	<i>S. cerevisiae</i>
5a	07	–	–	–	–	–	–	–	–	–	12	08
5b	10	–	–	–	–	–	–	–	–	–	10	–
5c	12	–	–	–	10	–	09	13	11	–	12	–
5d	08	05	10	09	10	08	12	11	12	06	11	05
5e	06	–	–	–	–	–	–	–	–	–	10	13
5f	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	12	–
5g	07	10	10	10	12	12	13	11	09	10	11	12
5h	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
5i	13	12	12	11	11	11	09	11	09	06	15	06
5j	16	09	10	12	11	11	13	12	13	07	09	10
5k	19	10	17	16	15	08	14	20	14	06	14	07
5l	–	–	–	–	08	–	–	–	–	–	11	07
5m	15	–	–	–	–	–	–	–	–	–	09	10
5n	08	–	–	–	–	–	–	–	–	–	10	08
5o	07	–	–	–	–	–	–	–	–	–	13	–
5p	08	13	12	14	12	08	11	10	08	06	12	07
7a	23	12	12	16	11	12	10	11	11	09	13	12
7b	12	–	10	13	10	12	08	12	11	10	12	10
7c	–	–	–	–	–	–	–	15	–	–	–	–
7d	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
7e	–	–	–	–	–	–	–	11	–	–	–	–
7f	08	–	–	–	–	–	–	–	–	–	12	–
7g	–	–	–	–	–	–	–	13	–	–	–	–
7h	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
7i	–	–	–	12	–	–	09	09	–	–	–	–
7j	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
7k	10	10	12	12	13	13	09	11	07	08	10	05
7l	08	–	–	–	–	–	–	–	–	–	15	10
7m	13	–	–	–	–	–	–	11	–	–	13	–
7n	–	–	–	12	–	–	05	13	–	–	–	12
7o	–	–	–	–	–	–	–	11	–	–	–	–
7p	10	12	11	10	10	10	06	10	10	05	10	09
Tetracycline	29	33	32	33	29	33	32	34	32	NA	NA	NA
Fluconazole	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA	30	30	30

(–): Inactive; NA: Not applicable

interactions guiding the anchoring of these ligands into the target, a per-residue interaction analysis between the InhA enzyme and these compounds was performed.

The most active indanol-1, 2, 3-triazole derivative **5g** produced the highest docking score of -8.95 with a Glide binding energy of -51.716 kcal/mol (Table S1). The lowest energy docked conformation of **5g** showed that it is deeply embedded into the active pocket of InhA (Fig. 2), which can be explained in terms of significant bonded and non-bonded interactions with amino acid residues lining the active site. The per-residue interaction analysis showed that the two scaffolds i.e. the indanol and triazole showed a well-balanced network of favorable steric

interactions with the active site residues. The triazole nucleus portrayed very closed van der Waals interactions with Leu218 (-2.986 kcal/mol), Ile215 (-3.283 kcal/mol), Ile202 (-2.825 kcal/mol), Pro193 (-2.884 kcal/mol), Gly192 (-2.974 kcal/mol), Ala191 (-2.958 kcal/mol), Ala157 (-2.853 kcal/mol), Pro156 (-2.943 kcal/mol), Met155 (-2.888 kcal/mol), Met103 (-3.192 kcal/mol), while phenyl substituted 1,2,3-triazole scaffold showed similar type of interactions with Met199 (-3.516 kcal/mol), Ala198 (-2.878 kcal/mol), Thr196 (-2.976 kcal/mol), Ile194 (-2.796 kcal/mol), Met161 (-3.132 kcal/mol), Tyr158 (-3.666 kcal/mol), Phe149 (-3.14 kcal/mol), Asp148 (-2.876 kcal/mol), Met147 (-2.816 kcal/mol), Met98 (-2.879 kcal/mol).

Table 3
MIC values of the most potent indanol-1, 2, 3-triazole derivatives ($\mu\text{g/mL}$).

Compounds	Pathogens					
	<i>S. aureus</i>	<i>E. aerogenes</i>	<i>S. boydii</i>	<i>A. niger</i>	<i>C. albicans</i>	<i>S. cerevisiae</i>
5d	160	130	70	180	80	210
5g	150	75	55	70	60	50
5i	50	60	60	155	40	150
5j	90	120	140	170	130	110
5k	100	150	130	190	100	160
5p	165	70	90	220	125	180
7a	140	80	130	170	85	110
7b	120	95	150	170	180	210
7k	135	110	140	190	165	230
7p	140	145	140	220	150	135
Tetracycline	20	30	20	NA	NA	NA
Fluconazole	NA	NA	NA	08	25	12

NA: Not applicable

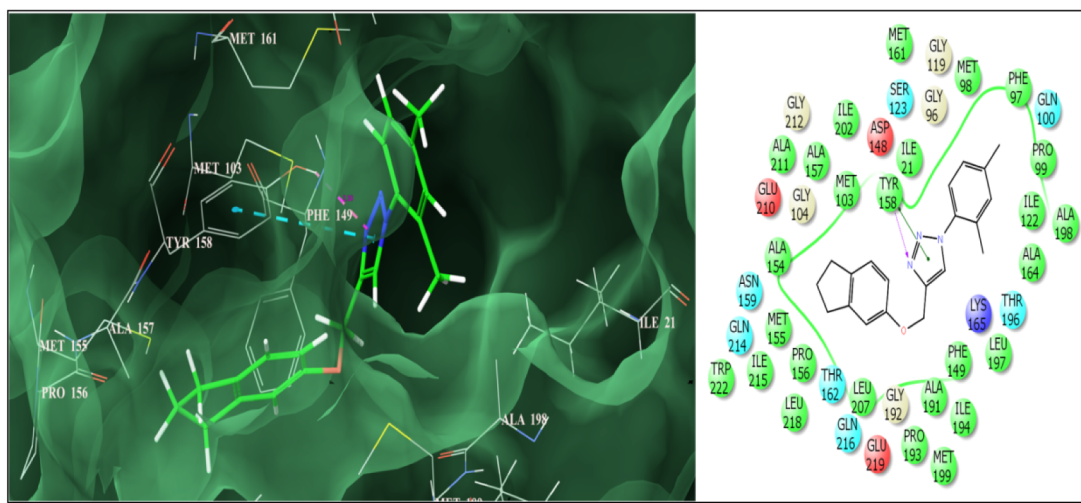


Fig. 2. Binding mode of compound **5g** into the active site of mycobacterial enoyl ACP reductase (InhA).

mol), Phe97 (−2.924 kcal/mol), Gly96 (−2.956 kcal/mol), Ile95 (−2.973 kcal/mol), Ser94 (−2.477 kcal/mol), Ile21 (−2.775 kcal/mol), Ser20 (−2.995 kcal/mol) residues. The enhanced binding affinity of **5g** is also attributed to relatively lesser but prominent electrostatic interactions observed with Met199 (−2.994 kcal/mol), Lys165 (−4.835 kcal/mol), Tyr158 (−2.953 kcal/mol), Met147 (−2.967 kcal/mol), Gly96 (−2.914 kcal/mol) and Ser20 (−2.993 kcal/mol) residues. The binding of **5g** was stabilized by hydrogen bond and a pi-pi stacking interaction. The nitrogen atom of the triazole ring formed a close hydrogen bond with Tyr158 (2.30 Å). The same triazole ring also showed a prominent pi-pi stacking interaction with Tyr158 (1.992 Å). Such hydrogen-bonding and the pi-pi (π - π) stacking interactions serve as “anchor” to guide the ligand into the active site of enzyme and facilitate the steric and electrostatic interactions.

Overall, these results of the molecular docking study and specially the per-residue ligand interaction analysis have shown that the indanol and triazole nucleus act synergistically to attach with the active site of InhA and the substitutions around these scaffolds improve the binding affinity. These results suggest that indanol-1, 2, 3-triazole derivatives have significant affinity for this crucial mycobacterial target InhA and qualify this dimeric scaffold as a promising initiation point for structure-based lead optimization. *In silico* ADME properties of newly synthesized compounds were studied. The results obtained indicate the good % ABS ranging from 69.36 to 95.21 and acceptable drug-likeness score (Supplementary material, Table S2).

In summary, a series of new thirty-two indanol-1, 2, 3-triazole derivatives were synthesized via click chemistry approach. The synthesized compounds were evaluated for their *in vitro* antitubercular activity against *Mycobacterium tuberculosis* H37Rv. The compound **5g** has been identified as an excellent antitubercular agent. It has antitubercular activity with an equivalent to the standard drug, ciprofloxacin having the MIC value 1.56 μ M. Whereas, the other ten compounds, **5a**, **5b**, **5c**, **5d**, **5e**, **5h**, **5i**, **5j**, **5m** and **7b** have exhibited good antitubercular activity with MIC values ranging from 1.56 to 12.5 μ M. The active antitubercular indanol-1, 2, 3-triazole derivatives were evaluated for their cytotoxic effects against HEK 293 (Human Embryonic Kidney) cells. These derivatives did not exhibited cytotoxicity towards the HEK 293 cells (Human Embryonic Kidney). In addition, indanol-1, 2, 3-triazole derivatives **5d**, **5g**, **5i**, **5j**, **5k**, **5p**, **7a**, **7b**, **7k** and **7p** has shown good *in vitro* antimicrobial activities. A molecular docking study was performed to investigate the mode of action of indanol-1, 2, 3-triazole derivatives. These compounds have displayed a high affinity towards the active site of *Mycobacterial enoyl-ACP-reductase* (InhA) enzyme. *In silico* ADME properties of these newly

synthesized compounds were studied. It has been indicated the acceptable drug-likeness score. We feel that the inspiring results obtained will be a good platform for identification of new potent antitubercular and antimicrobial agents.

Declaration of Competing Interest

The authors declare that they have no known competing financial interests or personal relationships that could have appeared to influence the work reported in this paper.

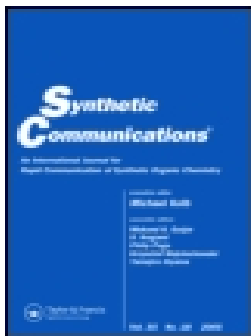
Appendix A. Supplementary data

Supplementary data to this article can be found online at <https://doi.org/10.1016/j.bmcl.2020.127579>.

References

- Fitzpatrick MC, Bauch CT, Townsend JP, Nat AP. Modelling microbial infection to address global health challenges. *Microbiol.* 2019;4:1612.
- World Health Organization (WHO), WHO Global Tuberculosis Report 2019; Geneva, Switzerland, 2019.
- Ang MLT, Zainul Rahim SZ, de Sessions PF, et al. EthA/R-independent killing of mycobacterium tuberculosis by ethionamide. *Front Microbiol.* 2017;8:710.
- Garrido-Cardenas JA, de Lamo-Sevilla C, Cabezas-Fernández MT, Manzano-Agugliaro F, Martínez-Lirola M. Global tuberculosis research and its future prospects. *Tuberculosis.* 2020;121:101917.
- Koul A, Arnould E, Lounis N, Guillemont J, Andries K. The challenge of new drug discovery for Tuberculosis. *Nature.* 2011;469:483.
- Singh V, Mizrahi V. Identification and validation of novel drug targets in Mycobacterium tuberculosis. *Drug Discov Today.* 2017;22:503.
- Bahuguna A, Rawat DS. An overview of new antitubercular drugs, drug candidates, and their targets. *Med Res Rev.* 2020;40:263.
- Christelle B, Anton A, Gerard G, Marcel P, Marius R. Synthesis of enantiomerically pure cis- and trans-1,2-Diaminoindanes. *Tetrahedron Asymmetry.* 1998;9:3263.
- Shapiro S, Weinberg K, Bazga T, Indanols FL. 11. Aminoalkyl ethers. *J Am Chem Soc.* 1958;80:3729.
- Patel VK, Sen DJ, Patel CN. Antimicrobial and antifungal screening of indanone acetic acid derivatives. *J Chem Pharm Res.* 2010;2:50.
- Wang YA, Wu J, Xia P. Synthesis of 1, 1-dimethyl-4-indanol derivatives. *Synth Commun.* 2006;36:2685.
- Kumar L, Prashar D. Recent advancement of indanol derivatives and their biological significance: a review. *Asian J Res Pharm Sci.* 2012;2:9.
- Ali MA, Samy JG, Manogaran E, Sellappan V, Hasan MZ, Ahsan MJ. Synthesis and antimycobacterial evaluation of novel 5,6-dimethoxy-1-oxo-2,5-dihydro-1H-2-indenyl-5, 4-substituted phenyl methanone analogues. *Bioorg Med Chem Lett.* 2009;19:7000.
- Rostovtsev VV, Green LG, Fokin VV, Sharpless KB. A stepwise Huisgen cycloaddition process: copper(I)-catalyzed regioselective “ligation” of azides and terminal alkynes. *Angew Chem Int Ed.* 2002;41:2708.
- Boechat N, Ferreira VF, Ferreira SB, et al. Novel 1, 2, 3-triazole derivatives for use against Mycobacterium tuberculosis H37Rv (ATCC 27294) strain. *J Med Chem.*

- 2011;54:5988.
16. Lima-Neto RG, Cavalcante NNM, Srivastava RM, et al. Synthesis of 1, 2, 3-triazole derivatives and *in vitro* antifungal evaluation on candida strains. *Molecules*. 2012;17:5882.
 17. Senger MR, Gomes LCA, Ferreira SB, Kaiser CR, Ferreira VF, Silva Jr FP. Kinetics studies on the inhibition mechanism of pancreatic α -amylase by glycoconjugated 1H-1, 2, 3-triazoles: a new class of inhibitors with hypoglycemic activity. *ChemBioChem*. 2012;13:1584.
 18. Agalave SG, Maujan SR, Pore VS. Click chemistry: 1, 2, 3-triazoles as pharmacophores. *Chem Asian J*. 2011;6:2696.
 19. Dheer D, Singh V, Shankar R. Medicinal attributes of 1, 2, 3-triazoles: current developments. *Bioorg Chem*. 2017;71:30.
 20. Kumar D, Khare G, Beena KS, Tyagi AK, Singh R, Rawat DS. Novel isoniazid-amidoether derivatives: Synthesis, characterization and antimycobacterial activity evaluation. *Med Chem Commun*. 2015;6:131.
 21. Zhang S, Xu Z, Gao C, et al. Triazole derivatives and their anti-tubercular activity. *Eur J Med Chem*. 2017;138:501.
 22. Nalla V, Shaikh A, Bapat S, et al. Identification of potent chromone embedded [1, 2, 3]-triazoles as novel anti-tubercular agents. *R Soc Open Sci*. 2018;5:171750.
 23. Zhou B, He Y, Zhang X, et al. Targeting mycobacterium protein tyrosine phosphatase B for antituberculosis agents. *Proc Natl Acad Sci. U. S. A.* 2010;107:4573.
 24. Emmadi NR, Bingi C, Kotapalli SS, Ummanni R, Nanubolu JB, Atmakur K. Synthesis and evaluation of novel fluorinated pyrazolo-1, 2, 3-triazole hybrids as anti-mycobacterial agents. *Bioorg Med Chem Lett*. 2015;25:2918.
 25. Sutherland HS, Blaser A, Kmentova I, et al. Synthesis and structure-activity relationships of antitubercular 2-nitroimidazooxazines bearing HETEROCYCLIC SIDE CHAINS. *J Med Chem*. 2010;53:855.
 26. Kamal A, Hussaini SMA, Faazil S, Poornachandra Y, Reddy GN, Kumar CG, Rajput VS, Rani C, Sharma R, Khan IA, Babu NJ. Anti-tubercular agents. Part 8: Synthesis, antibacterial and antitubercular activity of 5-nitrofuran based 1, 2, 3-triazoles. *Bioorg Med Chem Lett* 2013; 23: 6842.
 27. Patil PS, Kasare SL, Haval NB, et al. Novel isoniazid embedded triazole derivatives: synthesis, antitubercular and antimicrobial activity evaluation. *Bioorg Med Chem Lett*. 2020;30:127434.
 28. Phatak PS, Sathe BP, Dhumal ST, et al. Synthesis, antimicrobial evaluation and docking studies of substituted acetylphenoxymethyl-triazolyl-N-phenylacetamides. *J Heterocycl Chem*. 2019;56:1928.
 29. Phatak PS, Bakale RD, Dhumal ST, et al. Synthesis, antitubercular evaluation and molecular docking studies of phthalimide bearing 1,2,3-triazoles. *Synth Commun*. 2019;49:2017.
 30. Collins LA, Franzblau SG. Microplate alamar blue assay versus BACTEC 460 system for high-throughput screening of compounds against Mycobacterium tuberculosis and Mycobacterium avium. *Antimicrob Agents Chemother*. 1997;41:1004.
 31. Malapati P, Krishna VS, Nallangi R, Srilakshmi RR, Sriram D. Identification and development of benzoxazole derivatives as novel bacterial glutamate racemase inhibitors. *Eur J Med Chem*. 2018;145:23.
 32. Agarwal DS, Krishna VS, Sriram D, Yogeewari P, Sakhuja R. Clickable Conjugates of Bile acids and Nucleosides: Synthesis, Characterization, *in vitro* anticancer and antituberculosis studies. *Steroids*. 2018;139:35.
 33. Kumar G, Krishna VS, Sriram D, Jachak SM. Synthesis of carbohydrazides and carboxamides as anti-tubercular agents. *Eur J Med Chem*. 2018;156:871.
 34. Muluk MB, Dhumal ST, Rehman NNMA, Dixit PP, Kharat KR, Haval KP. Synthesis, Anticancer and Antimicrobial Evaluation of New (*E*)-*N*'-Benzylidene-2-(2-ethylpyridin-4-yl)-4-methylthiazole-5-carbohydrazides. *ChemistrySelect*. 2019;4:8993.
 35. Muluk MB, Dhumal ST, Phatak PS, et al. Synthesis, antimicrobial activity, and molecular docking study of formyl-naphthalenylloxymethyl-triazolyl-N-phenylacetamides. *J Heterocycl Chem*. 2019;56:2411.
 36. Barry CE, Lee RE, Mdluli K, et al. Mycolic acids: structure, biosynthesis and physiological functions. *Prog Lipid Res*. 1998;37:143.
 37. Kini SG, Bhat AR, Bryant B, Williamson JS, Dayan FE. Synthesis, antitubercular activity and docking study of novel cyclic azole substituted diphenyl ether derivatives. *Eur J Med Chem*. 2009;44:492.
 38. Desai NC, Somani H, Trivedi A, et al. Synthesis, biological evaluation and molecular docking study of some novel indole and pyridine based 1,3,4-oxadiazole derivatives as potential antitubercular agents. *Bioorg Med Chem Lett*. 2016;26:1776.




Synthesis, anticancer and antimicrobial evaluation of new pyridyl and thiazolyl clubbed hydrazone scaffolds

Mahesh B. Muluk, Akash S. Ubale, Sambhaji T. Dhumal, Naziya N. M. A. Rehman, Prashant P. Dixit, Kiran K. Kharat, Prafulla B. Choudhari & Kishan P. Haval



To cite this article: Mahesh B. Muluk, Akash S. Ubale, Sambhaji T. Dhumal, Naziya N. M. A. Rehman, Prashant P. Dixit, Kiran K. Kharat, Prafulla B. Choudhari & Kishan P. Haval (2019): Synthesis, anticancer and antimicrobial evaluation of new pyridyl and thiazolyl clubbed hydrazone scaffolds, Synthetic Communications, DOI: [10.1080/00397911.2019.1692870](https://doi.org/10.1080/00397911.2019.1692870)

To link to this article: <https://doi.org/10.1080/00397911.2019.1692870>

 View supplementary material 

 Published online: 21 Nov 2019.

 Submit your article to this journal 

 View related articles 

 View Crossmark data 



Synthesis, anticancer and antimicrobial evaluation of new pyridyl and thiazolyl clubbed hydrazone scaffolds

Mahesh B. Muluk^a, Akash S. Ubale^a, Sambhaji T. Dhumal^b, Naziya N. M. A. Rehman^c, Prashant P. Dixit^c, Kiran K. Kharat^d, Prafulla B. Choudhari^e, and Kishan P. Haval^a

^aDepartment of Chemistry, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University SubCampus, Osmanabad, India; ^bDepartment of Chemistry, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad, India; ^cDepartment of Microbiology, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University SubCampus, Osmanabad, India; ^dDepartment of Biotechnology, Deogiri College, Aurangabad, India; ^eDepartment of Pharmaceutical Chemistry, Bharati Vidyapeeth College of Pharmacy, Kolhapur, India

ABSTRACT

A series of new hydrazones bearing pyridyl and thiazolyl scaffolds have been synthesized and evaluated for their *in vitro* anticancer and antimicrobial activities. The anticancer activity was evaluated against the A549 lung cancer cell line. The eight hydrazone derivatives have shown better anticancer activity than positive control doxorubicin against the A549 lung cancer cell line. The antimicrobial activity was evaluated against bacterial and fungal pathogens by using well diffusion method. The four hydrazone derivatives have displayed good antimicrobial activities. Molecular docking studies of the synthesized hydrazone derivatives revealed good binding via hydrogen bond interactions with key residues on active sites as well as neighboring residues with an active site of Focal adhesion kinase (PDB ID 2JKO). A computational study for the prediction of absorption, distribution, metabolism, and excretion (ADME) properties of all compounds has also been performed.

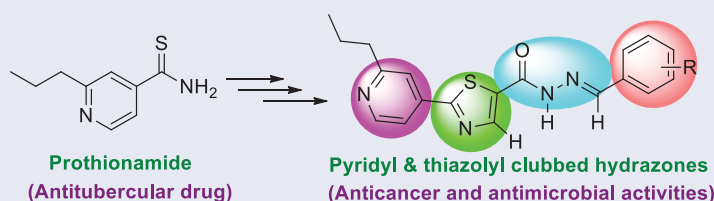
ARTICLE HISTORY

Received 19 September 2019

KEYWORDS



Anticancer activity; antimicrobial activity; thiazoles; hydrazones; molecular docking study; ADME prediction

GRAPHICAL ABSTRACT




Introduction

Cancer has become the most common life-threatening disease representing a major health problem worldwide. In spite of the extensive research in cancer therapy, there is

CONTACT Kishan P. Haval  havalkp@gmail.com  Department of Chemistry, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University SubCampus, Osmanabad, India

Color versions of one or more of the figures in the article can be found online at www.tandfonline.com/lsyc.

 Supplemental data for this article is available online at <https://doi.org/10.1080/00397911.2019.1692870>

still an increasing need for new treatments for cancer.^[1] The discovery of new chemotherapeutics is of prime importance due to the essential ability of tumor cells to develop resistance to current agents. The development of multiple drug resistance to antitumor drugs is a major problem in chemotherapy. Hence, research for the invention of novel agents for treating cancer is of prime importance.^[2] It has also been reported that lung cancer is the prominent cause of cancer-related deaths.^[3] The most common lung cancer i.e. non-small cell lung cancer (NSCLC) poses a continuous and serious threat to public health. In spite of significant improvements in both diagnostic and therapeutic approaches, the overall survival for NSCLC patients remain poor.^[4] One main obstacle for the treatment of NSCLC is that most patients are diagnosed at a late stage when the prognosis is poor and therapeutic options are limited.^[5]

Diversely substituted thiazole derivatives embedded with a variety of functional groups are found to exist in a large number of well-known naturally occurring compounds such as thiamin and commercial synthetic drugs.^[6] A literature survey revealed that thiazole derivatives are found to have many therapeutic activities such as anticancer,^[7] antimicrobial,^[8] anti-inflammatory,^[9] antioxidants,^[10] antihypertension^[11] and antitubercular.^[12] Functionalized pyridines are accompanying many pharmacological activities, such as antioxidant, antimicrobial,^[13] β -glucuronidase^[14] and cytotoxicity against several human cancer cell lines.^[15] Fused heterocyclic compounds with pyridinyl and thiazolyl rings in a molecular frame are common structural designs with substantial applications in medicinal chemistry.^[16]

In particular, many studies have pointed out the pivotal role of the hydrazone moiety for anticancer drug development.^[17] The synthesis of the hydrazone derivatives have been found to paid more attention due to their antitumor activity against various cancer cell lines such as A549 human lung adenocarcinoma, MCF-7 human breast adenocarcinoma, U-373 MG human glioblastoma, SK-OV-3 human ovary carcinoma, SK-MEL-2 human melanoma, HCT15 human colon carcinoma, MIA PaCa-2 human pancreas carcinoma and HepG2 human hepatocellular carcinoma cell lines.^[18] Some of the representative compounds with pyridine, thiazole and hydrazone scaffolds, reported in the literature ^[19–22] are shown in [Figure 1](#).

Recently, we have reported the synthesis, anticancer and antimicrobial activities of some hydrazone derivatives starting from an antitubercular drug, ethionamide.^[23] Considering the biological significance of pyridines, thiazoles and substituted hydrazones and in continuation of our ongoing research on the synthesis of new bioactive molecules,^[24] herein we have reported a new series of pyridyl and thiazolyl clubbed hydrazone derivatives (**6a–k**) with anticancer and antimicrobial activities starting from an antitubercular drug, prothionamide.

Results and discussions

Chemistry

The reaction sequence employed for the synthesis of the hydrazone derivatives (**6a–k**) has been shown in [Scheme 1](#). In the first step, 2-propylpyridine-4-carbothioamide (**1**) and ethyl 3-bromo-2-oxopropanoate (**2**) were refluxed in ethanol for 5 h to obtain ethyl 2-(2-propylpyridin-4-yl)thiazole-5-carboxylate (**3**) with 85% yield. The ethyl

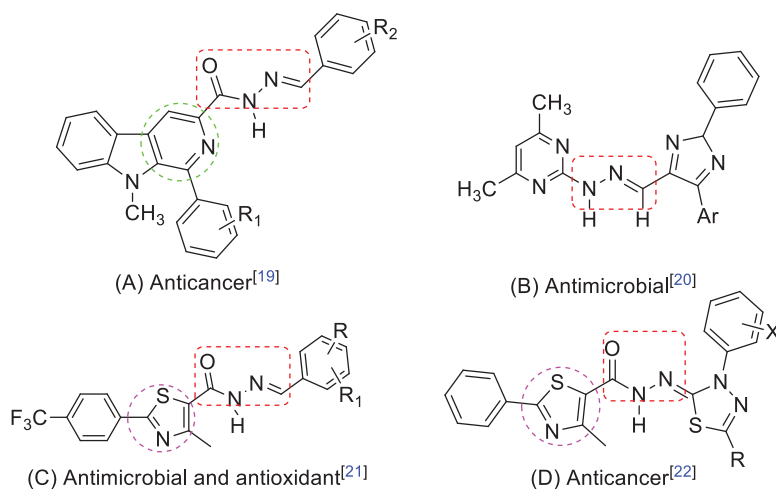
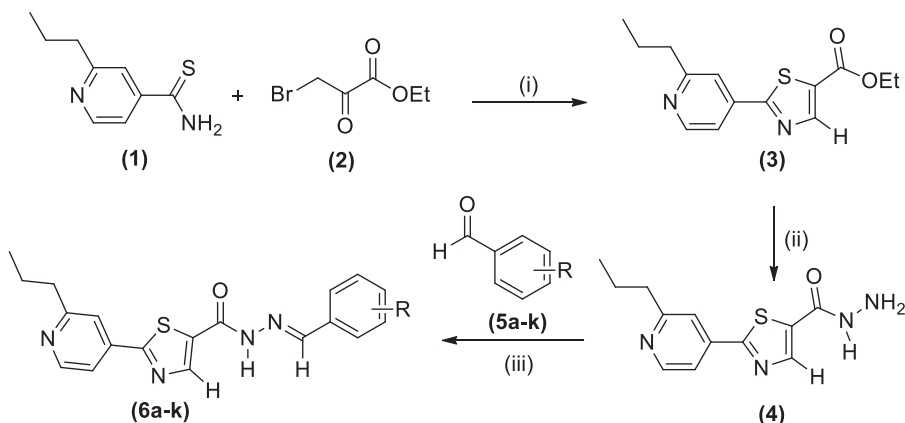


Figure 1. Pyridine, thiazole, and hydrazone containing bioactive molecules.



Scheme 1. Reaction conditions: (i) EtOH, reflux, 5 h; (ii) $\text{H}_2\text{N}-\text{NH}_2 \cdot \text{H}_2\text{O}$, EtOH, reflux, 4 h; (iii) DIPEAc, rt, 30 min.

2-(2-propylpyridin-4-yl)thiazole-5-carboxylate (**3**) was condensed with hydrazine hydrate in refluxed ethanol to furnish a key intermediate, 2-(2-propylpyridin-4-yl)thiazole-5-carbohydrazide (**4**) with 76% yield. The condensations of aromatic aldehydes (**5a-k**) and 2-(2-propylpyridin-4-yl)thiazole-5-carbohydrazide (**4**) was carried out in diisopropylethylammonium acetate (DIPEAc) to obtain the corresponding substituted (*E*)-*N'*-benzylidene-2-(2-propylpyridin-4-yl)thiazole-5-carbohydrazides (**6a-k**) with 80-90% yields. The obtained products were purified by crystallization using ethanol.

The structures of synthesized (*E*)-*N'*-benzylidene-2-(2-propylpyridin-4-yl)thiazole-5-carbohydrazides (**6a-k**) were established based on their ^1H and ^{13}C NMR spectral data and satisfactory HRMS analysis. The IR spectrum of hydrazone **6b** shows characteristic peaks at 3273 and 1663 cm^{-1} indicate the presence of amide N-H and amido carbonyl groups, respectively. The ^1H NMR spectrum of **6b** displays two singlet peaks at δ 8.40 and 10.52 ppm indicates the presence of thiazolyl-H and amide N-H, respectively. According to the literature, the singlet at deshielded region, $\delta = 8.27-8.87$ ppm indicates

the presence of $-\text{CH}=\text{N}$ signal, exclusively accounts for the formation of *E*-isomers.^[25] In ^{13}C NMR spectrum of **6b**, the peaks at δ 14.04, 23.24, and 40.58 ppm are due to the carbons of the *n*-propyl group attached to a pyridine ring. The peak at δ 166.69 ppm indicates the presence of the amide carbonyl group. The HRMS analysis of compound **6b**, displays $(\text{M} + \text{H})^+$ peak at 419.0501 for its molecular formula $\text{C}_{19}\text{H}_{16}\text{Cl}_2\text{N}_4\text{OS}$. The spectral data of the remaining compounds are consistent with the assigned structures.

Anticancer activity

All the synthesized hydrazones (**6a–k**) were screened for their *in vitro* anticancer activity against A549 lung cancer cell line by using MTT assay.^[26] The compounds dilutions (μM) were prepared in DMSO. The compounds were added to the 24 h grown A549 cells in RPMI 1640 with FBS (10% *v/v*). The seeding density for the cell line was $>5 \times 10^3$ cells per well/200 mL of medium. The cells were incubated for 24 h. The IC_{50} was determined by using an EIA scan at 570 nm (Figure 2). Inhibition of cell proliferation by these active compounds at various concentrations was measured and their IC_{50} (the concentration that causes a 50% cell proliferation inhibition) values were calculated and summarized in Table 1. The doxorubicin was used as a positive control. The compounds with IC_{50} lower than 20 μM are found to be active against the cells.

In the present study, we have prepared hydrazones having electron-withdrawing substituents. The nitro substituent at *ortho* position displayed better anticancer activity as compared to *meta* and *para* position. The hydrazones with halogen substituents at all positions (*ortho*, *meta* and *para*) have shown good anticancer activity. Exceptionally, the compound **6i** with *ortho*-chloro substituent on the aryl ring showed a very weak activity. In fact, out of eleven hydrazone derivatives, seven derivatives having one or more either chloro or bromo showed better effects than the positive control, doxorubicin against A549 lung cancer cells.

Antimicrobial activity

The newly synthesized hydrazone derivatives (**6a–k**) were screened for *in vitro* antibacterial activity against bacterial strains *Staphylococcus aureus* ATCC 6538, *Bacillus megaterium* ATCC 2326, *Bacillus subtilis* ATCC 6633, *Escherichia coli* ATCC8739, *Salmonella typhi* ATCC9207, *Shigella boydii* ATCC 12034, *Enterobacter aerogenes* ATCC13048, *Pseudomonas aeruginosa* ATCC9027, *Salmonella abony* NCTC6017 and antifungal activity against fungal strains *Aspergillus niger* ATCC 16404, *Saccharomyces cerevisiae* ATCC 9763, *Candida albicans* ATCC10231. Antimicrobial activity was performed by using a well diffusion method.^[27] Streptomycin and fluconazole were used as antibacterial and antifungal standard reference compounds, respectively. The results of antibacterial and antifungal activities in the zone of inhibition (mm) are presented in Table 2.

The structure-activity relationship analysis revealed that among the hydrazone derivatives (**6a–k**), compound **6b** (R = 3, 5-Dichloro) and **6c** (R = 4-Chloro) showed moderate activity against almost all the pathogens. The compounds **6e** (R = 3-Nitro), **6f** (R = 2-Nitro) and **6g** (R = 3-Chloro) have shown moderate activity against pathogens *S. typhi*, *E. aerogenes*, *B. subtilis*, *S. aureus*, *A. niger*, and *C. albicans*. The convincing

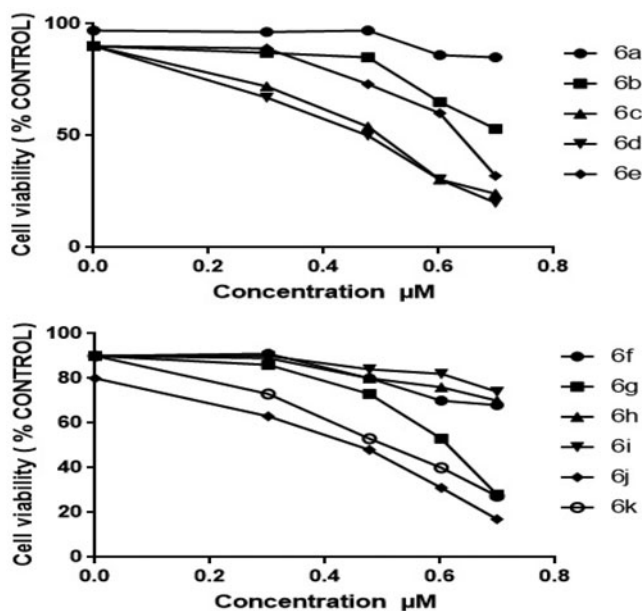


Figure 2. Antiproliferative action of hydrazone derivatives (6a–k).

antimicrobial activity of synthesized hydrazones (6a–k) in our preliminary screening (Table 2) leads us to determine the minimum inhibitory concentration. The MIC was deduced by following the method and guidelines of the Clinical and Laboratory Standard Institute (CLSI) (Table 3). In this study, the MIC was determined for the most potent selected antimicrobial compounds 6b, 6e, 6f, and 6g.

Molecular docking study

Docking analysis was utilized to establish the mode of action of synthesized hydrazones (6a–k) for their anticancer potential. Grip based docking analysis was performed keeping protein structure in rigid conformation and ligand structures in flexible conformation with cocrystallized bis-anilino pyrimidine inhibitor as a reference molecule.^[28] Molecular docking was performed using the crystal structure of the Focal adhesion kinase (PDB ID 2JKO). Focal adhesion kinase is a key regulator of cell division and proliferation and it also possesses all the critical attributes to act as a promising anticancer target. The compound 6c was found to be interacting with the formation of two hydrogen bond interactions with ILE428, GLU430 and hydrophobic interactions with ASN551, GLY563, ASP564, LEU567 (Figure 3). The compound 6f showed hydrogen bond interaction with GLU430 and hydrophobic interactions with GLY429 and GLU430 (Figure 4). The bonding interactions of the remaining compounds are given in supplementary material.

ADME predictions

ADME predictions of all the synthesized hydrazone derivatives (6a–k) were predicted using Swiss ADME portal (Table 4).^[29] All the molecules have shown excellent

Table 1. Antiproliferative activity of hydrazone derivatives (6a–k).

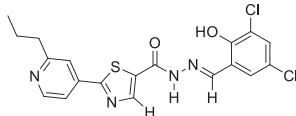
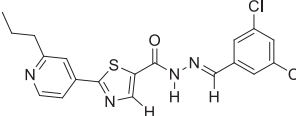
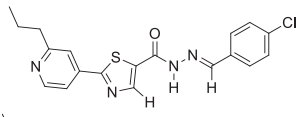
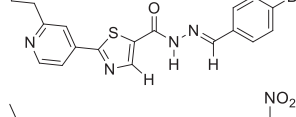
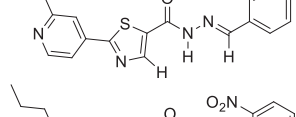
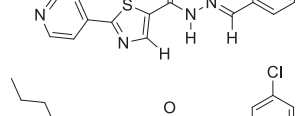
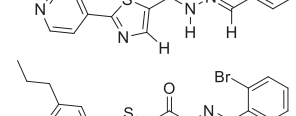
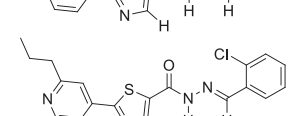
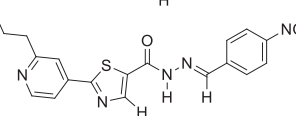
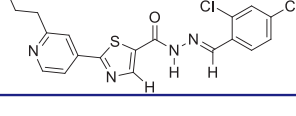

Entry	Compounds (6a–k)	IC ₅₀ (μM)
6a		3.83 ± 0.23
6b		3.81 ± 0.20
6c		3.11 ± 0.10
6d		4.27 ± 0.15
6e		50.92 ± 0.55
6f		3.04 ± 0.10
6g		5.84±0.20
6h		3.46 ± 0.40
6i		79.83 ± 0.37
6j		20.92 ± 0.18
6k		3.61 ± 0.15

Table 2. Antimicrobial activity of hydrazone derivatives (6a–k).

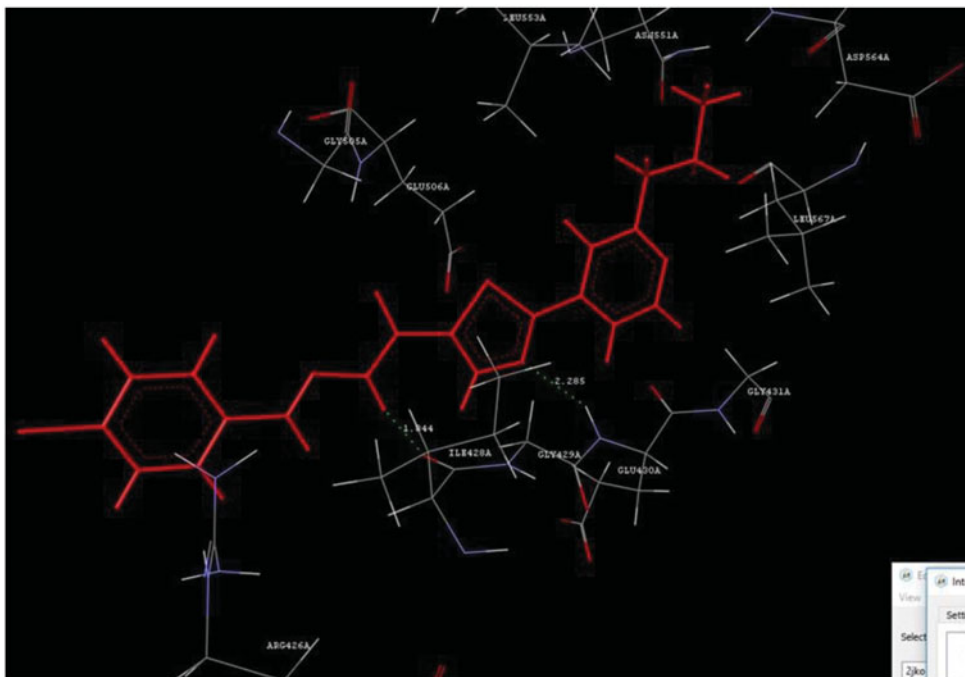
Entry	<i>S. typhi</i>	<i>E. aerogenes</i>	<i>B. subtilis</i>	<i>P. aeruginosa</i>	<i>S. abony</i>	<i>E. coli</i>	<i>S. aureus</i>	<i>S. boydii</i>	<i>B. cerus</i>	<i>A. niger</i>	<i>S. cerevisiae</i>	<i>C. albicans</i>
6a	–	–	30	–	–	–	15	–	–	–	–	–
6b	12	14	20	11	16	14	5	14	13	12	18	13
6c	12	16	10	9	16	14	5	14	12	12	–	–
6d	–	20	9	–	–	–	13	–	–	7	16	–
6e	9	19	10	–	14	–	16	–	–	9	–	6
6f	13	12	12	–	14	–	8	–	12	9	–	7
6g	18	16	14	–	13	–	6	–	7	6	10	7
6h	13	–	–	–	–	–	15	–	–	–	15	–
6i	15	20	–	–	–	–	7	–	–	–	–	–
6j	–	–	6	–	–	–	5	–	–	–	–	–
6k	11	–	–	–	–	–	8	–	–	–	–	–
Streptomycin	33	33	32	32	32	29	29	34	33	NA	NA	NA
Fluconazole	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA	30	30	30

NA: not applicable; (–): inactive.

Table 3. MIC values of most potent antimicrobial hydrazone derivatives ($\mu\text{g/mL}$).

Entry	<i>B. subtilis</i>	<i>E. aerogenes</i>	<i>C. albicans</i>
6b	90 \pm 0.47	170 \pm 0.83	150 \pm 0.78
6c	260 \pm 1.67	120 \pm 0.54	280 \pm 2.19
6f	75 \pm 1.12	85 \pm 0.76	210 \pm 1.57
6g	120 \pm 2.37	150 \pm 1.43	250 \pm 0.75
Streptomycin	25 \pm 0.34	30 \pm 0.59	NA
Fluconazole	NA	NA	30 \pm 0.17

NA: not applicable.

**Figure 3.** Docking interactions of 6c.

physicochemical parameters with low Lipinski violation, which is desirable for the oral absorption of drug candidates.

Experimental

The commercially available laboratory grade chemicals were used. The IR spectra were recorded on Bruker FT-IR spectrometer. The ^1H and ^{13}C NMR spectra were recorded on Bruker DRX-400 NMR spectrometer. The trimethylsilane (TMS) was used as an internal standard. The coupling constants (J) are reported in hertz (Hz).

Synthesis of substituted (*E*)-*N'*-benzylidene-2-(2-propylpyridin-4-yl)thiazole-5-carbohydrazides (6a–k)

The substituted aromatic aldehydes (5a–k) (1.0 mmol) and 2-(2-propylpyridin-4-yl)thiazole-5-carbohydrazide (4) (1.0 mmol) was dissolved in diisopropylethylammonium

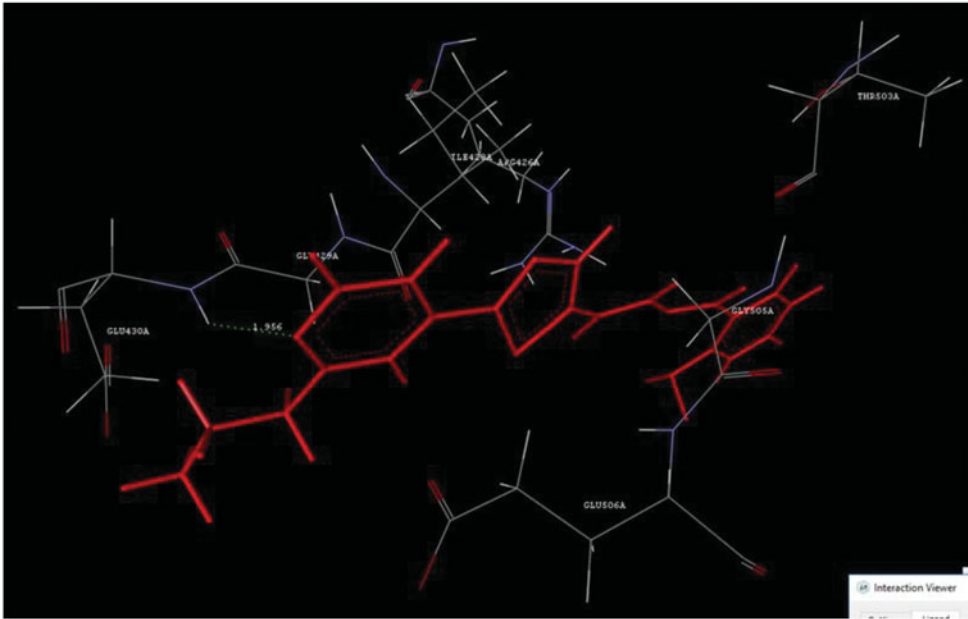


Figure 4. Docking interactions of 6f.

Table 4. Pharmacokinetic parameters of hydrazone derivatives (6a–k).

Entry	H-bond acceptors	H-bond donors	MR	TPSA	XLOGP3	Bioavailability score
6a	5	2	113.14	115.71	4.88	0.55
6b	4	1	111.11	95.48	5.23	0.55
6c	4	1	106.1	95.48	4.61	0.55
6d	4	1	108.79	95.48	4.67	0.55
6e	6	1	109.92	141.3	3.81	0.55
6f	6	1	109.92	141.3	3.81	0.55
6g	4	1	106.1	95.48	4.61	0.55
6h	4	1	108.79	95.48	4.67	0.55
6i	4	1	106.1	95.48	4.61	0.55
6j	6	1	109.92	141.3	3.81	0.55
6k	4	1	111.11	95.48	5.23	0.55

acetate (DIPEAc) (5 ml) and stirred at room temperature for 30 min. After completion of reaction, the reaction mixture was poured on cold water. The solid obtained was filtered and washed with cold water. The products obtained were crystallized from ethanol to furnish corresponding substituted (*E*)-*N'*-benzylidene-2-(2-propylpyridin-4-yl)thiazole-5-carbohydrazides (6a–k) with 80–90% yields

(*E*)-*N'*-(3,5-Dichloro-2-hydroxybenzylidene)-2-(2-propylpyridin-4-yl)thiazole-5-carbohydrazide (6a)

Yield: 85%; M. P.: 220–222 °C; IR (Neat) ν cm^{-1} : 3424, 3116, 2907, 2840, 1682, 1600, 1534, 1444, 1347, 1285, 1222, 1177, 994, 849, 796, 717; ^1H NMR (400 MHz, CDCl_3) δ = 1.08 (t, J = 6.7 Hz, 3H, CH_3), 1.90 (m, 2H, CH_2), 2.93 (t, J = 6.7 Hz, 2H, CH_2), 7.39–7.38 (m, 1H, Ar-H), 7.44 (s, 1H, Ar-H), 7.77 (d, J = 12.9 Hz, 2H, Ar-H), 8.45 (s, 1H, thiazolyl-H), 8.69 (s, 2H, Ar-H), 11.23 (s, 1H, Ar-OH), 12.00 (s, 1H, amido-NH);

^{13}C NMR (100 MHz, $\text{CDCl}_3 + \text{DMSO-d}_6$) $\delta = 13.87, 23.06, 29.62, 119.55, 122.62, 123.73, 126.69, 128.43, 131.28, 139.33, 148.88, 149.31, 150.17, 152.94, 156.59, 166.33$; HRMS (ESI) $^+$ calcd. for $\text{C}_{19}\text{H}_{16}\text{Cl}_2\text{N}_4\text{O}_2\text{S}$ $[\text{M} + \text{H}]^+$: 435.0371 and found 435.0443.

Conclusions

In summary, we have reported new pyridyl and thiazolyl clubbed hydrazone scaffolds starting from an antitubercular drug, prothionamide. The synthesized hydrazone derivatives were evaluated for their *in vitro* antitumor activity against the A549 lung cancer cells. As compared to the standard drug, doxorubicin, the hydrazones **6a**, **6b**, **6c**, **6d**, **6f**, **6g**, **6h**, and **6k** were shown better inhibitory activity with MIC values 3.83, 3.81, 3.11, 3.04, 4.27, 5.84, 3.46, and 3.61 μM , respectively. The synthesized hydrazone derivatives have also been evaluated for their antimicrobial activity against gram-positive and gram-negative pathogens. Among them, hydrazone derivatives **6b**, **6c**, **6f**, and **6g** have displayed good antimicrobial activities. Besides, the molecular docking study was performed using the crystal structure of the Focal adhesion kinase (PDB ID 2JKO). We believe these results laid a foundation for further improving the potency and the selectivity of this series of compounds as anticancer and antimicrobial agents.

Full experimental detail, ^1H and ^{13}C NMR spectra, HRMS spectra and docking images, these materials can be found via the “Supplementary Content” section of this article’s webpage.

Acknowledgment

Authors are thankful to Prof. R. A. Mane for their guidance and valuable discussions. We are also thankful to Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University Aurangabad for financial assistance (File No. STAT/V1/RG/Dept/2019-20/323-324).

Funding

This work was supported by Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University Aurangabad for financial assistance.

References

- [1] Gabr, M. T.; El-Gohary, N. S.; El-Bendary, E. R.; El-Kerdawy, M. M. Synthesis and *in Vitro* Antitumor Activity of New Series of Benzothiazole and Pyrimido[2,1-*b*]Benzothiazole Derivatives. *Eur. J. Med. Chem.* **2014**, *85*, 576–592. doi:10.1016/j.ejmech.2014.07.097.
- [2] (a) Farkona, S.; Diamandis, E. P.; Blasutig, I. M. Cancer Immunotherapy: The Beginning of the End of Cancer? *BMC Med.* **2016**, *14*, 73. doi:10.1186/s12916-016-0623-5. (b) Bhatt, P.; Kumar, M.; Jha, A. Design, Synthesis and Anticancer Evaluation of Oxa/Thiadiazolylhydrazones of Barbituric and Thiobarbituric Acid: A Collective *in Vitro* and *in Silico* Approach. *ChemistrySelect.* **2018**, *3*, 7060–7065. doi:10.1002/slct.201800832.
- [3] Xue, Y.; Hou, S.; Ji, H.; Han, X. Evolution from Genetics to Phenotype: Reinterpretation of NSCLC Plasticity, Heterogeneity, and Drug Resistance. *Protein Cell.* **2017**, *8*, 178–190. doi:10.1007/s13238-016-0330-1.

- [4] Li, L.; Zhu, T.; Gao, Y.-F.; Zheng, W.; Wang, C.-J.; Xiao, L.; Huang, M.-S.; Yin, J.-Y.; Zhou, H.-H.; Liu, Z.-Q. Targeting DNA Damage Response in the Radio(Chemo)Therapy of Non-Small Cell Lung Cancer. *IJMS*. **2016**, *17*, 839. doi:10.3390/ijms17060839.
- [5] Ansari, J.; Shackelford, R. E.; El-Osta, H. Epigenetics in Non-Small Cell Lung Cancer: From Basics to Therapeutics. *Transl. Lung Cancer Res*. **2016**, *5*, 155–171. doi:10.21037/tlcr.2016.02.02.
- [6] (a) Ayati, A.; Emami, S.; Asadipour, A.; Shafiee, A.; Foroumadi, A. Recent Applications of 1,3-Thiazole Core Structure in the Identification of New Lead Compounds and Drug Discovery. *Eur. J. Med. Chem.* **2015**, *97*, 699–718. doi:10.1016/j.ejmech.2015.04.015. (b) Das, D.; Sikdar, P.; Bairagi, M. Recent Developments of 2-Aminothiazoles in Medicinal Chemistry. *Eur. J. Med. Chem* **2016**, *109*, 89–98. doi:10.1016/j.ejmech.2015.12.022.
- [7] (a) Gomha, S. M.; Khalil, K. D. A Convenient Ultrasound-Promoted Synthesis and Cytotoxic Activity of Some New Thiazole Derivatives Bearing a Coumarin Nucleus. *Molecules*. **2012**, *17*, 9335–9347. doi:10.3390/molecules17089335. (b) Gomha, S. M.; Salah, T. A.; Abdelhamid, A. O. Synthesis, Characterization and Pharmacological Evaluation of Some Novel Thiadiazoles and Thiazoles Incorporating Pyrazole Moiety as Potent Anticancer Agents. *Monatsh Chem*. **2015**, *146*, 149–158. doi:10.1007/s00706-014-1303-9.
- [8] Karegoudar, P.; Karthikeyan, M. S.; Prasad, D. J.; Mahalinga, M.; Holla, B. S.; Kumari, N. S. Synthesis of Some Novel 2,4-Disubstituted Thiazoles as Possible Antimicrobial Agents. *Eur. J. Med. Chem.* **2008**, *43*, 261–267. doi:10.1016/j.ejmech.2007.03.014.
- [9] Roy, N. K.; Bordoloi, D.; Monisha, J.; Padmavathi, G.; Kotoky, J.; Golla, R.; Kunnumakkara, A. B. Specific Targeting of Akt Kinase Isoforms: Taking the Precise Path for Prevention and Treatment of Cancer. *CDT*. **2017**, *18*, 421–435. doi:10.2174/1389450117666160307145236.
- [10] Cassinelli, G.; Zuco, V.; Gatti, L.; Lanzi, C.; Zaffaroni, N.; Colombo, D.; Perego, P. Targeting the Akt Kinase to Modulate Survival, Invasiveness and Drug Resistance of Cancer Cells. *CMC*. **2013**, *20*, 1923–1945. doi:10.2174/09298673113209990106.
- [11] Gyoba, J.; Shan, S.; Roa, W.; Bedard, E. L. R. Diagnosing Lung Cancers through Examination of Micro-RNA Biomarkers in Blood, Plasma, Serum and Sputum: A Review and Summary of Current Literature. *IJMS*. **2016**, *17*, 494. doi:10.3390/ijms17040494.
- [12] Abhale, Y. K.; Shinde, A. D.; Deshmukh, K. K.; Nawale, L.; Sarkar, D.; Choudhari, P. B.; Kumbhar, S. S.; Mhaske, P. C. Synthesis, Antimycobacterial Screening and Molecular Docking Studies of 4-Aryl-4'-Methyl-2'-Aryl-2,5'-Bisthiazole Derivatives. *Med. Chem. Res*. **2017**, *26*, 2889–2899. doi:10.1007/s00044-017-1988-5.
- [13] (a) Vicini, P.; Incerti, M.; La Colla, P.; Loddo, R. Anti-HIV Evaluation of Benzo[d]Isothiazole Hydrazones. *Eur. J. Med. Chem.* **2009**, *44*, 1801–1807. doi:10.1016/j.ejmech.2008.05.030. (b) Jin, Y.; Tan, Z.; He, M.; Tian, B.; Tang, S.; Hewlett, I.; Yang, M. SAR and Molecular Mechanism Study of Novel Acylhydrazone Compounds Targeting HIV-1 CA. *Bioorg. Med. Chem.* **2010**, *18*, 2135–2140. doi:10.1016/j.bmc.2010.02.003.
- [14] (a) Bedia, K. K.; Elcin, O.; Seda, U.; Fatma, K.; Nathaly, S.; Sevim, R.; Dimoglo, A. Synthesis and Characterization of Novel Hydrazide-Hydrazones and the Study of Their Structure-Antituberculosis Activity. *Eur. J. Med. Chem.* **2006**, *41*, 1253–1261. doi:10.1016/j.ejmech.2006.06.009. (b) Eswaran, S.; Adhikari, A. V.; Chowdhury, I. H.; Pal, N. K.; Thomas, K. D. New Quinoline Derivatives: synthesis and Investigation of Antibacterial and Antituberculosis Properties. *Eur. J. Med. Chem.* **2010**, *45*, 3374–3383. doi:10.1016/j.ejmech.2010.04.022.
- [15] (a) Bondock, S.; Naser, T.; Ammar, Y. A. Synthesis of Some New 2-(3-Pyridyl)-4,5-Disubstituted Thiazoles as Potent Antimicrobial Agents. *Eur. J. Med. Chem.* **2013**, *62*, 270–279. doi:10.1016/j.ejmech.2012.12.050. (b) Dhumal, S. T.; Deshmukh, A. R.; Bhosle, M. R.; Khedkar, V. M.; Nawale, L. U.; Sarkar, D.; Mane, R. A. Synthesis and Antitubercular Activity of New 1,3,4-Oxadiazoles Bearing Pyridyl and Thiazolyl Scaffolds. *Bioorg. Med. Chem. Lett.* **2016**, *26*, 3646–3651. doi:10.1016/j.bmcl.2016.05.093.

- [16] Dhumal, S. T.; Deshmukh, A. R.; Khillare, L. D.; Arkile, M.; Sarkar, D.; Mane, R. A. Synthesis and Antitubercular Activity of New Thiazolidinones with Pyrazinyl and Thiazolyl Scaffolds. *J. Heterocyclic Chem.* **2017**, *54*, 125–130. doi:10.1002/jhet.2552.
- [17] (a) Kumar, P.; Narasimhan, B. Hydrazides/Hydrazones as Antimicrobial and Anticancer Agents in the New Millennium. *Mini-Rev. Med. Chem.* **2013**, *13*, 971–987. doi:10.2174/1389557511313070003. (b) Xia, Y.; Fan, C.-D.; Zhao, B.-X.; Zhao, J.; Shin, D.-S.; Miao, J.-Y. Synthesis and Structure-Activity Relationships of Novel 1-Arylmethyl-3-Aryl-1H-Pyrazole-5-Carbohydrazone Derivatives as Potential Agents against A549 Lung Cancer Cells. *Eur. J. Med. Chem.* **2008**, *43*, 2347–2353. doi:10.1016/j.ejmech.2008.01.021.
- [18] (a) Narang, R.; Narasimhan, B.; Sharma, S. A. A Review on Biological Activities and Chemical Synthesis of Hydrazide Derivatives. *CMC.* **2012**, *19*, 569–612. doi:10.2174/092986712798918789. (b) Vogel, S.; Kaufmann, D.; Pojarová, M.; Müller, C.; Pfaller, T.; Kühne, S.; Bednarski, P. J.; Angerer, E. V. Hydrazones of 2-Phenylindole-3-Carbaldehydes as Novel Antimitotic Agents. *Bioorg. Med. Chem.* **2008**, *16*, 6436–6447. doi:10.1016/j.bmc.2008.04.071. (c) Alam, M. S.; Choi, S.-U.; Lee, D.-U. Synthesis, Anticancer, and Docking Studies of Salicyl-Hydrazone Analogues: A Novel Series of Small Potent Tropomyosin Receptor Kinase a Inhibitors. *Bioorg. Med. Chem.* **2017**, *25*, 389–396. doi:10.1016/j.bmc.2016.11.005.
- [19] Barbosa, V. A.; Formagio, A. S. N.; Savariz, F. C.; Foglio, M. A.; Spindola, H. M.; de Carvalho, J. E.; Meyer, E.; Sarragiotto, M. H. Synthesis and Antitumor Activity of β -Carboline 3-(Substituted-Carbohydrazone) Derivatives. *Bioorg. Med. Chem.* **2011**, *19*, 6400–6408. doi:10.1016/j.bmc.2011.08.059.
- [20] Kamal, R.; Kumar, R.; Kumar, V.; Bansal, K. K.; Sharma, P. C. Synthesis, Anthelmintic and Antimicrobial Evaluation of New 2-Arylidene-1-(4-Methyl-6-Phenylpyrimidin-2-yl)Hydrazines. *ChemistrySelect.* **2019**, *4*, 713–717. doi:10.1002/slct.201802822.
- [21] Nastasa, C.; Tipericiu, B.; Duma, M.; Benedec, D.; Oniga, O. New Hydrazones Bearing Thiazole Scaffold: synthesis, Characterization, Antimicrobial and Antioxidant Investigation. *Molecules.* **2015**, *20*, 17325–17338. doi:10.3390/molecules2009917325.
- [22] Gomha, S. M.; Kheder, N. A.; Abdelaziz, M. R.; Mabkhot, Y. N.; Alhajoj, A. M. A Facile Synthesis and Anticancer Activity of Some Novel Thiazoles Carrying 1,3,4-Thiadiazole Moiety. *Chem. Cent. J.* **2017**, *11*, 25. doi:10.1186/s13065-017-0255-7.
- [23] Muluk, M. B.; Dhumal, S. T.; Rehman, N. N. M. A.; Dixit, P. P.; Kharat, K. R.; Haval, K. P. Synthesis, Anticancer and Antimicrobial Evaluation of New (*E*)-*N'*-Benzylidene-2-(2-Ethylpyridin-4-yl)-4-Methylthiazole-5-Carbohydrazides. *ChemistrySelect.* **2019**, *4*, 8993–8997. doi:10.1002/slct.201902030.
- [24] (a) Phatak, P. S.; Bakale, R. D.; Dhumal, S. T.; Dahiwade, L. K.; Choudhari, P. B.; Siva Krishna, V.; Sriram, D.; Haval, K. P. Synthesis, Antitubercular Evaluation and Molecular Docking Studies of Phthalimide Bearing 1,2,3-Triazoles. *Synth. Commun.* **2019**, *49*, 2017–2028. doi:10.1080/00397911.2019.1614630. (b) Muluk, M. B.; Dhumal, S. T.; Phatak, P. S.; Rehman, N. N. M. A.; Dixit, P. P.; Choudhari, P. B.; Mane, R. A.; Haval, K. P. Synthesis, in Vitro Evaluation and Molecular Docking Study of Formyl-naphthalenyl-oxymethyl-triazolyl-N-Phenylacetamides. *J. Heterocyclic Chem.* **2019**, *56*, 2411–2418. doi:10.1002/jhet.3628. (c) Kulkarni, R. S.; Haval, N. B.; Kulkarni, J. A.; Dixit, P. P.; Haval, K. P. Synthesis, Characterization and Biological Evaluation of Substituted 2-Phenoxy nicotinaldehydes as α -Amylase Inhibitors. *ECB.* **2019**, *8*, 26–30. doi:10.17628/ecb.2019.8.26-30.
- [25] Baldisserotto, A.; Demurtas, M.; Lampronti, L.; Moi, D.; Balboni, G.; Vertuani, S.; Manfredini, S.; Onnis, V. Benzofuran Hydrazones as Potential Scaffolds in the Development of Multifunctional Drugs: Synthesis and Evaluation of Antioxidant, Photoprotective and Antiproliferative Activity. *Eur. J. Med. Chem.* **2018**, *156*, 118–125. doi:10.1016/j.ejmech.2018.07.001.
- [26] Dhumal, S. T.; Deshmukh, A. R.; Kharat, K. R.; Sathe, B. R.; Chavan, S. S.; Mane, R. A. Copper Fluorapatite Assisted Synthesis of New 1,2,3-Triazoles Bearing a Benzothiazolyl

- Moiety and Their Antibacterial and Anticancer Activities. *New J. Chem.* **2019**, *43*, 7663–7673. doi:[10.1039/c9nj00377k](https://doi.org/10.1039/c9nj00377k).
- [27] Phatak, P. S.; Sathe, B. P.; Dhumal, S. T.; Rehman, N. N. M. A.; Dixit, P. P.; Khedkar, V. M.; Haval, K. P. Synthesis, Antimicrobial Evaluation and Docking Studies of Substituted Acetylphenoxymethyl-triazolyl-*N*-Phenylacetamides. *J. Heterocyclic Chem.* **2019**, *56*, 1928–1938. DOI doi:[10.1002/jhet.3568](https://doi.org/10.1002/jhet.3568).
- [28] Kondhare, D. D.; Gyananath, G.; Tamboli, Y.; Kumbhar, S. S.; Choudhari, P. B.; Bhatia, M. S.; Zubaidha, P. K. An Efficient Synthesis of Flavanones and Their Docking Studies with Aldose Reductase. *Med. Chem. Res.* **2017**, *26*, 987–998. doi:[10.1007/s00044-017-1813-1](https://doi.org/10.1007/s00044-017-1813-1).
- [29] Daina, A.; Michielin, O.; Zoete, V. A Boiled-Egg to Predict Gastrointestinal Absorption and Brain Penetration of Small Molecules. *Chem Med Chem.* **2016**, *11*, 1117–1121. doi:[10.1002/cmdc.201600182](https://doi.org/10.1002/cmdc.201600182).

21

17

विद्यावार्ता®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Issue-33, Vol-06 January to March 2020



Editor
Dr. Bapu G. Gholap

Date of Publication
01 Feb. 2020

vidyawarta™

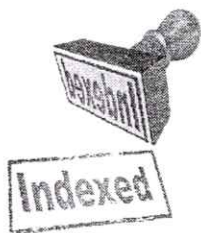
International Multilingual Research Journal



Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles, Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any liability regarding approval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publication is not necessary.

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.



<http://www.printingarea.blogspot.com>

विद्यावार्ता: Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal Impact Factor 7.041(IIJIF)

26) अस्तित्ववाद आणि तत्त्वज्ञान यांचा अनुबंध डॉ. पी. विठठल & गंगाधर पुंडलिक पांडे, नांदेड	118
27) भारतातील हरीतक्रांतीचा भौगोलिक अभ्यास प्रा. एल. झेड. पाटील, जि. धुळे	121
28) पुरुष शासित समाज में नारी की दासता (संदर्भ: शृंखला की कड़ियाँ) Anjana Nayak	123
29) मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में स्त्री जीवन : चिंतन और चुनौतियाँ डॉ. दळ्खे सूर्यकांत माधवराव, जि. उस्मानाबाद	128
30) महात्मा गाँधी का चम्पारण सत्याग्रह में राजकुमार शुक्ल एवं दलितों के प्रति डॉ० गोपाल कुमार (Roser), गोपालगंज (बिहार)	129
31) समय—सरगम और बदलते मूल्य डॉ. सुब्राव नागदेव जाधव, बार्शी	135
32) आदिवासी महिलाओं में शैक्षणिक तथा स्वास्थ्यगत परिस्थितियों का बच्चों के ... मनीषा सक्सेना & संगीता कनेश, इन्दौर (म.प्र.) भारत	137
33) हिंदी भाषा में विज्ञापन के अनुवाद एक चिंतन डॉ. दिलीपकुमार कसबे, कराड (महाराष्ट्र)	141
34) डॉ. अम्बेडकर के राज्य एवं सरकार सम्बन्धी विचार डॉ. कपिल खरे, जिला —इंदौर (म.प्र.)	145
35) २१ वी सदी और सूरजपाल चौहान की कविता डॉ. केशव क्षीरसागर, उस्मानाबाद	149
36) रामायण काल में संगीत — एक अध्ययन शोभा कुमारी, चण्डीगढ़	151
37) डॉ० भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक, धार्मिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता डॉ० अंजू सिंह, बरेली	155
38) ग्रामीण क्षेत्र के विकास में प्रधानमंत्री आवास योजना का योगदान (मध्यप्रदेश के धार ... डॉ. प्रकाश चन्द्र रांका & मुन्ना ठाकुर, उज्जैन (म.प्र.)	160

२१ वी सदी और सूरजपाल चौहान की कविता

डॉ. केशव क्षीरसागर

हिंदी विभाग,

रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय उस्मानाबाद

२१ वी सदी की कविता में दलित कवियों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इन कवियों ने अपनी जाति से संबंधित पीड़ा को उजागर करने का काम अपनी कविता के माध्यम से किया है। हिंदी दलित कवियों में सूरजपाल चौहान, ओमप्रकाश वाल्मीकि, हरपाल 'अरुष' आदि का महत्वपूर्ण योगदान है। आज हम सूरजपाल चौहान जी के २००७ में प्रकाशित 'कब होगी वह भोर' काव्य - संग्रह का परिचय प्राप्त करेंगे। इस काव्य संग्रह में छोटी - बड़ी ३८ कविताओं का संग्रह मिलता है। इसमें सवर्ण मानसिकतावादी लोगों द्वारा दलितों पर किये जाने वाले अत्याचारों का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है। सूरजपाल इस वर्णवादी व्यवस्था के प्रति आक्रोश का स्वर प्रकट करते हुए लिखते हैं -

खरी - खरी मैं बोलता, लिखता भी हूँ, साँच।

i k k h | k g R d h y x t k x h v l p A

कवि ने जो भोगा है उसका यथार्थ वर्णन करता नजर आता है। उक्त पंक्तियों में वह यह साबित करना चाहता है कि आज - कल जो भी दलित साहित्यकार दलित साहित्य लिखता है, उसे सवर्णवादी मानसिकता वाले साहित्यकारों द्वारा नाकारा जाता है। इसका सक्त शब्दों में कवि ने विरोध किया है। कवि न तो शब्दों के लय की झंझट में पड़ते हैं न छंदों की लय में। वे तो सीधी स्पष्ट बात कर अपनी पीड़ा को उजागर करते हैं। इसीलिए वे लिखते हैं -

कदम - कदम मक्करी क्यो

दलितों से गदारी क्यो

आत्मकथा लेखन पर चर्चा

कवित्त है तुम पे भारी क्यो

सच्चा कहने या लिखने में

तेरी है लाचारी क्यो

सारा लेखन एक समान

हरदम तेरी बारी क्यो।

खरी - खरी मैं लिखता हूँ

इस पर पहरेदारी क्यो

दलितों की बरती में अब तक

वर्ण - भेद है जरी क्यो ? २

सूरजपाल जी साहित्य के बारे में आगे भी विद्रोह करते हुए लिखाते हैं कि साहित्य समाज का दर्पण है। पर यह कैसा दर्पण है, जिसमें दलित का रूप धुंधला दिखता है। यानी, साहित्य ने भी दलितों की अपेक्षा की है। कवि के शब्दों में -

तुम कहते हो

साहित्य समाज का दर्पण है

ठीक है

पर -

यह कैसा दर्पण है

जिसमें -

मेरा चेहरा हमेशा

धिधियाता और धिनौना नजर आता है। ३

कुछ कट्टर सवर्णवादी साहित्यकार दलित

साहित्य को नकारते हैं। ऐसे साहित्यकारों पर कवि

करारा व्यंग्य करते हुए नजर आते हैं। वे 'अपना

सम्मेलन जारी' इस कविता में इसीलिए तो कहते हैं-

गैरों के संग मिलकर इनको,

ऐसा पाठ पढ़ाऊँगा।

देखेंगे ये दूर खड़े सब,

'ज्ञानपीठ' ले जाऊँगा ॥ ४

लिखना - पढ़ना तनिक न भाये,

फिर भी मैं लेखक भारी।

लेना - देना क्या दूजों से,

अपना सम्मेलन जारी ॥ ५

कवि को यह मालूम है कि शहर में दलितों की अपेक्षा होती है, पर गाँव की अपेक्षा कम होती है।

उस पर प्रकाश डालते हुए 'धन्यवाद शहर'
कविता में कवि कहता है —
शहरों में
हम होते हैं,
सिर्फ हम 'शेड्यूल्ड कास्ट' ।
धन्यवाद शहर,
तूमने—
मुझे मैं से हम बनाया ।^६

कवि इतिहास की ओर संकेत करते हुए यह स्पष्ट कहते हैं कि दलितों की सदियों से उपेक्षा हो रही है, उसके लिए न तो किसी ने विरोध किया न उनके अत्याचारों को कम किया। वे इतिहास की ओर संकेत करते हुए लिखते हैं —
सिर पर गु — मूत का टोकरा,
मैं भंगी का छोकरा,
सीने में लिए बेचैनी,
सदा ही पिछा करता रहा,
चतुरंगी — व्यवस्था का खूनी पंजा
जाति का ओछापन
और बमीठों की जूटन
बस, मुझे तो है इतना याद
मेरा इतिहास.... ।^७

इसी संवेदना को आगे बढ़ाते हुए कवि ब्राम्हणवादी वर्ण व्यवस्था पर टूट पड़ते नज़र आते हैं । वे तो अनुवंशिक रूप से ऐसे ही हैं । कभी न बदलेंगे और न कभी बदलने वाले हैं । वे इसे हत्यारे कहकर उनकी खबर लेते हुए कहते हैं —

तुम्हारे इतिहास में दर्ज
तुम्हारी शौर्य गाथाएँ बताती हैं
कि तुम —
औलाद हो हत्याओं की ।
केवल होती है हत्याएँ
क्या यह एक गुण नहीं है
अनुवंशिक ?
और एक सच्चाई भी ।^८

'कब होगी वह भोर' कविता में कवि का यह संकेत है कि दलितों की जो उपेक्षा हो रही है वह कब बंध होगी ? वह सुबह कब आयेगी जब दलित जाति का दूल्हा पूरे शहर भर या ठाकुरों के मुहल्लों से निकलकर बाजार में घूमे । कहने का तात्पर्य यह है की दलित की बारात को ब्राम्हणवादी मानसिकता

वाले लोग अपनी गली — मोहल्लों से निकलने नहीं देते । कवि उस भोर की रह देख रहा है जिस दिन दलित दूल्हा बिना रोक — टोक हर जगह बारात लेकर जा सकता है इसी सुबह के इंतजार में कवि कह रहा है —

कब होगी वह भोर
मेरे मोहल्ले में
कब सुनाई पड़ेगा
चहचहाना चिड़ियों का
और
पक्षियों का कलख गान
कब होगी वह भोर ।
जब मेरी बहन या बेटा की शादी पर
चढ़कर दूल्हा आएगा घोड़ी
घूमेगा वह
पूरे गाँव की गली — गली
कब ? न जाने कब ?
कब होगी वह भोर ???^९

कवि अपनी कविता के माध्यम से समाज को एक प्रश्न करता है कि —यह कैसी दुनिया है जो गंदगी करता है उसे बड़ा मानती है और जो गंदगी साफ करता है उसे निम्न जाति का मानती है । कवि भंगी समाज से संबंधित है इसीलिए भंगी समाज का तो गंदगी ढोने का कम ही होता है । इसीलिए वह नौकरी करेगा तो सवर्ण मानसिकता वाला समाज उसे स्वीकार नहीं करता । ये सब पढ़ — लिखकर आगे बढ़ जायेंगे तो उनका कम कौन करेगा ? दलित लोग उनका जो पुराना पेशा है वही जरी रखें । लेकिन कवि इसका विरोध करते हुए कहते हैं —

यदि —
पढ़ — लिखा भंगी
अपने पेशे को छोड़ता है
तो वह —
अधर्म करता है ।^{१०}

सूरजपाल हमारे देश के भ्रष्टाचार पर करारा व्यंग्य करते नज़र आते हैं । उनके मन में कई प्रश्न उठते हैं कि देश में तंत्र — मंत्र के नाम पर मासूमों की बलि चढ़ाने वाले साधू — महाराजों का संबंध किस वर्ग से है ? मंदिरों में बलात्कार होता है तो उसके जिम्मेवार कौन हैं ? शेयर घोडाला करके देश के करोड़ों रुपये का चूना लगाने वाला कौन था ? देश की गुप्त



'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal

Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Special Issue - 253 (B) Multidisciplinary Issue
Peer Reviewed Journal

E-ISSN :
2348-7143
October-2020

Impact Factor - 6.625

E-ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October - 2020

Special Issue - 253 (B)

Chief Editor -

Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts, Science & Commerce College,
Harsul, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :

Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)
Dr. Munaf Shaikh , Jalgaon (Urdu)

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-

उ न्त्र म णि वा

उ.ब्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृष्ठ नं.
	मराठी विभाग		05
1	अ दिवासी संस्कृती	डॉ.भास्वर शंकर	06
2	गुर्जर बोलीतील लोककथा व अशय अभिवृत्ती	डॉ.सुधाकर चौधरी	10
3	लावणीतील स्त्रीसौंदर्य वर्णन	डॉ. उंजली पांडे	13
4	दखनी भाषा व मराठी भाषा एक अन्वय	डॉ.रामविशन दहिपट	17
5	महान्भाव साहित्य व मराठी भाषा	डॉ.नरसिंग वदम	20
6	संत साहित्यामधील कृषिसंस्कृती	डॉ. एन.व्ही.शिंदे	24
7	संत त्काराम यांच्या अंभंगातील समाजदर्शन व समाजप्रबोधन	डॉ.सनील निगड	27
8	शाहिरी काव्य : एक सामाजिक प्रतिबिंब	डॉ.विनोद शंकरराव	33
9	हमानातील (कोडी) अर्थबोध	डॉ.उ.र.डी.शिंदे	38
10	अण्णा भाऊंच्या साहित्यातून प्रतीत होणारा डॉ.बाबासाहेब अंबडकर यांचा विचार	डॉ.सुरेश वर्धे	42
11	बांडगूळ अख्यान : बदलत्या ग्रामजीवनाचा चिकित्सक अलेख	डॉ.दयाभोर-जंठ	45
12	साहित्यिकाची प्रभाव स्वीकारण्याची पद्धत	रा.ज. चाटे	50
13	महंकरांच्या कवितेतील काव्य संकेतांचे अर्थान्वयन	डॉ.उंजली पांडे	54
14	मराठी अंबडकरवादी काव्य	डॉ.गोविंद रावठंकर	58
15	ग्रामीण कादंबरीतील विषमता आणि संघर्ष (निवडक कादंब-यांच्याच्या अनुषंगाने)	डॉ.उ.र.डी.शिंदे	65
16	'पुत्र मानवाचा' : गांधी जीवनावरील फसलेली कादंबरी	डॉ.उजय कृष्ण	70
17	वडार समाजाचे दुःख, दारिद्र्य, अज्ञान व वेदना यांचे प्रत्ययकारी चित्रण करणारी कादंबरी : 'वडार वेदना'	बाबासाहेब जाधव	75
18	मराठवाड्यातील नंदीवाले उपासक	डॉ.शंकर मंडे	80
19	खानदेशातील ठेलारी समाजाची अरोग्याची स्थिती	डॉ.विलस पाटील	83
20	पद्मश्री अन्यायी वाघ यांच्या बालगीतांचा अभ्यास	डॉ.उंजली मस्करन्हेस	86
21	मराठी साहित्यातील ग्रामीण विनोदी कथा	डॉ.कल्पना बोरकर	91
22	मराठी भाषेची उपयोगिता व संवर्धन	प्रा.पदवी वानखंडे	97
23	त्रिगुण आणि वसनाधिनता	डॉ.सोपान बोराटे	102
24	छत्रपती राजाराम काळातील सत्यशोधक समाजाचे कार्य	डॉ.विकास सरनाईक	105
25	समकालीन प्रवासवर्णनातील सामाजिकता	मनीषा उंटी	108
26	मराठी कथेतील (निवडक) कृदंबदर्शन व समाजदर्शन	डॉ.सनील निगड	115
27	राजर्षी शाहू महाराज आणि सत्यशोधक समाज चळवळ	डॉ.चंद्रशंकर पाटील	119
28	डॉ. बाबासाहेब अंबडकरांचे संसदीय लोकशाही संबंधी विचार	डॉ.उरण शंकर	124
29	सोशल मीडिया : २१ व २० शतकातील अन्वयान कोसंधी?	डॉ.रुहल राजहंस	129
30	भारतीय समाजात हिंसेचा स्थान	दीप्ती मंगलकर	135
31	चांदवड तालुक्याची ऐतिहासिक पार्श्वभूमी : एक अभ्यास	प्रा.विलस पवार	143
32	पाणी म्हणजे जीवन, पण..?	डॉ.बी.व्ही.गव्हाळ	148



छत्रपती राजाराम काळातील सत्यशोधक समाजाचे कार्य

डॉ. विवास मोहन सarnaईव

रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय, उस्मानाबाद

Mobile No.: 9730592049

Email: sarnaik.viki@gmail.com

भारताच्या आधुनिक कालखंडात ब्रिटीशांच्या सामाजिक व धार्मिक धोरणामुळे आणि 19 व्या शतकातील समाजसुधारक व विचारवंतांच्या कार्यातून त्या काळात अनेक पुरोगामि विचारांच्या चळवळी उदयास आल्या. याच काळात 24 सप्टेंबर 1893 रोजी महात्मा फुल्यांनी पुणे येथे स्थापन केलेला 'सत्यशोधक समाज' महात्मा फुल्यांच्या प्रभावी नेतृत्वाखाली सामाजिक व धार्मिक सुधारणा करत होता. फुल्यांच्या पश्चात या समाजास अवकळा आली फुल्यांच्या सत्यशोधक समाजाचा वसा व वारसा मात्र छ. शाहूंनी कोल्हापूर संस्थानात प्रत्यक्ष कृतीद्वारे करून तेच फुल्यांचे खरे वैचारिक वारस असल्याचे दाखवून दिले. यांनी कोल्हापूरात भास्करराव जाधवांच्या अध्यक्षतेखाली 11 जानेवारी 1911 रोजी 'करवीर सत्यशोधक समाजा'ची स्थापना केली¹ व या माध्यमातून शाहूंनी संस्थानात बालविवाह बंदी, विधवा विवाह, सहभोजनांचे आयोजन इ. विविध उपक्रम राबवून जातीयता व सामाजिक विषमता कमी करण्याचा प्रयत्न केला. तर धार्मिक बाबतीत 1913 मध्ये 'पुरोहित शाळा' सुरु करून बहूजन समाजातील पुरोहित तयार केले² व पारंपरिक पुरोहिताकडून बहूजनांच्या आर्थिक व धार्मिक पिळवणूकीस आळा घालण्याचा प्रयत्न केला.

छ. शाहूंच्या विचारांचा व कार्याचा वारसा त्यांचे पूत्र छत्रपती राजारामांनी यशस्वीपणे सांभाळला व त्यापूढे जावून त्यांनी स्वतःचा राज्यभिषेक बहूजन समाजातील पुरोहिताकडून वैदिक पद्धतीने करून घेतला जो आजपर्यंतच्या इतिहासातील वेगळेपण दर्शविणारा ठरला. या राज्याभिषेक विधीद्वारेच त्यांनी आपले उद्देश स्पष्ट केले.³ अशा या कृतिशिल महाराजांच्या काळातील सत्यशोधक समाजाचे कार्य व त्याला महाराजांनी केलेले सहकार्य याचा अभ्यास प्रस्तूत शोधनिबंधात घेण्यात आला आहे.

सामाजिक क्षेत्रातील कार्य :

तत्कालीन समाजातील विकोपाला पोहोचलेली जातिव्यवस्था व अस्पृश्यता संपवण्यासाठी सत्यशोधक समाजाने मोठ्या प्रमाणावरती प्रयत्न केले. या कार्यात प्रत्यक्ष छत्रपतींनी मोलाचे सहकार्य केले. त्यामूळेच ते म्हणतात, "माझ्या राज्यात मी एकही अस्पृश्य राहू देणार नाही. इथे अस्पृश्य-सदृश्य भावनेला थारा द्यायचा नाही असा माझा कृतसंकल्प आहे."⁴ हा संकल्प सत्यात उतरवण्यासाठी त्यांनी सातत्याने प्रयत्न केले. शाहू महाराजांप्रमाणेच त्यांनी सहभोजने आयोजित केली. राजाराम कॉलेज येथे शिकण्यासाठी आलेल्या विविध जाती, धर्मातील यामध्ये हिंदू, मुस्लिम, जैन, बौद्ध, ख्रिश्चन धर्माचे व मराठे, अस्पृश्य व लिंगायत जातीतील युवकांचा समावेश होता. यांचे सहभोजन आयोजित केले. या विरोधात कोल्हापूर व पुण्यातील ब्राह्मणांनी मोठा विरोध केला. कारण कॉलेजातील बहूतांश विद्यार्थी ब्राह्मण जातीचे होते. या प्रेरणेतून संस्थानात स्थानिक पातळीवर विविध ठिकाणी सहभोजनाचे कार्यक्रम सुरु झाले. उदा. 5 ऑक्टोबर 1932 नव्या बुधवार पेठेत सहभोजनाच्या कार्यक्रमास 350 लोकांनी सहभाग दर्शविला. यावेळी बॅरिस्टर केळकरांच्या अध्यक्षतेखाली अस्पृश्यता निर्मुलनाबाबत अनेक वक्त्यांनी मार्गदर्शन केले.⁵ अशा प्रकारच्या सहभोजनांचा प्रचार पत्रकाद्वारे केला जात. ज्यामध्ये ठिकाण, वेळ व दिवस निश्चित केला जात. अशा सहभोजनांना पाहण्यासाठी अलोट



गर्दी उसळत होती. त्यामुळे अशा सहभोजनावर ब्राह्मण्यवादी विचारांचा गट पत्रके काढून टिकाटीपणीचा भडीमार करत मात्र ब्राह्मणांच्या या विरोधाला जनतेने व प्रत्यक्ष छत्रपतींनीही जुमानले नाही. त्यामुळेच 1937 मध्ये राजारामांनी बावडेकरांच्या वाड्यामध्ये सहभोजनाचे आयोजन केले तर स्वतः रोजच्या जेवणात ते अस्पृश्यांना बरोबर पंक्तिस बसवून जेवण घेत.⁶

वास्तविक पाहता वरवर वाटणारा या सहभोजनाच्या कार्यक्रमास तत्कालीन काळातील रोटी व्यवहारातील बंधणे संपूष्ठात आणण्याच्या दूरदृष्टी विचार होता. ज्यामुळे अस्पृश्यव मागास समाजातील लोकांना बरोबर बसवून भोजन केल्याने त्यांच्यातील न्यूनगंड व दबकेपणाची भावना कमी होण्यास मदत झाली. समाजातील बेटी व्यवहार मोडीत काढणेही गरजेचे होते. यासाठी मिश्रविवाहास प्रोत्साहन देणे गरजेचे होते. याचा प्रचार व्हावा म्हणून समाजाने हंटर, विजयी मराठा, सत्यवादी, राष्ट्रवीर इत्यादी विविध पत्रकातून समाजप्रबोधन केले व या पत्रकातून मिश्र विवाहास तयार असलेली वधू पाहीजे' अशा जाहिरातीही दिल्या. यातून तत्कालीन प्रभावाने प्रत्यक्ष विवाह संपन्न झाले. उदा. तत्कालीन आमदार आत्माराम पाटील या तरुणाने ब्राह्मण मुलीशी लग्न केले तर डिग्रजकर या मराठा जातीच्या युवकाने मागास जातीतील तरुणीशी विवाह केल व हावीरे या युवकाने जयाबाई नावाच्या महार जातीतील मुलीशी लग्न केले.⁷ अशा प्रकारे रोटी-बेटी व्यवहार चालावा यासाठी समाजाने कार्य केले. तसेच समाजातील स्त्रीयांचा दर्जा सुधारावा यासाठी विधवा विवाहास प्रोत्साहन दिले. अशा प्रकारच्या विवाहांना संस्थानाने कायदेशीर मान्यता दिली. विधवांची संख्या वाढण्याचे मुख्य कारण बालविवाह आहे हे समाजावरती राजाराम महाराजांनी बालविवाह प्रतिबंधक कायदा केला.⁸ या कायद्याचा योग्य तो परिणाम समोर आला. कारण 1921 मध्ये हिंदू, मुसलमान व जैन या विधवांची संख्या 4159 इतकी होती. जी 1931 मध्ये कमी होवून 2636 इतकी झाली. हा प्रभाव बालविवाह कायदा व पुनर्विवाहास दिलेले प्रोत्साहन यांचा होता.⁹ या प्रकारे सत्यशोधक समाजाच्या स्त्रीउद्धारास पाठबळ देण्यासाठी राजारामांनी नोकरदार स्त्रीयांसाठी हक्काची मॅटर्निटी रजा लागू करून त्यांच्या समस्या कमी करण्याचा प्रयत्न केला.¹⁰ तर अनाथ आश्रमातील महिलांसाठी वर्षाला 300 रुपये अनुदानाचा ठराव पास केला.¹¹ अशा प्रकारे स्त्रीउद्धाराचा प्रयत्न केला.

धार्मिक क्षेत्रातील कार्य :

संस्थानकाळात अस्पृश्य समाजास मंदिर प्रवेश बंद होता. या समाजावरील अन्यायाविरोधी सत्यशोधक समाजाच्या कार्यकर्त्यांनी मोठ्या प्रमाणावर आंदोलने व मोर्चे आयोजित केले व याकडे प्रशासनाचे लक्ष वेधले. यातूनच राजाराम महाराजांनी 1932 मध्ये कोल्हापूरच्या अंबाबाईचे मंदिर अस्पृश्यांसाठी खुले केले. तसेच देवाला रेडा कापण्याची 'रेडेजत्रा' ही अघोरी प्रथा हुकूम काढून बंद केली.¹² या निर्णयामुळे समाजात असंतोष निर्माण होवून दंगल निर्माण होणार असे वाटत होते मात्र तसे काहीही झाले नाही कारण अंबाबाई मंदिराच्या मुक्तद्वार भोजनास ब्राह्मणाबरोबर अस्पृश्य समाजातीलही लोकांनी भोजनाचा लाभ घेतला. ज्यात ब्राह्मण-ब्राह्मणेत्तर कोणताही वाद झाला नाही.¹³ याचे कारण सत्यशोधक समाजाचे संघटन व प्रसार हे होते. या समाजाचे कार्यकर्ते गावोगावी फिरून व्याख्याने आयोजित करीत. यामध्ये वारा, कोठारी, प्रबोधनकार केशवराव ठाकरे, प्राचार्य बाळकृष्ण, दिनकरराव जवळकर, महर्षी विठ्ठल रामजी शिंदे, भास्करराव जाधव यांसारख्या समाज प्रबोधनकारी मंडळींचा समावेश होता. तर या समाजाचे विचार तळागाळापर्यंत पोहचवत यासाठी छोट्या-छोट्या पुस्तिका गावो-गावी पोहचवण्याचे काम हरिभाऊ चव्हाण व रामचंद्र बाबाजी जाधव (दासराम बुक डेपो) यांसारख्यांनी प्रामाणिक पार पाडले.¹⁴ तसेच प्रत्यक्ष राजाराम महाराजांनीही महात्मा फुल्यांचे विचार समाज उन्नतीसाठी महत्त्वपूर्ण असल्याने त्यांचे चरित्र लिहून त्याचे योगदान समाजास



समजावेत म्हणून फुल्यांचे चरित्र लेखनासाठी 10 डिसेंबर 1927 रोजी 800 रूपये अनुदान दिल्याचे दिसते.¹⁵

अशा प्रकारे छ. राजाराम काळात सत्यशोधक समाजाने अतिशय प्रभावी व मूल्यात्मक योगदान दिले. ज्यामध्ये जाती-पातीमधील कठोरता कमी करण्यासाठी रोटी-बेटी व्यवहारावर भर दिला, ज्याचे फलीत तत्कालीन काळातच त्यांना मिळाले. त्यामूळेच स्वतः राजाराम महाराज जाहिरनामा प्रस्तुत करून म्हणतात की, "आपल्या समाजातील लोकांमध्ये जागृती निर्माण होवून त्यांच्यात बदल होत असल्याबद्दल, जाती-जातीतील तेढ व अस्पृश्यता कमी होत असल्याबद्दल समाधान वाटत आहे."¹⁶ यामध्येच या सत्यशोधक समाजाचे व त्यांच्या कार्याचे योगदान दिसून येते. मात्र दुर्दैवाने 1933-34 नंतर या चळवळीतील प्रमुख नेतृत्वच राजकारणात व गांधींच्या नेतृत्वाखालील राष्ट्रीय चळवळीकडे वळाल्याने नंतरच्या काळात सत्यशोधक समाजाचा प्रभाव कोल्हापूर संस्थानात मावळताना दिसून येतो.¹⁷ तरी या चळवळीचा प्रभाव स्वातंत्र्योत्तर काळातही होता. कारण स्वातंत्र्योत्तर भारतातील सामाजिक व जातीय तेढ, धार्मिक दंगली यांचा अभ्यास करता कोल्हापूराला सामाजिक व धार्मिक दंगली व तेढ जवळजवळ नाहीत असे म्हणावे लागले कारण याची मुळे आपल्याला संस्थानकाळातील सत्यशोधक समाजाच्या विचारात दिसतात.

संदर्भ :

1. बागल माधवराव, (संपा.) 'हिरकमहोत्सव', 1933, पृ. 2.
2. पवार (डॉ.) जयसिंगराव (संपा.) 'राजर्षी शाहू गौरव ग्रंथ', महाराष्ट्र इतिहास प्रबोधनी, कोल्हापूर, 2001, पृ. 425.
3. हेरवडे श्रीधर, 'छत्रपती राजाराम चरित्र ग्रंथ', छ. राजाराम प्रतिष्ठान, कोल्हापूर प्रथमावृत्ती, 1983, पृ. 54.
4. कित्ता, पृ. 78.
5. 'सत्यवादी', दिनांक 23 ऑक्टोबर 1932.
6. हेरवडे श्रीधर, उपरोक्त, पृ. 77.
7. 'सत्यवादी', दिनांक 27 मार्च 1933.
8. हेरवडे श्रीधर, उपरोक्त, पृ. 84.
9. 'सत्यवादी', दिनांक 23 ऑक्टोबर 1932.
10. धाटावकर भास्कर, 'छत्रपती राजाराम महाराज यांचे निवडक आदेश', भाग-2, पुराभिलेख संचालनालय, महाराष्ट्र शासन मुंबई 2006, जनरल खाते ठराव क्र. 381, पृ. 154.
11. कित्ता, जनरल खाते ठराव क्र. 165, पृ. 147.
12. तांबट शरद, 'करवीर संस्थान प्रजाहितरक्षक छत्रपती राजाराम महाराज जन्मशताब्दी अंक', कोल्हापूर 1997, पृ. 3.
13. बागल माधवराव (संपा.), 'खंडेराव बागल यांचे निवडक लेख', कोल्हापूर 1976, पृ. 334.
14. कित्ता, पृ. 26.
15. धाटावकर भास्कर, उपरोक्त, भाग-1, जनरल खाते ठराव क्र. 438, पृ. 71.
16. कित्ता, जनरल खाते ठराव क्र. 165, पृ. 147.
17. फडके य. दि., 'आप्पासाहेब लढे', श्री विद्याप्रकाश, पुणे, 1989, पृ. 40.

**स्त्रीवादी मराठी कथा : बदलते आयाम**

डॉ. बबडे वैशाली अरुण

संशोधक विद्यार्थिनी मो. 8888380229

घोषवारा :-

1975 या स्त्रीमुक्ती वर्षानिमित्त जे विचारमंथन सुरु झाले यातून समाजपरिवर्तनाला एक दिशा मिळाली. या काळात जे लेखन झाले त्यातून स्त्री जाणीव, स्त्री संवेदना, स्त्रीवाद पहायला मिळतो. यामुळे स्त्रीवादी मराठी कथांचा अभ्यास करताना मुळातच 'स्त्रीवाद' ही संकल्पना काय आहे? स्त्रीवादाची भूमिका कोणती? याचा कथालेखनावर काय परिणाम झाला? याचा अभ्यास 'स्त्रीवादी मराठी कथा : बदलते आयाम' या शोधनिबंधात करणार आहे.

स्त्रीवादी भूमिकेवर आधारित असलेल्या प्रमुख कथा, त्यातील बंडखोर नायिका, स्वभान, दुय्यमत्वाची जाणीव, आत्मनिर्भरता तसेच आत्मसन्मानाची जपणूक करण्याचा आग्रह धरणे अशा काही स्त्रीवादी आशयसूत्रांचा अभ्यास या शोधनिबंधात करणार आहे.

महत्त्वाचे शब्द :-

स्त्रीवाद, स्त्रीप्रतिमा, स्वभान, आत्मनिर्भरता, आत्मसन्मान

प्रास्ताविक :-

स्वातंत्र्यपूर्व काळात स्त्रीयांची परिस्थिती बिकट होती. शिक्षणामुळे स्त्री स्वतःच्या पायावर उभी राहू लागली. स्त्रीचे जीवन बदलत गेले. दुसऱ्या महायुद्धानंतर स्त्रीवादी चळवळीला गती मिळाली. 1975 नंतर स्त्रीवादी विचारसरणी पुढे आली. परिणामी काळाबरोबर कथा बदलली. आपल्याला आलेले अनुभव स्त्री कथाकारांनी समर्थपणे कथेतून घडविले. समाजस्थिती जसजशी बदलली तसतशी स्त्रीची सुखदुःखे बदलत गेली. तिच्या वाटयाला आलेली उपेक्षा, अवहेलना त्याचबरोबर तिच्या जीवनातील आनंदाचे क्षण कथारूपाने प्रगट झाले. पूर्वीच्या काळात स्वतःचा स्त्रीपणा मिरवणे, तसेच उपभोगणे, श्रीमंत नवरा मिळविणे, अनेक मुलांना जन्माला घालणे हेच स्त्रीचे सर्वस्व होते. पुढे शिक्षणामुळे स्त्रीला 'स्व' ची ओळख पटली. स्वातंत्र्यता, स्वायत्तता, एक जबाबदार घटक म्हणून सामील होणे या बदलत्या जाणीवांचा अभ्यास या शोधनिबंधात करणार आहे.

शोधनिबंधाचा उद्देश :-

1. स्त्रीवादाची संकल्पना समजून घेणे.
2. स्त्रीवादी कथांच्या आधारे स्त्री जाणीवांचा शोध कथांमधून घेणे.
3. 1975 नंतरच्या स्त्रीवादी कथांचा शोध घेणे.

मानवतावादी मूल्यांचा शोध घेणे.

संशोधन पध्दती:-

प्रस्तुत शोधनिबंधासाठी दुय्यम साधनांचा उपयोग केलेला आहे. यामध्ये अभ्यास विषयाला धरून वेगवेगळे कथासंग्रह, संदर्भ ग्रंथ, मासिक इत्यादी दुय्यम साधनांचा उपयोग केलेला आहे.

स्त्रीवादी संकल्पना :-

स्त्रीवादाला इंग्रजीत फेमिनिझम असे म्हणतात. स्त्रीवादाच्या संदर्भात स्त्रीमुक्ती, स्त्रीस्वातंत्र्य, स्त्रीवाद या संकल्पना रूढ आहेत. पुरुषप्रधान समाजव्यवस्थेमध्ये स्त्रीला माणूस म्हणून नकार देणाऱ्या व पशुतुल्य वागणूक देणाऱ्या व्यवस्थेविरुद्ध लढा देत स्त्रीला स्वतःचे स्थान प्रस्थापित करण्यासाठी स्त्रीवाद ही विचारप्रणाली अस्तित्वात आली आहे.

मराठी साहित्यामधील स्त्रीवाद समजून घेण्यासाठी प्रथम आपल्याला पुरुषप्रधान संस्कृतीमधील स्त्रीचे स्थान विचारात घ्यावे लागेल. डॉ. अश्विनी धोंगडे यांच्या मते, "स्त्रीवाद

**स्त्रीवादी साहित्य : बदलते आयाम**

www.aimrj.com

Email ID. aimrj18@gmail.com

म्हणजे पुरुषांपासून फारकत घेऊन स्वतःचा सवतासुभा निर्माण करणे नव्हे, पण संस्कृतीच्या हजाणे वर्षांच्या इतिहासाने बाईचे मानवपण नाकारून तिला जी पशुतुल्य अवस्था प्राप्त करून दिली त्यातून बाहेर पडून आपले हक्क प्रस्थापित करून घेण्यासाठी निर्माण केलेले हे व्यासपीठ आहे. ज्यावेळी स्त्री खुलेपणाने श्वास घेऊन पुरुषांइतके स्वतंत्र जीवन जगू शकते त्यावेळी स्त्रीवादाची गरज भासणार नाही.”¹ डॉ.अश्विनी धोंगडे यांच्या मते स्त्रीवाद किंवा स्त्रीमुक्ती म्हणजे स्त्रीला पुरुषांपासून मुक्ती असे नव्हे तर स्त्रीला माणूस म्हणून जगण्याचा अधिकार होय. थोडक्यात जशी वागणूक पुरुषाला तशीच स्त्रीला मिळावी असा समाज व्यवस्थेतील बदल म्हणजेच स्त्रीवाद होय. स्त्री-पुरुष समानता हीच स्त्रीवादाची भूमिका होय.

स्त्री प्रतिमा:-

निसर्गतः स्त्री-पुरुष समानता हा भेद त्यांच्या शरीरापासून करण्यात आलेला आहे. स्त्री म्हणजे नाजुक, सोशिक, भित्री, सुंदर, कोमल, हळवी, भावनावश, दयाशील, सात्त्विक अशी स्त्री प्रतिमा समाज मनावर बिंबवलेली आहे. समाजाची ही संकल्पना मोडीत काढण्याचे काम स्त्रीवाद करते.

पुर्वीची स्त्री आर्थिकदृष्ट्या, सामाजिकदृष्ट्या परावलंबी असल्यामुळे सर्व अन्याय मुकाट्याने सहन करायची. पण शिक्षणाने तिला स्वत्वाची जाणीव झाली. सिमॉन दि बोव्हा या पाश्चात्य विचारवंत स्त्रीने त्यांच्या ‘द सेकंड सेक्स’ या पुस्तकात म्हटले आहे, “बाई म्हणून कोणी जन्माला येत नाही. तिला बाई बनवले जाते. समाज स्त्रियांची जडणघडण बाई म्हणून करित असतो.”²

स्त्रीवादी भूमिकेतून लिहिलेल्या कथा :-

महात्मा ज्योतीराव फुले यांनी 1848 मध्ये पुण्याच्या भिडे वाड्यात मुलींची पहिली शाळा काढली व शिक्षणाच्या पुरस्कर्त्या सावित्रीबाई फुले यांनी ‘शिक्षणाने बाईला मनुष्यत्व येते व पशुत्व हटते’ ही स्त्रीमुक्तीची संकल्पना मांडली. त्यानंतर 1882 ला ताराबाई शिंदे यांनी ‘स्त्री-पुरुष तुलना’ हा ग्रंथ लिहून जशी वागणूक पुरुषांना मिळतेय तशीच स्त्रीला मिळावी अशी स्त्री-पुरुष समानतेची मागणी केली. त्यानंतर विभावरी शिरूरकर यांनी 1933 मध्ये ‘कळ्यांचे निःश्वास’ हा कथासंग्रह लिहून स्त्री अस्तित्वाची जाणीव करून दिली. एखादा कथासंग्रह केवळ स्त्रीने लिहिला म्हणून तो स्त्रीवादी होवू शकत नाही. त्यात आलेले तिचे अनुभव, करावा लागणारा संघर्ष, चोखाळलेली नवी वाट यावरून तो ठरत असतो.

स्त्रियांचे सुरुवातीचे कथालेखन हे स्त्री दुःखावर आधारलेले होते. त्यामुळे म्हणावे तसे स्त्री-पुरुष संबंधाचे वर्णन कथेतून करता आले नाही. साठोत्तरी साहित्यातून स्त्री-पुरुष संबंधाविषयी वस्तुनिष्ठपणे लिहिले जावू लागले. गौरी देशपांडे, प्रिया तेंडूलकर, मेघना पेटे, नीरजा, प्रज्ञा दया पवार, माधुरी तळवलकर, माधुरी शानभाग, आशा बगे, अंबिका सरकार अशा अनेक लेखिकांच्या कथांमधून स्त्रीवादी विचार मंथनाचे पडसाद स्पष्टपणे जाणवतात.

पुरुषप्रधान व्यवस्थेला विरोध करणाऱ्या कथा:-

साधारणपणे 1980 नंतरच्या कथेतील स्त्री व्यक्तिरेखा या पुरुषप्रधान व्यवस्थेला विरोध करून पारंपारिक विचारांची चाकोरी मोडण्याचा प्रयत्न करताना दिसतात.

स्त्रीवादाच्या संदर्भात डॉ. वंदना महाजन म्हणतात, “स्त्रीला आपल्या स्वत्वाची जाणीव होणे, तिला आपल्या व्यक्तिमत्त्वाचा विकास करण्याची आवश्यकता वाटणे, स्त्रीने व्यक्तिस्वातंत्र्यवादी दृष्टीकोनातून प्रखरतेने स्वतःचा विचार करणे, तिचे आजपर्यंत जे अवमूल्यन झाले त्याची तीला जाणीव होणे, अन्याय, अत्याचार विरुद्ध संघर्षासाठी उभे राहणे. बाईपणा सोडून देऊन माणूसपणा मिळवण्यासाठी लढणे म्हणजे स्त्रीवाद अंगीकारणे होय. अशा स्त्रीवादातून एक नवा आशय, नवा विचार, नवे स्वप्न आणि नवी दिशा प्राप्त करण्यासाठी धडपडणाऱ्या स्त्रिया



म्हणजेच स्त्रीवादी स्त्रिया होय.”³ शेवटी स्त्रीवाद म्हणजेच स्त्रीला माणूस म्हणून जगण्याचा हक्क मिळणे होय.

शिक्षणाच्या माध्यमातून स्त्री नौकरी करताना कितीही मोठ्या पदाला गेली तरी तिने घरी नवऱ्याच्या गरजा तत्परतेने पूर्ण कराव्यात या पुरुषी मानसिकतेत बदल व्हायला तयार नाही. अर्चना अकलुजकर यांच्या ‘एका उबदार विश्वात’ या कथेतील नायिका रागिणी ही एका खाजगी ऑफिसमध्ये मिडिया एक्झिक्युटिव्ह म्हणून काम करत असते. घरकामाला बाई लावते तरी घ्यायला उशीर का झाला? सतत भांडणे होत असत. एखादी स्त्री स्वतःच्या कर्तृत्वाने पुढे चालली तरी तिच्या चारित्र्यावर संशय घेतला की, कोणतीही स्त्री कोलमडते हे सूत्र या कथेतील रागिणीचा पती वापरतो. अर्चना अकलुजकर यांच्या कथेतील रागिणी मात्र नवऱ्याच्या आरोपावर चढ्या आवाजावर ओरडून म्हणते, “हे नव शस्त्र काढलं आहेस म्हणजे भांडायचं? की पुरुष आहेस, नवरा आहेस म्हणून वाटेल ते खपवून घेऊ? कुणास ठाऊक...मृदुलाशी नौकरीच्या नावाखाली काय काय चालतं ते!”⁴ पूर्वीच्या स्त्रीप्रमाणे आजची आधुनिक स्त्री नवऱ्याचे बिनबुडाचे आरोप सहन करणारी नाही तर अशा संशयी नवऱ्याला खंबीरपणे प्रतिउत्तर देणारी आहे. प्रसंगी घटस्फोट घेऊन पुन्हा पुनर्विवाह करताना दिसतात. नवऱ्याच्या चारित्र्यावर संशय घ्यायलाही आजच्या कथेतील नायिका मागे नाहीत हे स्त्रीवादाचेच यश म्हणावे लागेल.

प्रज्ञा दया पवार यांच्या मतानुसार स्त्रीचे अनेक पुरुषांशी संबंध जोडणं हे ही स्त्रीसाठी एक कुंपणच आहे. ही गोष्ट त्यांच्या एक्झिट या कथेतून सुचवली आहे. कथेच्या शेवटी मिता ही नायिका खंबीरपणे म्हणते, “तू नाही का माझ्याभोवती कुंपण बांधलसं? बाहेर आलेच ना मी, त्यातून येता येतं. तेही तोडून येता येतं. तेवढी धमक हवी.”⁵ समाजव्यवस्थेने स्त्रीला कितीही कुंपण घातली तरी तिला वाटलं तर ती ते कुंपण तोडून बाहेर येऊन स्वतःची नवी ओळख निर्माण करू शकते. हे स्त्रीवादी चळवळीचे बळ आहे.

स्वाभिमानी व स्वावलंबी जीवन जगणाऱ्या कथा :-

आधुनिक काळात स्वाभिमानी व स्वावलंबी जीवन जगणाऱ्या कथानायिकांचा समावेश कथेतून केला जात आहे. योगिनी वेंगुर्लेकर यांच्या ‘वास्तव’ या कथासंग्रहातील ‘नांदी’ व ‘खेळी’ या कथेत पुरुषांच्या म्हणून मानल्या गेलेल्या क्षेत्रात स्त्रिया यशस्वीपणे कार्यरत असलेल्या दिसतात. ‘नांदी’ या कथेतील उर्मी ही वाफना व्हिटल अँटोमोबाईल अँड इंजिनिअरिंग कार्पोरेशनमध्ये गेली सहा महिने एका प्रोजेक्टवर प्रोग्रॅम्स तयार करण्याचे काम करत आहे. तर ‘खेळी’ या कथेतील मिसिस मराठे या देखील श्रीविद्या लॅबोरेटरीजमध्ये सॅपल बाटल्या जातीने चेक करून कंपनी व्यवस्थापनात पतीला बरोबरीने मदत करून स्वाभिमानी व स्वावलंबी जीवन जगतात.

डॉ. अनघा केसकर यांच्या ‘पारख’ या कथेतील रजू ही नौकरी करून स्वतःच्या पायावर उभी असल्यामुळे स्वावलंबी आयुष्य जगतेय. वर निवडीबाबत तिची स्वतःची स्पष्ट मते आहेत. जोडीदाराची निवड करताना त्या मुलाला प्रत्यक्ष भेटून लग्नासंबंधी स्वतःचे विचार निर्भिडपणे मांडताना म्हणते, “या बाबतीत माझी मतं पक्की आहेत. आई-अप्पांनी मला मुलाप्रमाणे शिकवलं आहे. आज मी ही बऱ्यापैकी पैसे मिळवते आहे. आई-वडिलांच्या पैशांनी आपली सुखं विकत घेणं मला आवडणार नाही.”⁶ बघायला आलेल्या रथळाला देखील एवढ्या रोखठोकपणे बोलून त्याची मते जाणून घेऊन तो योग्य असल्याची खात्री पटल्यावरच होकार देते. स्त्रीवादांमुळे लेखिका अशा निर्भिड मत मांडणाऱ्या नायिका मांडू शकतात.

आत्मसन्मानाची जपणूक करणाऱ्या कथा:-

शिक्षणामुळे स्त्रीला आत्मसन्मानाची जाणीव झाली व स्त्रीवादी चळवळीमुळे आत्मसन्मान जपण्याचे सामर्थ्य प्राप्त झाले. मथू सावंत यांच्या ‘तिची वाटच वेगळी’ या कथासंग्रहातील ‘झेडपीनबाई’ या कथेतील राधाबाई अशिक्षित, अडाणी स्त्री राखीव धोरणामुळे पतीच्या



सांगण्यावरून जिल्हा परिषद सभासद होते. नवरा सांगेल तिथे सही करणे यावर वैतागून ती स्वतः शिकण्याचा निर्णय घेताना म्हणते, “अशी शिकनं अशी शिकनं की ह्यांनाबी मागं टाकनं मी मग नाही इचारायची सयी कुठं करू मनून?” ग्रामीण परिसरातील स्त्रीया देखील स्वतःच्या उणिवा बाजूला काढून स्वतःचा आत्मसन्मान जपू लागलेल्या आहेत. याचे चित्रण लेखिका कथेतून करत आहेत.

माधुरी तळवलकर यांच्या ‘कळत जाते तसे’ या कथासंग्रहातील ‘अविवाहिता’ या कथेतील शीतल ही बँकेत नौकरी करून स्वतःच्या पायावर उभी आहे. जोपर्यंत मनासारखा जोडीदार मिळत नाही तोपर्यंत विवाह न करता पुरुषाशिवाय एकटी जगू पहातेय अशी स्वतंत्र विचाराची शीतल आत्मसन्मान की सुख यामध्ये आत्मसन्मान जपताना दिसते.

आजची स्त्री शिक्षणाच्या जोरावर मग ते शालेय असो किंवा व्यावसायिक स्वतःचा स्वाभिमान जपताना दिसतात. मृणालिनी चितळे यांच्या ‘सिनार’ या कथासंग्रहातील ‘भूमिका’ या कथेतील शलाका ही घरच्यांचा विरोध पत्करून आपल्याला आवडणाऱ्या मुलाबरोबर लग्न करत पुढे फॅशन टेक्नॉलॉजीचा कोर्स करून पुढे गेस्ट लेक्चर म्हणून संपूर्ण भारतातील फॅशन टेक्नॉलॉजीच्या कॉलेजमध्ये जाते. स्वतःचे निर्णय स्वतः घेणे हे आजच्या आधुनिक स्त्रीचे लक्षणच आहे. दोन मुली, घर, संसार संभाळत आत्मसन्मानाची जपणूक करणारी शलाका ही व्यक्तिरेखा स्त्रीवादी चळवळीचा परिणामच म्हणावा लागेल.

निष्कर्ष :-

1. स्त्री साहित्यामधील सर्वच अनुभव हे स्त्रीवादी नसले तरी ते स्त्रीनिष्ठ आहेत.
2. आजच्या लेखिकांच्या कथेतील नायिका या पुरुषसत्ता व्यवस्थेविरुद्ध संघर्ष, माणूसपणाची प्रखर जाणीव, स्वावलंबी जीवन जगणाऱ्या तसेच आत्मसन्मानाची जपणूक करणाऱ्या आहेत.
3. बदलत्या काळानुसार वास्तवाला धरून कथेचे विषय विपुल असे कथालेखन झालेले आहे. यातील बहुतेक कथा या स्त्रीकेंद्री आहेत.
4. 1980 नंतरच्या कथेतील नायिका या शिकलेल्या, नौकरी करून घर, मुले, संसार या जबाबदाऱ्या समर्थपणे पेलणाऱ्या, नवऱ्याच्या माधारी रडत न बसता प्राप्त परिस्थितीशी जुळवून घेवून नवी वाट चोखाळणाऱ्या आहेत.
5. 1980 नंतरच्या कथांची मांडणी ही रोखटोक आहे.

समारोप :-

आज कथालेखनाच्या क्षेत्रात मोठ्या प्रमाणात वाढ झालेली आहे. काही स्त्रीवादी लेखिकांच्या कथा सोडल्या तर इतर लेखिकांच्या कथांमधून स्त्रीमनाचा खोलात विचार केला गेला आहे. स्त्रीवादी साहित्य म्हणजे स्त्रीवादाच्या प्रभावातून निर्माण झालेले साहित्य स्त्रीशोषणातील जी तिव्रता आहे ती पुरुषांपेक्षा स्त्री साहित्यात आली आहे. स्त्रीकडे बघण्याची वेगळी दृष्टी स्त्रीवादाने दिली. माणूसपणाची प्रखर जाणीव या जाणीवेतून पुरुषसत्ताक व्यवस्थेविरुद्ध हा स्त्रीवादाचा प्रवास मानवतावादी मूल्यांकडे व्हावा अशी अपेक्षा आहे. पुरुषप्रधान संस्कृतीने स्त्रीयांच्या अनुभवांना अनेकदा दाबून ठेवले आहे. म्हणूनच स्त्रीयांच्या साहित्यातून व्यक्त झालेले अनुभव त्यांच्या जाणीव जागृतीमुळे स्त्रीवादी अनुभव समजून घेण्यास मदत होईल.

संदर्भसूची :-

1. डॉ. आश्विनी धोंगडे : ‘स्त्रीवादी समिक्षा स्वरूप आणि उपयोजन’, दिलीपराज प्रकाशन, पुणे, प्रथमावृत्ती मार्च-1993 पृ.6
2. डॉ. वंदना महाजन : ‘स्त्रीवाद आणि समाज परिवर्तन’, अथर्व पब्लिकेशन्स, जळगांव, प्रथमावृत्ती, 2013, पृ. 40
3. डॉ. वंदना महाजन : उ. नि. पृ. 40
4. अर्चना अकलूजकर : ‘कॅव्हा तरी पहाटे’, अक्षता प्रकाशन, पुणे, प्रथमावृत्ती, 6 मे 2011, पृ. 108



5. प्रज्ञा दया पवार : 'अफवा खरी ठरावी म्हणून...', शब्द पब्लिकेशन्स, मुंबई, प्रथमावृत्ती, 24 मार्च 2010, पृ. 24
6. डॉ. अनघा केसकर : 'अकर्म', अक्षता प्रकाशन, पुणे, प्रथमावृत्ती, 2006, पृ. 38
7. मथु सावंत : 'तिची वाटच वेगळी', रजत प्रकाशन, औरंगाबाद, प्रथमावृत्ती, 2002, पृ.65